MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yechuryji, sit down. No political explanation.

SHRI SITARAM YECHURY: I raised the voice. ...*(Interruptions)*... * रहेंगे या *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yechuryji, please sit down. ...*(Interruptions)*...

SHRI SITARAM YECHURY: Don't raise your voice. ...*(Interruptions)*... That is the point. ...*(Interruptions)*... You don't raise your voice. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yechuryji, please resume your seat. Only personal explanation is possible if the name is taken. Because your name is taken, I was told, I allowed you personal explanation. That is all. Now, Shri Javed Ali Khan.

SHORT DURATION DISCUSSION

Situation arising in Central Institutions of Higher Education with specific reference to Jawaharlal Nehru University and University of Hyderabad - *Contd.*

श्री जावेद अली खान : माननीय उपसभापति जी, मैं आज सदन में दूसरी बार बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैंने जब पहला भाषण दिया था, तो मैंने भाषण के दौरान पीठ की तरफ इशारा किया था और कहना चाहा था कि नए सदस्यों और छोटी पार्टियों को पीठ का संरक्षण मिलना चाहिए। हमारे नेता नरेश अग्रवाल जी ने मुझे यह कह कर डपट दिया कि चेयर पर किसी को अंगुली नहीं उठानी चाहिए। आज यह बहस चल रही है, मैं पीठ के प्रति पूरा सम्मान करते हुए, नेता सदन के प्रति पूरा सम्मान व्यक्त करते हुए, नेता प्रतिपक्ष के प्रति पूरा सम्मान करते हुए, यह कहना चाहता हूं कि पीठ को कम से कम नए सदस्यों के बारे में, कम बोलने वाले सदस्यों के बारे में या कभी-कभी बोलने वाले सदस्यों का ध्यान रखना चाहिए। मुझे बुलाया गया और बोलने के लिए खड़ा हुआ, तो मुझे बैठा दिया गया। मैं जानता हूं और मैंने नियमावली भी पढ़ी है, मैंने परम्पराएं भी पढ़ी हैं, लीडर ऑफ दि हाउस, लीडर ऑफ दि अपोजिशन अगर किसी वक्त भी खड़े होकर हस्तक्षेप करेंगे, तो उनको पूरे सम्मान के साथ सुना जाएगा, लेकिन बीच में एक घंटे का भाषण, शुरू में मैं एक घंटे के लिए बैठा रहा। जब लीडर ऑफ दि अपोजिशन से कहा कि बोलो, तो वे बोले कि हम नहीं बोलेंगे, फिर मेरा नम्बर कट गया। आज हम इस सदन के अंदर जिस मुद्दे पर बहस कर रहे हैं, यह मुद्दा दो पार्टियों के बीच का मुद्दा नहीं है। क्या यह मुद्दा कांग्रेस और बीजेपी में राष्ट्रवाद को लेकर चैम्पियनशिप जीतने का है? क्या इसमें श्री सीताराम येचुरी जी का एक्सपर्ट कमेंट हर पांच मिनट बाद जरूरी है? मैं चेयर से यह कहना चाहता हूं कि मैंने यहां जो टिप्पणी की है, उसमें लगे समय को मेरे समय से हटा दिया जाए। मैंने अपनी पीड़ा आपके सामने नया सदस्य और कम बोलने वाला सदस्य होने के नाते रखी है।

[उपसभाध्यक्ष (श्री तिरुची शिवा) *पीठासीन हुए]*

महोदय, मैं मुद्दे पर आना चाहता हूं। जेएनयू में जो कुछ हुआ, उसके बारे में नेता सदन ने भी कहा है और बीजेपी के वक्ता भुपेन्द्र जी ने भी कहा है। जब श्री सीताराम येचुरी जी ने बहस शुरू की थी, उस समय मैं सोच रहा था कि मैं सीताराम येचुरी जी के भाषण से अपनी बात शुरू करूंगा। लेकिन सत्ता पक्ष के दो नेताओं की बातें सुनने के बाद मुझे उनके भाषण से अपनी बात शुरू करनी है। बार-बार यह कहा जा रहा है कि जेएनयू में कौन-कौन चला गया, क्यों चला गया, वहां देश के विरोध में नारे लग गए और

*Expunged as ordered by the Chair.

इधर से अखबारों में, मीडिया में सब तरफ से ये बयान आ रहे हैं कि जेएनयू के अंदर देश के खिलाफ जो नारे लगे, across party line वे गलत हैं। उनकी निन्दा होनी चाहिए, उनकी भर्त्सना होनी चाहिए। वे नारे आगे न लगें, इसके इंतज़ामात सिर्फ जेएनयू में ही नहीं, सब जगह, सब राजनीतिक शक्तियों को करने चाहिए, सरकार को करने चाहिए और देश के प्रति प्रेम रखने वाले सब नागरिकों को करने चाहिए। यह आम सहमति का सवाल है। देश प्रेम कोई पार्टियों का सवाल नहीं है, राष्ट्र भक्ति कोई पार्टियों का सवाल नहीं है। देश में संविधान के प्रति श्रद्धा रखने वाले, भारत के आजादी के अंदोलन की विरासत में अपना हिस्सा मानने वाले सभी लोगों के बीच इस बात की आम सहमति है कि हम देश की एकता के खिलाफ, इसकी भौगोलिक एकता के खिलाफ, इसकी आपसी एकता के खिलाफ इसके भाईचारे के खिलाफ कोई बात नहीं सुनेंगे। लेकिन बीजेपी के लोग क्या कर रहे हैं, 'इसकी टोपी उसके सिर पर' रख रहे हैं। नारे किसी ने लगाए, आप इसके लिए राजनीतिक पार्टियों को कैसे दोषी ठहरा सकते हो? आज यह सब हो रहा है। मैं यह कहना चाहता हूं कि राष्ट्र भक्ति और राष्ट्र प्रेम किसी एक पार्टी का और खासतौर से भारतीय जनता पार्टी का पेटेंट नहीं है। मैं उस घटना की बहस में अब नहीं जाना चाहता, जो हैदराबाद यूनिवर्सिटी में हुई। क्योंकि नेता प्रतिपक्ष ने बड़े सिलसिलेवार, तारीखवार उस घटना का ब्यौरा पेश कर दिया है। लेकिन जेएनयू में जो हुआ, मैं उस पर यह कहना चाहता हूं और गृह मंत्री जी भी यहां मौजूद हैं तथा सदन के सारे वरिष्ठ सदस्य भी यहां मौजूद हैं, मैं बड़े अदब के साथ आपसे एक बात कहना चाहता हूं। माननीय उपसभाध्यक्ष जी, मैं आपसे बड़े अदब के साथ एक बात कहना चाहता हूं कि क्या भारत की territory में, सीमा में अफज़ल गुरु की प्रशंसा, याकूब मेमन की प्रशंसा या देश के विरोध में नारे, देश को तोड़ने वाले नारे पहली बार लगे हैं? आए दिन मैं अखबारों में पढ़ता हूं और टीवी पर देखता हूं कि कश्मीर के अन्दर जुलूस निकलते हैं, मुजाहिरे होते हैं और जैसे नारे जेएनयू में कुछ लोग नकाब पहन कर लगा रहे थे, वैसे ही नारे आए दिन कश्मीर के अन्दर लगते हैं। मेरा निवेदन यह है कि मैं उनकी सफाई नहीं दे रहा हूं, उनका पक्ष नहीं ले रहा हूं, उनकी side नहीं ले रहा हूं। राष्ट्र विरोधी कौन हैं? दूसरे लोगों को, राजनीतिक दलों को राष्ट्र विरोधी ब्रांड करने का प्रयास करने से पहले अगर आप अपनी बगलगीरों की तरफ, अपने सहयोगियों की तरफ और उनके समर्थकों की तरफ जरा नजर दौड़ा लेते, तो राष्ट्र विरोधी चिन्हित करने में आपको आसानी हो जाती, लेकिन आप वह काम नहीं करेंगे। आप क्या करेंगे? आप यह करेंगे कि जितनी भी मेनस्ट्रीम की राजनीतिक पार्टियां हैं, उन्हें किसी तरीके से भी पकड़ों और जो राष्ट्र विरोधी तत्व हैं, उनके खेमे में जाकर खड़ा कर दो। लोक सभा के अन्दर हमारी पार्टी के नेता माननीय मुलायम सिंह जी ने भाषण दिया। उन्होंने भी बात यहीं से शुरू की और मैं भी बार-बार भारत की एकता के बारे में, भारत की अखंडता के बारे में कह रहा हूं। जब मैं एकता-अखंडता कहता हूं, तो मैं सिर्फ सीमाओं की एकता की बात नहीं करता, मैं सिर्फ भौगोलिक एकता की बात नहीं करता, जब मैं एकता और अखंडता की बात करता हूं, तो जनता की एकता और अखंडता, उसकी भी बात करता हूं, उनके भाईचारे और सद्भाव की भी बात करता हूं। जो सीमा पर नजर टेढ़ी करेगा, जो देश की एकता पर नजर टेढ़ी करेगा, हम उसके खिलाफ हैं और जो हमारे आपस के भाईचारे को तोड़ कर देश की एकता तोड़ने का प्रयास करेगा, हम उसके भी खिलाफ हैं, यह मैं कहना चाहता हूं।

जेएनयू की घटना क्या है? जेएनयू की घटना यह है कि एक रोहित वेमुला का कांड हुआ, हैदराबाद में एक घटना हुई। ...**(व्यवधान)**... मुझे मालूम है, लेकिन रोहित वेमुला को दफनाना था, इसलिए बार-बार अफज़ल गुरु को उखाड़ना पड़ता है। यह बीजेपी की लाइन है, रोहित वेमुला को गाड़ दो और अफज़ल को उखाड़ लो, क्योंकि अगर अफज़ल सामने नहीं होगा, तो फिर इनके राष्ट्रवाद की

[श्री जावेद अली खान]

पुष्टि नहीं हो सकती है। यह कोई तरीका है? यहां कौन अफज़ल को subscribe कर रहा है, यहां कौन याकूब मेमन को subscribe कर रहा है? बार-बार सब बर्बादी के नारे लगवा दिए। मैं यह कहना चाहता हूं कि आप जम्मू-कश्मीर में जाकर अपने सहयोगियों के जुलूस में आने वालों की निशानदेही करिए, आप वहां पाएंगे कि कौन राष्ट्र के विरोध में है और कौन राष्ट्र के पक्ष में है। अफज़ल की प्रशंसा जिन्होंने की, मेनस्ट्रीम पार्टियों में जिन्होंने की, आप उनसे हाथ मिलाते हैं, तो आपको कोई परेशानी नहीं होती और मेन्स्ट्रीम की दूसरी पार्टियां, चाहे वह कांग्रेस हो, कम्युनिस्ट हो, समाजवादी पार्टी हो, इन पर जब चाहे तब आप राष्ट्रद्रोह का इल्जाम लगा देते हैं। राष्ट्रप्रेम हम भी करते हैं, राष्ट्र से प्यार हम भी करते हैं। मैं यह कहना चाहता हूं कि आप जिस राष्ट्र की बात करते हैं, आप जिस राष्ट्र की अवधारणा की बात करते हैं, वह राष्ट्र की अवधारणा भारत के संविधान में नहीं है। आपकी अवधारणा दूसरी है। भारत के संविधान में जिस राष्ट्र की अवधारणा है, उस अवधारणा में आज इस सदन के ज्यादातर लोग यकीन करते हैं और राष्ट्र के सम्बन्ध में जो आपकी अवधारणा है, वह अवधारणा या तो हिन्दू राष्ट्र की है या अंध राष्ट्रवाद की है, यह मैं कहना चाहता हूं।

उपसभाध्यक्ष जी, मैं जेएनयू की घटना की दो-तीन बातें कहना चाहता हूं। ...**(समय की घंटी)**... सर, सबको ज्यादा समय मिला है। मैं दो मिनट से ज्यादा समय नहीं लूंगा। जेएनयू में क्या हुआ? जेएनयू में एक घटना हुई, सबने जिक्र कर दिया। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद जेएनयू के अन्दर काम करता है, एआईएसएफ वहां काम करता है, एसएफआई वहां काम करती है, आईसा वहां काम करती है, जेएनयू स्टूडेंट्स पॉलिटिक्स में NSUI वहां काम करती है, ये सब छात्र संगठन काम करते हैं, openly काम करते हैं। इनके नाम मैं इसलिए ले रहा हूं कि ये देश की मेनस्ट्रीम पार्टियों से जुड़े हुए संगठन हैं। ये उनकी ideology को, उनके कार्यक्रम को, उनकी विचारधारा को subscribe करते हैं। दूसरे कुछ संगठन हैं, जो इन पार्टियों के या इस तरह की विचारधारा को सबस्क्राइब्ड नहीं करते। सुनते हैं कि उनका ताल्लुक किसी अंडरग्राउंड पार्टी से है। उनके काम के लिए, उनके दुष्कर्म के लिए, उनके किसी राष्ट्र-विरोधी काम के लिए इन संगठनों को दोषी नहीं ठहराया जा सकता, क्योंकि इनका पोलिटिक्स के साथ, देश की मेनस्ट्रीम के साथ एक क्लीयर-कट ऐसोसिएशन है।

महोदय, एक पर्चे का जिक्र यहां किया गया, जो 9 तारीख का है। किसी ने उसको सबस्क्राइब नहीं किया, लेकिन मैं आपको एक 11 तारीख का पम्फलेट दिखाना चाहता हूं। जो आज जेएनयू की स्टूडेंट्स यूनियन है, उस स्टूडेंट्स यूनियन के अंदर ऑल इंडिया स्टूडेंट्स फेडरेशन का प्रेसिडेंट है, उस स्टूडेंट्स यूनियन के अंदर आइसा के जेनेरल और वाइस प्रेसिडेंट है, उस स्टूडेंट्स यूनियन की तरफ से एक पर्चा 11 तारीख को जारी किया गया। उस पर्चे के अंदर, स्टूडेंट्स यूनियन, जेएनयू ने जारी किया, उस पर्चे के अंदर साफ लिखा हुआ है - At the outset, we condemn the divisive slogans - भारत के टुकड़े होंगे हजार, that were raised by some people on the day. इस पर्चे का जिक्र नहीं करते। पता नहीं, कहां-कहां से पर्चे उठाकर ला रहे हैं। इस पर्चे पर दस्तखत किसके हैं? कन्हैया कुमार के, जो जेएनयूएसयू प्रेसिडेंट है। इस पर्चे पर दस्तखत किसके हैं? शेहला राशिद के, जो वाइस प्रेसिडेंट है जेएनयूएसयू की। इस पर्चे पर दस्तखत किसके हैं? रामा नागा के, जो जनरल सेक्रेटरी हैं स्टूडेंट यूनियन का। अगर इस पर्चे पर किसी के दस्तखत नहीं हैं, तो वह अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का जॉयंट सेक्रेटरी है। उसने इस पर्चे पर दस्तखत करने से मना कर दिया। यह है

स्थिति। इल्जाम लगाया जा रहा है और आज टीवी में और पब्लिक डॉमेन में यह बात आ चुकी है कि जो टेप पेश किए जा रहे हैं, उनमें से ज्यादातर डॉक्टर्ड हैं। मैं इल्जाम नहीं लगा रहा, लेकिन यह बात भी सामने आई है कि राष्ट्रवाद के खिलाफ और भारत को तोड़ने वाले नारे कुछ एबीवीपी के कार्यकर्ताओं ने भी लगाए, जिनकी फोटो मीडिया पर चल रही है। जांच का विषय है, कौन सी टेप सही है और कौन सी गलत है? कन्हैया कुमार ने क्या कर दिया? कन्हैया कुमार क्यों बंद हो गया? इतनी फुर्ती दिखाई। हमारे ही पार्टी के एक साथी ने आज सवाल पूछा था, उसके जवाब में हमारी एचआरडी मिनिस्टर लिखती हैं - "केन्द्रीय विश्वविद्यालय संवैधानिक स्वायत्त निकाय हैं, जिनका संबंधित अधिनियम के तहत सृजन किया गया है। केन्द्रीय विश्वविद्यालयों को छात्रों के विरुद्ध अनुशासन भंग करने, अनुशासनात्मक कार्यवाही करने के लिए माननीय न्यायालयों के अनुपालन सहित... वगैरह, वगैरह... अन्य शक्तियां प्राप्त हैं"। स्वायत्तशासी संस्था है। कन्हैया कुमार ने क्या किया था? मैं त्यागी जी से पूछना चाहूंगा, त्यागी जी से नहीं पूछूंगा, चेयर को एड्रेस करूंगा, मुझे डी. राजा जी से और सीताराम येचुरी जी से यह शिकायत है कि जब मैं स्टूडेंट पोलिटिक्स में भाग लेता था, कार्य करता था, तो भविष्य में भारत कैसे बनेगा और यहां गरीब मजदूर की सत्ता कैसे स्थापित होगी, उसकी डायरेक्शन इन लोगों ने मुझे कभी नहीं दी। आज कन्हैया कुमार का भाषण जो सारे मीडिया में चल रहा है, उसमें वह कन्हैया कुमार क्या कहता है? वह कहता है - पूंजीवाद से आजादी। वह कन्हैया कुमार क्या कहता है? वह कहता है - संप्रदायवाद से आज़ादी। वह कन्हैया कुमार कहता है - संघवाद से आज़ादी। वह कन्हैया कुमार कहता है - दंगाइयों से आज़ादी। यह आज़ादी-आज़ादी मांगते हुए कन्हैया कुमार का क्या हुआ? साथ में वह यह भी कह देता है कि इसके लिए दलितों का, पिछड़ों का, अल्पसंख्यकों का मोर्चा बन करके राजनैतिक शक्ति के रूप में उभरना चाहिए। यह है लाइन, यह है पोलिटिक्स, जो डीपीटी जी ने भी हमें कभी नहीं दी। हम जेएनयू में इनके भी भाषण सुनने जाते थे। डी. राजा जी ने भी नहीं दी, सीताराम जी ने भी नहीं दी।

†**جناب جاوید علی خان (اتر پردیش) :** مانئے اپ سبھا پتی جی، میں آج سدن میں دوسری بار بولنے کے لئے کھڑا ہوا ہوں۔ میں نے جب پہلا بھاشن دیا تھا، تو میں بھاشن کے دوران پیٹھہ کی طرف اشارہ کیا تھا اور کہنا چاہا تھا کہ نئے سدسیوں اور چھوٹی پارٹیوں کو پیٹھہ کا سنرکشن ملنا چاہئے۔ ہمارے نیتا نریش اگروال جی نے مجھے یہ کہہ کر ڈپٹ دیا کہ چیئر پر کسی کو انگلی نہیں اٹھانی چاہئے۔ آج یہ بحث چل رہی ہے، میں پیٹھہ کے پرتی پورا سمّان کرتے ہوئے، نیتا سدن کے پرتی پورا سمّان وینکت کرتے ہوئے، نیتا پرتی-پکش کے پرتی پورا سمّان کرتے ہوئے، یہ کہنا چاہتا ہوں کہ پیٹھہ کو کم سے کم نئے سدسیوں کے بارے میں، کم بولنے والے سدسیوں کے بارے میں یا کبھی کبھی بولنے والے سدسیوں کا دھیان رکھنا چاہئے۔ مجھے بلایا گیا اور بولنے کے لئے کھڑا ہوا، تو مجھے بیٹھا دیا گیا۔ میں جانتا ہوں اور میں نے نیم-آولی بھی پڑھی ہے، میں نے پرمپرائیں بھی پڑھی ہیں، لیڈر آف دی ہاؤس، لیڈر آف دی اپوزیشن اگر کسی وقت بھی

† Transliteration in Urdu script.

[श्री जावेद अली खान]

کھڑے ہوکر ہسکشیپ کریں گے، تو ان کو پورے سمان کے ساتھ سنا جائے گا، لیکن بیچ میں ایک گھنٹے کا بھاشن، شروع میں ایک گھنٹے کے لئے بیٹھا رہا۔ جب لیڈر آف دی اپوزیشن سے کہا کہ بولو، تو وہ بولے کہ ہم نہیں بولیں گے، پھر میرا نمبر کٹ گیا۔ آج ہم اس سدن کے اندر جس مدعے پر بحث کر رہے ہیں، جب مدعا جو پارٹیوں کے بیچ کا مدعا نہیں ہے۔ کیا یہ مدعا کانگریس اور بی۔جے۔پی۔ میں راشٹرواد کو لے چیمپئن شپ جیتنے کا ہے؟ کیا اس میں شری سیتا رام یچوری جی کا ایکسپرٹ کمنٹ ہر پانچ منٹ بعد ضروری ہے؟ میں چیئر سے یہ کہنا چاہتا ہوں کہ میں نے یہاں جو ٹپنی کی ہے، اس میں لگے وقت کو میرے وقت سے ہٹا دیا جائے۔ میں نے اپنی پیڑا آپ کے سامنے نیا سدسئے اور کم بولنے والا سدسئے ہونے ناطے رکھی ہے۔

(اپ سبھا ادھیکش (شری تروچی شیوا) پیٹھاسین ہوئے)

مہودے، میں مدعے پر آنا چاہتا ہوں۔ جے۔این۔یو۔ میں جو کچھ ہوا، اس کے بارے میں نیتا سدن نے بھی کہا ہے اور بی۔جے۔پی۔ کے وکتہ بھوپندر جی نے بھی کہا ہے۔ جب شری سیتا رام یچوری جی نے بحث شروع کی تھی، اس وقت میں سوچ رہا تھا کہ میں سیتارام یچوری جی کے بھاشن سے اپنی بات شروع کروں گا۔ لیکن سٹہ پکش کے دو نیتاؤں کی باتیں سننے کے بعد مجھے ان کے بھاشن سے اپنی بات شروع کرنی ہے۔ بار بار یہ کہا جا رہا ہے کہ جے۔این۔یو۔ میں کون-کون چلا گیا، کیوں چلا گیا، وہاں دیش کے ورودھ میں نعرے لگ گئے اور ادھر سے اخباروں میں، میڈیا میں سب طرف سے یہ بیان آرہے ہیں کہ جے۔این۔یو۔ کے اندر دیش کے خلاف جو نعرے لگے across party line وہ غلط ہیں۔ ان کی نندا ہونی چاہئے، ان کی بھرتسنا ہونی چاہئے۔ وہ نعرے آگے نہ لگیں، اس کے انتظامات صرف جے۔این۔یو۔ میں ہی نہیں، سب جگہ، سب سیاسی طاقتوں کو کرنے چاہئیں، سرکار کو کرنے چاہئے اور دیش پرتی پریم رکھنے والے سب ناگرکوں کو کرنے

چاہئے۔ یہ عام سہمتی کا سوال ہے۔ دیش پریم کوئی پارٹیوں کا سوال نہیں ہے، راشٹر بھکتی کوئی پارٹیوں کا سوال نہیں ہے۔ دیش میں سنودھان کے پرتی شردھا رکھنے والے، بھارت کے آزادی کے آندولن کی وراثت میں اپنا حصہ ماننے والے سبھی لوگوں کے بیچ اس بات کی عام سہمتی ہے کہ ہم دیش کی ایکتا کے خلاف، اس کی جغرافیائی ایکتا کے خلاف، اس کی آپسی ایکتا کے خلاف، اس کے بھائی-چارے کے خلاف کوئی بات نہیں سنیں گے۔ لیکن بی.جے.پی. کے لوگ کیا کر رہے ہیں، 'اس کی ٹوپی اس کے سر پر' رکھہ رہے ہیں۔ نعرے کسی نے لگائے، آپ اس کے لئے سیاسی پارٹیوں کو کیسے دوشی ٹھہرا سکتے ہو؟ آپ سیاسی ورکروں کو کیسے نعرے لگانے کے لئے دوشی ٹھہرا سکتے ہو؟ آج یہ سب ہو رہا ہے۔ میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ راشٹر بھکتی اور راشٹر پریم کسی ایک پارٹی کا اور خاص طور سے بھارتی جنتا پارٹی کا پیٹینٹ نہیں ہے۔ میں اس گھٹنا کی بحث میں اب نہیں جانا چاہتا، جو حیدرآباد یونیورسٹی میں ہوئی۔ کیوں کہ نیتا پرتی-پکش نے بڑے سلسلےوار، تاریخ وار اس گھٹنا کا بیورہ پیش کر دیا ہے۔ لیکن جے.این.یو. میں جو ہوا، میں اس پر یہ کہنا چاہتا ہوں اور گرہ منتری جی بھی یہاں موجود ہیں اور سدن کے سارے سینئر سدسئے بھی یہاں موجود ہیں، میں بڑے ادب کے ساتھہ آپ سے ایک بات کہنا چاہتا ہوں۔

مانئے اپ سبھا ادھیکش جی، میں آپ سے بڑے ادب کے ساتھہ ایک بات کہنا چاہتا ہوں کہ کیا بھارت کی ٹیرٹری میں، سیما میں افضل گرو کی پرشنسا، یعقوب میمن کی پرشنسا یا دیش کے ورودھہ میں نعرے، دیش کو توڑنے والے نعرے پہلی بار لگے ہیں؟ آئے دن میں اخباروں میں پڑھتا ہوں اور ٹی وی. پر دیکھتا ہوں کہ کشمیر کے اندر جلوس نکلتے ہیں، مظاہرے ہوتے ہیں اور جیسے نعرے جے.این.یو. میں کچھہ لوگ نقاب پہن کر لگا رہے تھے، ویسے ہی نعرے آئے دن کشمیر کے اندر لگتے ہیں۔ میرا نویدن یہ ہے کہ

[श्री जावेद अली खान]

میں ان کی صفائی نہیں دے رہا ہوں، ان کا پکش نہیں لے رہا ہوں ان کی سائڈ نہیں لے رہا ہوں۔ راشٹر ورودھی کون ہے؟ دوسرے لوگوں کو، سیاسی پارٹیوں کو راشٹر ورودھی برانڈ کرنے کی کوشش کرنے سے پہلے اگر آپ اپنے بغل گیروں کی طرف، اپنے سہیوگیوں کی طرف اور ان کے سمرتھکوں کی طرف ذرا نظر دوڑا لیتے، تو راشٹر ورودھی کی نشاندہی کرنے میں آپ کو آسانی ہو جاتی، لیکن آپ وہ کام نہیں کریں گے آپ کیا کریں گے؟ آپ یہ کریں گے کہ جتنی بھی مین-اسٹریم کی سیاسی پارٹیاں ہیں، انہیں کسی طریقے سے بھی پکڑو اور جو راشٹر ورودھی عناصر ہیں، ان کے خیمے میں جاکر کھڑا کر دو۔ لوک سبھا کے اندر ہماری پارٹی کے نیتا مانّنے ملائم سنگھ جی نے بھاشن دیا۔ انہوں نے بھی بات یہیں سے شروع کی اور میں بھی بار بار بھارت کی ایکتا کے بارے، بھارت کی اکھنڈتا کے بارے میں کہہ رہا ہوں۔ جب میں ایکتا-اکھنڈتا کہتا ہوں، تو میں صرف سیماؤں کی ایکتا کی بات نہیں کرتا، میں صرف جغرافیائی ایکتا کی بات نہیں کرتا، جب میں ایکتا اور اکھنڈتا کی بات کرتا ہوں، تو جنتا کی ایکتا اور اکھنڈتا، اس کی بھی بات کرتاہوں، ان کے بھائی چارے اور سدبھاؤ کی بھی بات کرتا ہوں۔ جو سیما پر نظر ٹیڑھی کرے گا، جو دیش کی ایکتا پر نظر ٹیڑھی کرے گا، ہم اس کے خلاف ہیں اور جو ہمارے آپس کے بھائی چارے کو توڑ کر دیش کی ایکتا توڑنے کی کوشش کرے گا، ہم اس کے خلاف بھی ہیں۔ یہ میں کہنا چاہتا ہوں۔

جے۔این۔یو۔ کی گھٹنا کیا ہے؟ جے۔این۔یو کی گھٹنا یہ ہے کہ ایک روہت ویمولا کا کانڈ ہوا، حیدرآباد میں ایک گھٹنا ہوئی ...(مداخلت)... مجھے معلوم ہے، لیکن روہت ویمولا کو دفنانا تھا، اس لئے بار بار افضل کو اکھاڑنا پڑتا ہے۔ یہ بی۔جے۔پی۔ کی لائن ہے، روہت ویمولا کو گاڑ دو اور افضل کو اکھاڑ لو، کیوں کہ اگر افضل سامنے نہیں ہوگا، تو پھر ان کے راشٹرواد کی پرشٹی نہیں ہو سکتی ہے۔ یہ کونسی طریقہ ہے؟ یہاں کون افضل

کو subscribe کر رہا رہے، یہاں کون یعقوب میمن کو subscribe کر رہا ہے؟ بار بار سب بربادی کے نعرے لگوا دئے۔ میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ آپ جموں کشمیر میں جاکر اپنے سہیوگیوں کے جلوس میں آنے والوں کی نشاندہی کرئیے، آپ وہاں پائیں گے کہ کون راشٹر کے ورودھ میں ہے اور کون راشٹر کے پکش میں ہے۔ افضل کی پرشنشا جنہوں نے کی، مین-اسٹریم پارٹیوں میں جنہوں نے کی، آپ ان سے ہاتھ ملاتے ہیں، تو آپ کو کوئی پریشانی نہیں ہوتی اور مین-اسٹریم کی دوسری پارٹیاں، چاہے وہ کانگریس ہو، کمیونسٹ ہو، سماجوادی پارٹی ہو، ان پر جب چاہے تب آپ راشٹر دروہ کا الزام لگا دیتے ہیں۔ راشٹر پریم ہم بھی کرتے ہیں، راشٹر سےپیار ہم بھی کرتے ہیں۔ میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ آپ جس راشٹر کی بات کرتے ہیں، آپ جس راشٹر کی اودھارنا کی بات کرتے ہیں، وہ راشٹر کی اودھارنا بھارت کے سنودھان میں نہیں ہے۔ آپ کی اودھارنا دوسری ہے۔ بھارت کے سنودھان میں جس راشٹر کی اودھارنا ہے، اس اودھارنا میں آج اس سدن کے زیادہ تر لوگ یقین کرتے ہیں اور راشٹر کے سمبندھ میں جو آپ کی اودھارنا ہے، وہ اودھارنا یا تو ہندو راشٹر کی ہے یا اندھ راشٹرواد کی ہے، یہ میں کہنا چاہتا ہوں۔

اُپ سبھا ادھیکش جی، میں جے۔این۔یو۔ کی گھٹنا کی دو تین باتیں کہنا چاہتا ہوں۔ ...(وقت کی گھنٹی)... سر، سب کو زیادہ وقت ملا ہے۔ میں دو منٹ سے زیادہ وقت نہیں لوں گا۔ جے۔این۔یو۔ میں کیا ہوا؟ جے۔این۔یو۔ میں ایک گھٹنا ہوئی، سب نے ذکر کر دیا۔ اکھل بھارتیہ ودھیارتی پریشد جے۔این۔یو۔ کے اندر کام کرتا ہے اے۔آئی۔ایس۔ایف۔ وہاں کام کرتا ہے، ایس۔ ایف ۔آئی۔ وہاں کام کرتی ہے، آئسا وہاں کام کرتی ہے، جے۔این۔یو۔ اسٹوڈینٹس پالیٹکس میں این۔ایس۔یو۔آئی۔ وہاں کام کرتی ہے، یہ سب چھاتر سنگٹھن کام کرتے ہیں، openly کام کرتے ہیں۔ ان کے نام میں اس لئے لے رہا ہوں کہ یہ دیش کی

[श्रीजावेद अली खान]

مین اسٹریم پارٹیوں سے جڑے ہوئے سنگٹھن ہیں۔ یہ ان کی آئیڈیولوجی کو، ان کے پروگرام کو، ان کی وچاردھارا کو subscribe کرتے ہیں۔

دوسرے کچھ سنگٹھن ہیں، جو ان پارٹیوں کے یا اس طرح کی وچاردھارا کو subscribe نہیں کرتے۔ سنتے ہیں کہ ان کا تعلق کسی انڈرگراؤنڈ پارٹی سے ہے۔ ان کے کام کے لئے، ان کے دشکرم کے لئے، ان کے کسی راشٹروروودھی کام کے لئے ان سنگٹھنوں کو دوشی نہیں ٹھہرایا جا سکتا، کیوں کہ ان کا پالیٹکس کے ساتھہ، دیش کی مین-اسٹریم کے ساتھہ ایک کلئیر-کٹ ایسوسی ایشن ہے۔

مہودے، ایک پرچے کا ذکر یہاں کیا گیا، جو 9 تاریخ کا ہے۔ کسی نے اس کو subscribe نہیں کیا، لیکن میں آپ کو ایک 11 تاریخ کا پمفلیٹ دکھانا چاہتا ہوں۔ جو آج جے۔این۔یو۔ کی اسٹوڈینٹس یونین ہے، اس اسٹوڈینٹس یونین کے اندر آل انڈیا اسٹوڈینٹس فیڈریشن کا پریزیڈینٹ ہے، اس اسٹوڈینٹس یونین کے اندر آئسا کے جنرل سکریٹری اور وائس پریزیڈنیٹ ہیں، اس اسٹوڈینٹس یونین کی طرف سے ایک پرچہ 11 تاریخ کو جاری کیا گیا۔ اس پرچے کے اندر، اسٹوڈینٹس یونین، جے۔این۔یو۔ نے جاری کیا، اس پرچے کے اندر صاف لکھا ہوا ہے۔ -At the outset, we condemn the divisive slogans بھارت کے ٹکڑے ہوں ہزار، that were raised by some people on that day. اس پرچے کا ذکر نہیں کرتے۔ پتہ نہیں، کہاں کہاں سے پرچے اٹھاکر لا رہے ہیں۔ اس پرچے پر دستخط کس کے ہیں؟ کنہیا کمار کے، جو جے۔این۔یو۔ایس۔یو۔ پریزیڈینٹ ہے، اس پرچے پر دستخط کس کے ہیں؟ شہلا راشد کے، جو وائس پریزیڈنیٹ ہے جے۔این۔یو۔ایس۔یو۔ کی۔ اس پرچے پر دستخط کس کے ہیں؟ راما ناگا کے، جو جنرل سکریٹری ہے اسٹوڈینٹس یونین کا۔ اگر اس پرچے پر کسی کے دستخط نہیں ہیں تو وہ اکھل بھارتیہ ودھیارتی پریشد

کا جوائنٹ سکریٹری ہے۔ اس نے اس پرچے پر دستخط کرنے سے منع کر دیا۔ یہ ہے حالت۔ الزام لگایا جا رہا ہے اور آج ٹی-وی میں اور پبلک ڈومین میں یہ بات آچکی ہے کہ جو ٹیپ پیش کئے جا رہے ہیں، ان میں سے زیادہ تر ڈاکٹرس ہیں۔ میں الزام نہیں لگا رہا، لیکن یہ بات بھی سامنے آئی ہے کہ راشٹر واد کے خلاف اور بھارت کو توڑنے والے نعرے کچھ اے.بی.وی.پی. کے ورکروں نے بھی لگائے، جن کی فوٹو میڈیا پر چل رہی ہے۔ جانچ کا وشئے ہے، کون سی ٹیپ صحیح ہے اور کون سی غلط ہے؟ کنہیا کمار نے کیا کر دیا؟ کنہیا کمار کیوں بند ہو گیا؟ اتنی پھرتی دکھائی۔ ہمارے ہی پارٹی کے ایک ساتھی نے آج سوال پوچھا تھا، اس کے جواب میں ہماری ایچ.آر.ڈی. منسٹری لکھتی ہے "کیندریہ وشو-ودھیالیہ سنودھانک سواتو نکائے ہیں، جن کا سمبندھت ادھنیم کے تحت سرجن کیا گیا ہے۔ کیندریہ وشو-ودھیالیوں کو چھاتروں کے ورذھم انوشاسن بھنگ کرنے، انوشاسناتمک کاروائی کرنے کے لئے ماننے نیاپالیوں کے انوپالن سہت وغیرہ، وغیرہ ۔اننے شکتیاں پراپت ہیں" سواتوشاسی سنستھا ہے۔ کنہیا کمار نے کیا کیا تھا؟ میں تیاگی جی سے پوچھنا چاہوں گا، تیاگی جی سے نہیں پوچھوں گا، چیئر کو ایڈریس کروں گا، مجھے ڈی.راجا جی سے اور سیتا رام یچوری جی سے یہ شکایت ہے کہ جب میں اسٹوڈینٹس پالیٹکس میں حصہ لیتا تھا، کام کرتا تھا، تو انہوں نے مستقبل میں بھارت کیسے بنے گا اور یہاں غریب مزدور کو ستہ کیسے استھاپت ہوگی، اس کی ڈائریکشن ان لوگوں نے مجھے کبھی نہیں دی۔ آج کنہیا کمار کا بھاشن جو سارے میڈیا میں چل رہا ہے، اس میں وہ کنہیا کمار کیا کہتا ہے؟ وہ کہتا ہے - پونجی واد سے آزادی۔ وہ کنہیا کمار کیا کہتا ہے؟ وہ کہتا ہے - سمپردانواد سے آزادی۔ وہ کنہیا کمار کہتا ہے - سنگھہ واد سے آزادی۔ وہ کنہیا کمار کہتا ہے - دنگائیوں سے آزادی۔ یہ آزادی-آزادی مانگتے ہوئے کنہیا کمار کا کیا ہوا؟ ساتھ میں وہ یہ بھی کہہ دیتا ہے کہ اس کے لئے دلتوں کا، پچھڑوں کا، اقلیتوں کا مورچہ بن کرکے سیاسی طاقت کے روپ میں ابھرنا چاہئے۔ یہ ہے لائن، یہ پولیٹکس، جو ڈی.پی.ٹی. جی نے بھی ہمیں کبھی

[श्री जावेद अली खान]

نہیں دی۔ ہم جے۔این۔یو۔ میں ان کے بھی بھاشن سننے جاتے تھے۔ ڈی۔ راجا جی نے بھی نہیں دی۔ سیتا رام جی نے بھی نہیں دی۔

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Please conclude, that were raised by some people on that day.

श्री जावेद अली खान: आज कन्हैया एक लाईन दे रहा है कि अगर दलित, अल्पसंख्यक, पिछड़े, लोहिया के मानने वाले, मार्क्स के मानने वाले और अम्बेडकर को सलाम करने वाले एक प्लेटफार्म पर आ जाएंगे, तो क्या कुछ बचेगा? असल कारण यही है, जो बीजेपी को विचलित कर रहा है। असल कारण यही है, जो कन्हैया को जेल में रखे हुए है। यहां पर हमारे माननीय सदस्य श्री मणि शंकर अय्यर जी बैठे हुए हैं और हमारे माननीय वरिष्ठ सदस्य नेता राजा दिग्विजय सिंह जी अभी यहां से चले गए। ये बड़े-बड़े लोग बीजेपी के बारे में, सत्ता के बारे में क्या-क्या नहीं कहते हैं? मैं पूछना चाहता हूं, क्या-क्या नहीं कहते, लेकिन इनकी बात को तो सत्ता बड़े सहज तरीके से सहन कर लेती है, किन्तु अगर 21 साल के हार्दिक पटेल और 24 साल के कन्हैया देश की राजनीति के भविष्य की दिशा में ले जाने का संकल्प लेते हैं, तो यह सरकार राष्ट्रद्रोह का केस लगा कर उन्हें जेल के अन्दर ठूंसने का काम करती है।

†**جناب جاوید علی خان:** آج کنہیا ایک لائین دے رہا ہے کہ اگر دلت، اقلیت، پچھڑے، لوہیا کے ماننے والے، مارکس کے ماننے والے اور امبیڈکر کو سلام کرنے والے ایک پلیٹ فارم پر آجائیں گے تو کیا کچھ بچے گا، اصل وجہ یہی ہے، جو بی جے پی کو وچلت کررہی ہے۔ اصل وجہ یہی ہے، جو کنہیا کو جیل میں رکھے ہوئے ہے۔ یہاں پر ہمارے مانئیے سدسئیے شری منی شنکر ائیر جی بیٹھے ہوئے ہیں اور ہمارے مانئیے ورشٹھ سدسئیے نیتا راجہ دگ وجے سنگھ جی ابھی یہاں سے چلے گئے۔ یہ بڑے بڑے لوگ بی جے پی کے بارے میں، ستّہ کے بارے میں کیا کیا نہیں کہتے ہیں؟ میں پوچھنا چاہتا ہوں، کیا کیا نہیں کہتے، ان کی بات کو تو ستّہ بڑے سہج طریقے سے سہن کرلیتی ہے، لیکن اگر اکیس سال کے ہارڈک پٹیل اور چوبیس سال کے کنہیا دیش کی راج نیتی کو بھوشیئے کی دِشا میں لے جانے کا سنکلپ لیتے ہیں، تو یہ سرکار راشٹردروہ کا کیس لگاکر انہیں جیل کے اندر ٹھونسنے کا کام کرتی ہے۔

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Please conclude.

श्री जावेद अली खान: उपसभाध्यक्ष जी, मैं यह कहता हूं कि जेएनयू का मामला बहुत गम्भीरता के साथ लेना चाहिए और उस पर राजनैतिक दलों को आपस में दोषारोपण नहीं करना चाहिए। राजनैतिक दलों को आम सहमति के आधार पर जेएनयू की जो गौरवशाली परम्परा रही है, उसको

† Transliteration in Urdu script.

आगे बढ़ाना चाहिए और राष्ट्र विरोधी ताकतों का हर स्तर पर विरोध करना चाहिए। बहुत-बहुत धन्यवाद।

† **شری جاوید علی خان:** آپ سبھاادھیکش جی، میں یہ کہتا ہوں کہ جے این یو کا معاملہ بہت گمبھیرتا کے ساتھ لینا چاہیئے اور اس پر راجنیتک دلوں کو آپس میں دوشروپن نہیں کرنا چاہیئے۔ راجنیتک دلوں کو عام سہمتی کے آدھار پر جے این یو کی جو گوروشالی پرمپرا رہی ہے، اس کو آگے بڑھانا چاہیئے اور راشٹریہ ورودھی طاقتوں کا ہر سطح پر ورودھ کرنا چاہیئے۔ بہت بہت دھنیواد۔

(ختم شد)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Thank you. Shri K. C. Tyagi.

श्री के. सी त्यागी (बिहार): उपसभाध्यक्ष महोदय, नेता सदन ने अभी समाजवादी पार्टी और उस आन्दोलन का जिक्र करते हुए, डॉ. अम्बेडकर को उद्धृत किया और अपना वक्तव्य दिया। मैं उनसे असहमति रखता हूं। राम गोपाल जी से निवेदन है कि वे आधा मिनट और रुक जाएं। चूंकि इस विषय पर इनकी पीएचडी है, इसीलिए मैं इनसे इनको शामिल कर रहा हूं।

महोदय, जयप्रकाश नारायण और डा. लोहिया, इन दोनों ने Constituent Assembly में हिस्सा नहीं लिया। इसका पहला कारण तो यह था कि वह adult franchise के द्वारा चुनी हुई प्रतिनिधि सभा नहीं थी, जो समाजवादी चाहते थे। दूसरा, उस सभा का सदस्य बनने के लिए क्वीन की ओथ लेनी पड़ती थी, जिसको मानने से समाजवादियों ने मना कर दिया था। मेरे मित्र अरुण जेटली जी जिसका जिक्र कर रहे थ, उसका एक कारण यह था। मेरे नौजवान दोस्त, जिनके साथ मुझे लम्बे समय तक काम करने का मौका मिला है, मैं भाजपा के अपने उन पुराने मित्रों से कहता हूं कि पुराने मुर्दे मत उखाड़ो, क्योंकि कइयों में से बदबू भी आ रही है। अगर यह बहस लम्बी चलेगी, तो कहां तक जाएगी? अभी स्मृति इरानी जी ने एक हुक्मनामा जारी किया कि 200-250 फुट का झंडा लगाया जाए। मैं इसका स्वागत करता हूं, लेकिन जो उनके वैचारिक गुरु हैं, गुरु गोलवलकर जी, राष्ट्रीय झंडे के बारे में उनका जिक्र भी मैं करना चाहूंगा। चूंकि जब गड़े मुर्दे उखाड़ने की बात ही चली है, तो फिर सबके गड़े मुर्दे उखड़ने चाहिए। गुरु गोलवलकर जी ने राष्ट्रीय झंडे के मुद्दे पर अपने लेख "पतन ही पतन" में लिखा है, "उदाहरण स्वरूप हमारे राजनेताओं ने हमारे राष्ट्र के लिए एक नया ध्वज निर्धारित किया है। उन्होंने ऐसा क्यों किया, यह पतन की ओर बहने एवं नकलीपन का एक स्पष्ट प्रमाण है।"

श्री भुपेन्द्र यादव: यह आपने कहां से क्वोट किया है?

मानव संसाधन विकास मंत्री (श्रीमती स्मृति जूबिन इरानी): इसका पब्लिकेशन क्या है?

श्री के. सी त्यागी आप पहले मेरी बात सुन लीजिए। ...(व्यवधान)... प्लीज, मैंने आपको डिस्टब नहीं किया था। ...(व्यवधान)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Kindly address the Chair. ... *(Interruptions)*... Tyagiji, please address the Chair. ... *(Interruptions)*...

† Transliteration in Urdu script.

श्री के. सी. त्यागी: 14 अगस्त, 1947 के "Organizer" में आपको यह मिल जाएगा। ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Mr. Tyagi, kindly address the Chair. You need not respond to him ...*(Interruptions)*... Please address the Chair.

श्री के. सी. त्यागी: उपसभाध्यक्ष महोदय, 14 अगस्त, 1947 के "Organizer" में लिखा जाता है, "ये लोग जो किस्मत के दांव से सत्ता तक पहुंचे हैं, वे भले ही हमारे हाथों में तिरंगा थमा दें, लेकिन हिन्दुओं द्वारा न इसे सम्मानित किया जा सकेगा, न अपनाया जा सकेगा। ...**(व्यवधान)**... What is this? आप देश में एक नकली किस्म का और कृत्रिम राष्ट्रीयवाद पैदा करके —यह पहली बार नहीं है। इनके पूर्वजों ने पहले भी लिखा है। संविधान की बड़ी बात मेरे काबिल दोस्त जेटली जी करके गये थे। संविधान के बारे में है कि हमारा संविधान पश्चिमी देशों के written संविधानों में से लिये गये विभिन्न अनुच्छेदों का एक भारी-भरकम तथा बेमेल अंशों का संग्रह मात्र है। This is their respect for the Constitution. संघीय ढांचे के बारे में भी है। आखिर में, गुरु गोलवलकर ने 1940 में मद्रास (अब चेन्नई) में आरएसएस के 1350 उच्चस्तरीय कार्यकर्ताओं के सामने भाषण करके एक घोषणा की, I read कि "एक ध्वज के नीचे, एक नेता के मार्गदर्शन में, एक ही विचार से प्रेरित होकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हिन्दुत्व की प्रखर ज्योति और विशाल भूमि को कोने-कोने से प्रज्ज्वलित कर रहा है।"

SHRI PRAKASH JAVADEKAR: Are you authenticating it? ...*(Interruptions)*... ask him to authenticate it. ...*(Interruptions)*... Kindly authenticate it. ...*(Interruptions)*...

श्री के. सी. त्यागी: अगर यह authentic नहीं होता, ...**(व्यवधान)**... आप सुनिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री प्रकाश जावड़ेकर: आप इसे authenticate कीजिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री के.सी. त्यागी: अगर यह authenticate हो गया तो? ...**(व्यवधान)**...

श्री नीरज शेखर (उत्तर प्रदेश): सर, ...**(व्यवधान)**... मैंने जब पूछा, तो आपने authenticate किया? ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): If there is any document with you, kindly authenticate it. ...*(Interruptions)*... That is all. ...*(Interruptions)*...

श्री के. सी. त्यागी: सर, डॉ. अम्बेडकर को जिस तरह से इन्होंने क्वोट किया, बहन मायावती जी ने विरोध नहीं किया। मैं डॉ. अम्बेडकर को क्वोट करता हूं। कल जब बहन मायावती जी सवाल उठा रही थीं, तो मुझे भी ठीक से सुनने में नहीं आया। बाद में जब हैदराबाद के उन छात्रों का पर्चा मुझे मिला, तो आपकी बात सही साबित हुई। एक भी दलित, not even a single *Dalit* professor is in the entire Executive Council or any Committee.

स्मृति जी, दूसरा यह है कि आपने कहा कि मुझसे कोई जाति नहीं पूछता, तो आपने ठीक कहा। मुझसे भी कोई नहीं पूछता, डी. पी. त्रिपाठी जी से नहीं पूछता, नरेश अग्रवाल जी से भी नहीं पूछता

और मेरे दोस्त राजीव शुक्ल जी से भी नहीं पूछता, लेकिन यह जाति डॉ. अम्बेडकर से पूछी गई थी, यह जाति जगजीवन बाबू से पूछी गई थी, यह जाति कर्पूरी ठाकुर जी से पूछी गई थी, यह जाति सत्यनारायण जटिया जी से पूछी गई थी, यह जाति पी.एल. पुनिया जी से पूछी गई थी, यह जाति मेरी बहन कुमारी शैलजा जी से पूछी गई थी and above all, बहन मायावती जी से भी पूछी गई थी। ...**(व्यवधान)**... इन सब लोगों से जाति पूछी गई थी। हमसे जाति नहीं पूछी जाती, क्योंकि हमारी जाति इज्जत वाली जाति है। हमसे जाति पूछ कर कोई क्या करेगा और हमारी जाति के आधार पर कोई विसंगति भी क्या करेगा? ठीक बात है, मैं समाजवादियों से, अम्बेडकरवादियों से और गांधीवादियों से कहना चाहता हूं और खास कर जो मध्य की जातियां हैं कि अब इंसाफ मिलना भी जाति के आधार पर तय होने लगा है। मैंने कई मुकदमों में देखा है, इसीलिए अगली लड़ाई ज्युडिशियरी में भी इन वर्गों का प्रतिनिधित्व हो, उसकी होनी चाहिए। ...**(व्यवधान)**... मैं यह कहना चाहता हूं। आपसे जाति नहीं पूछेगा। हमारी जाति इतनी बढ़िया जाति है कि हमसे कौन पूछेगा? हम तो जाति बनाने वाले हैं। तीन हजार साल से, चार हजार साल से हमने जैसा चाहा वैसा विधान पाया। ...**(व्यवधान)**...

श्री रामदास अठावले (महाराष्ट्र): अगर जातिवाद को खत्म करना है, तो ...**(व्यवधान)**... अगर जातिवाद को खत्म करना है, तो ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Please sit down. ...*(Interruptions)*... Please sit down. ...*(Interruptions)*... You speak when your turn comes. ...*(Interruptions)*... You please sit down. ...*(Interruptions)*... Please don't respond. ...*(Interruptions)*...

श्री के. सी. त्यागी: सर, ये मेरे बोलने के बीच में इंटरप्ट करते हैं, मैं क्या करूं? ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Nothing else will go on record. ...*(Interruptions)*...

श्री रामदास अठावले: *

श्री के. सी. त्यागी: सर, मैं उसकी डिटेल में नहीं जाना चाहता, चूंकि बहुत सारे सरकारी कागज एचआरडी मिनिस्टर साहिबा के पास हैं। ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Please sit down. ...*(Interruptions)*...

श्री रामदास अठावले: *

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Tyagiji, you don't need to respond. ...*(Interruptions)*...

*Not recorded.

श्री के. सी. त्यागी: आप मेरे बाद बोल लीजिएगा। ...**(व्यवधान)**... नेता प्रतिपक्ष ने बहुत डिटेल में वहां के घटनाक्रम का जिक्र किया, लेकिन पुनिया जी, मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि यह जो एससी/एसटी कमिशन है, इसक दाँत भी हैं या नहीं हैं? SC and ST (Prevention of Atrocities) Act के तहत दत्तात्रेय के खिलाफ और तीनों लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज होता है और वे फ्रीली घूम रहे हैं। मैं चाहता हूं कि एस0सी0, एस0टी0 एक्ट के तहत जिस वक्त कोई दलित किसी व्यक्ति पर जाति का मुकदमा दर्ज करे तो 24 घंटे के अंदर उस व्यक्ति के हाथ में हथकड़ी होनी चाहिए, वरना क्या फायदा इन कानूनों का। वहां तक जिनके खिलाफ एफ0आई0आर0 दर्ज की, उनके खिलाफ कोई भी कार्यवाही अब तक नहीं हुई। हां, सही है, ठीक कहा दत्तात्रेय जी ने और स्मृति जी और इनके प्रतिनिधियों ने कि ये casteist हैं। यह अच्छा है! डा0 अम्बेडकर जी casteist थे, Ambedkar Students Association, वह भी casteist थी, और उससे पहले इसी तरह का चेन्नई में आई0आई0टी0 में Periyar-Ambedkar Study Circle था, उसको बैन किया, वह भी casteist था?

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Tyagi ji, where have I ever said anybody as a casteist? You are naming me.

SHRI K. C. TYAGI: Mr. Dattatreya wrote a letter to you.

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: What I am saying is that you are naming me. So, kindly take those words back.

SHRI K. C. TYAGI: Please.

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: I have never called anybody as casteist.

SHRI K. C. TYAGI: I am quoting Dattatreya ji.

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Sir, you just took my name. Please take it back. ...*(Interruptions)*...

SHRI K. C. TYAGI: I am not taking your name. I am saying that in your name, Mr. Dattatreya wrote a letter to you.

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: No, no, Sir. Like, you called me ...*(Interruptions)*... Today, kindly take it back. I have never called anybody a casteist.

श्री के. सी. त्यागी: मैं इस पर बहस करने के लिए तैयार हूं।

श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानी: आप बहुत सारे गड़े मुर्दे उखाड़ना चाहते हैं, उखाड़िए वह आपका अधिकार है। but I have never called anybody a casteist. Please take your words back.

श्री के. सी. त्यागी: प्लीज़, गुस्से में बात मत करिए।

श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानी: सर, मैं विनम्रता से कह रही हूं। त्यागी जी, मैं आपके पैर छूकर कह सकती हूं, क्योंकि बड़े हैं आप। मैंने casteist किसी को नहीं कहा।

श्री के. सी. त्यागी: विनम्रता से आप नहीं कहतीं।

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: You have named me. It is on record now. Tyagiji has misled the House. Publicly, privately, I have never used the word, 'casteist'. ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): If anything is like that, the records will be. ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: My request is that I have been named. Sir, kindly verify it from the records. ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): I will go through the records. ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Sir, it is an untrue statement. ...*(Interruptions)*...

श्री के. सी. त्यागी: स्मृति जी, मैं आपके पद की बहुत कद्र करता हूं। ...**(व्यवधान)**...

श्री बैष्णव परिडा (ओडिशा): त्यागी जी ने जो बात बोली हैं, हमारी कॉस्ट क्या है, कोई पूछता नहीं। दूसरे, उनकी कॉस्ट के बारे में पूछना चाहिए। ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Parida ji, there is no need to explain. ...*(Interruptions)*... We do not need any explanation. ...*(Interruptions)*... Parida ji, please sit down. ...*(Interruptions)*... Mr. Parida, please sit down. ...*(Interruptions)*... Parida ji, no interpretation please.

श्री के. सी. त्यागी: स्मृति जी, मैं आपसे एक निवेदन करना चाहता हूं। जिस पद पर आप हैं, यहां कभी मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद भी बैठे थे, इस पर कभी डॉ0 मुरली मनोहर जोशी भी बैठे थे, जिनके पढ़ाए हुए लड़के देश के प्रधान मंत्री बन गए। इसीलिए प्लीज़, जब आपको क्लेरिफिकेशन देना हो, आप बाद में दीजिए, आप गुस्से में इस पद पर बैठी बोलती अच्छी नहीं लगती। मेरा बहुत सम्मान है आपके लिए, बहुत प्यार है छोटी बहन की तरह। लेकिन जिस लहज़े में आप बोलती हैं, कल मायावती जी बोल रही थीं, हम उनकी पार्टी में नहीं हैं, लेकिन आप इस-इस तरीके से करके उनको ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Tyagiji, please address the Chair. ...*(Interruptions)*... You please address the Chair. ...*(Interruptions)*...

श्री के. सी. त्यागी: सर, मैं उनको कह रहा हूं। वे अपने बलबूते पर देश के सबसे बड़े सूबे की चार-चार मुख्य मंत्री रह चुकी हैं। तो इस तरह से आप मत करिए, गुस्से में बात मत करिए। प्लीज़, और जो मैंने कल कहा, जब उसकी हत्या हुई या आत्महत्या हुई सुइसाइड करने के लिए प्रेरित किया गया है, एक चिट्ठी दत्तात्रेय जी की लिखी हुई है और चार-चार चिट्ठियां आपके यहां की लिखी हुई हैं, जो उसकी मृत्यु का कारण बनीं।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Please address the Chair. ...*(Interruptions)*...

SHRI K. C. TYAGI: Rohit was killed because of the 'Manu-made Samvidhan'. इसलिए मैंने आपके लिए, यह satire के रूप में था, गाली नहीं थी और नम्बर-दो, मैं Guru Golvalkar जी को क्वोट करूंगा तो मेरे मित्रों को दिक्कत होगी और वे मनुस्मृति को मानते हैं। और कल मुझे मेरा एक मुस्लिम दोस्त मिला, उसने कहा कि क्यों बुरा मान रहे हो। मेरा नाम अतीक है, मुझे अतीक कुरान शरीफ कह दीजिए, न तो इज्जत मेरी होगी। ...**(व्यवधान)**... इसलिए यह मैंने अपमान के लिए नहीं कहा। आपका सम्मान किया मैंने। सर, मैं समाप्त कर रहा हूं। हायर एजुकेशन में चार वर्षों में 18 दलित छात्रों ने सुसाइड किया। सर, उस पीड़ा को मैं भी उतना नहीं समझूंगा। मुझे डॉ. लोहिया और डॉ. अम्बेडकर का correspondence ध्यान है। डॉ. लोहिया लिखते हैं कि जो सवाल आप उठा रहे हैं, वह मैं भी उठा रहा हूं, लेकिन डॉ. साहब, आप बहुत गुस्से में हैं। उसने कहा कि डॉ. लोहिया, मैं आपकी सारी बात सहन करता हूं, लेकिन आपने देखा है और मैंने झेला है। एक दिन ऐसा भी था कि जब समाजवादी पार्टी और डॉ. लोहिया तथा डॉ. अम्बेडकर की रिपब्लिकन पार्टी, दोनों मिल कर एक पार्टी बनाना चाहते थे। अगर डा. अम्बेडकर न मरते, तो शायद यह काम भी पूरा होता। सर, डॉ. अम्बेडकर ने लिखा, "To the untouchables, Hinduism is a veritable chamber of horrors." यह डा. अम्बेडकर ने लिखा। सर, नेशनल क्राइम ब्यूरो, जो एक सरकारी संस्था है, उसके आंकड़े मैं आपके सामने रखना चाहता हूं। उसके आंकड़े के अनुसार इस देश में हर 14 मिनट पर किसी न किसी दलित के साथ अत्याचार होता है, चार दलित महिलाओं के साथ बलात्कार होता है। यह नेशनल क्राइम ब्यूरो की रिपोर्ट है, जो सरकारी रिपोर्ट है। ...**(समय की घंटी)**... I am finishing it. सर, एक सप्ताह के अंदर 13 दलित मारे जाते हैं, 6 दलितों का अपहरण किया जाता है। 2013 के क्राइम की रिपोर्ट है, जिसके अनुसार 1574 दलित महिलाओं के साथ इस साल रेप हुआ है, 651 दलित मारे गए और नंगा करके घुमाना और परेड कराना, यह मामूली चीज है, मैं उसका जिक्र नहीं करना चाहता हूं, लेकिन रोहित रोज पैदा नहीं होते। उसकी हत्या की तकलीफ मुझे इसलिए है, क्योंकि 71.3 परसेंट एससी, एसटी के बच्चे-बच्चियां हाई स्कूल आते-जाते अपनी पढ़ाई छोड़ देते हैं। उनमें जो कुछ क्रीम बच्चे बचते हैं, उनमें से एक-दो रोहित पैदा होते हैं और जब हम रोहित को एकलव्य की तरह से मारते हैं, तो और रोहित पैदा होने की इच्छा नहीं होती है। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि जो हायर एजुकेशन है ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Please conclude it now. You have consumed more than the double time allotted to you.

श्री के.सी. त्यागी: सर, मैं समाप्त कर रहा हूं। मैं कहना चाहता हूं कि जो हायर एजुकेशन है, उसके अंदर रोहित और इनके साथियों की जो स्कॉलरशिप थी, वह रुकी हुई थी। इनके stiphend रुके हुए थे। सर, ये कैसे गर्व से कहें कि यह देश उनका है? पेरियार का नाम लेते हैं, जातिवादी कहा जाता है और आज विद्यालयों में और विश्वविद्यालयों में डॉ. अम्बेडकर के नाम से संगठन बनाया जाता है। यह हमारे जमाने में नहीं था। माननीय सदस्या बैठी हुई हैं, इनके वालिद साहब थे मोहन सिंह जी। तिवारी जी थे, शरद यादव थे और दूसरे लोग थे, 99 परसेंट दलित लड़के-लड़कियां समाजवादी

आयोजन सभा के मेम्बर हुआ करते थे। आज इनको लगता है कि इनका अपना संगठन होना चाहिए, इसीलिए इन्होंने एसोसिएशन ऑफ अम्बेडकराइट यूथ बना लिया, एएसए बना लिया और मैं उसके विचार कहना चाहता हूं। जैसे आप कहते हैं माओवादी, ये अब किसी की गुलामी में और दासता में रहना नहीं चाहते, इसलिए उस आज़ादी के लिए ये भी लड़ रहे हैं, जो लड़ाई मनुवाद के खिलाफ है।

मैं कश्मीर वाले मसले पर आना चाहता हूं। मेरे कश्मीर के मित्र बैठे हुए हैं। मुफ्ती मोहम्मद साहब और मैं एक ही लोक सभा में थे और आजू-बाजू से एमपी थे। ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Later please.

श्री के.सी. त्यागी: सर, मैं समाप्त कर रहा हूं। ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Thank you, Tyagiji.

श्री के. सी. त्यागी: सर, ए.एस. दौलत की किताब निकली है, जो रॉ के चीफ हैं और ये रॉ के चीफ तब भी थे, जब हमारे नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी देश के प्रधान मंत्री थे। सर, यह किस्सा कश्मीर का है। अटल जी पाकिस्तान के साथ रिश्ते normalise करते हैं और मुफ्ती साहब वहां के मुख्य मंत्री हैं। ठीक है, वहां जाते हैं, वहां बड़ा स्टेज लगता है, वहां बड़ी भीड़ आती है। यह बात अप्रैल, 2003 की है और भुपेन्द्र जी, ऐसा मत समझिए कि मैं बगैर आंकड़ों के बात नहीं करता हूं, "... and famously extended his hand towards Pakistan, a stage was eracted high up for the public meeting." ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Tyagiji, please. ...*(Interruptions)*...

SHRI K. C. TYAGI: I am saying the last sentence. ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): You have already exceeded the time very much. ...*(Interruptions)*...

SHRI K. C. TYAGI: Sir, sitting on the dais in Srinagar in April, 2003 were Vajpayee and Mufti, the Chief Minister. 'Mehbooba wanted to join them.' ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Discussion is about the JNU. ...*(Interruptions)*...

SHRI K. C. TYAGI: 'But she was politely told that there was no place for her on that stage.' ...*(Interruptions)*... I am concluding with last sentence. ...*(Interruptions)*... "Vajpayee did not want her up there. Vajpayee did not want her up there. He did not want her projected. There were grave doubts about Mehbooba in Delhi, about her links with Hizbul Mujahideen' ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): It is too much of time. Please. Please. ...*(Interruptions)*...

SHRI K. C. TYAGI: '... and the help it provided her and her party during the 2002 elections.' ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Thank you very much. ...*(Interruptions)*...

श्री के.सी. त्यागी: यह हमने नहीं लिखा है, बल्कि अटल बिहारी वाजपेयी के समय में रॉ के चीफ थे, उन्होंने अपने memoirs में यह लिखा है।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Thank you. Please conclude.

SHRI K. C. TYAGI: But last ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Please, no 'last'. ...*(Interruptions)*... How much time will you consume? ...*(Interruptions)*...

श्री के. सी. त्यागी: बीजेपी और पीडीपी के बीच में जो Common Minimum Programme बना है, what it said is that we will involve ...*(Interruptions)*... all the stakeholders of Jammu & Kashmir, ...*(Interruptions)*... including the Hurriyat Conference, ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Kindly stick on to the subject. ...*(Interruptions)*... I know you have got more information, but this is not the time. ...*(Interruptions)*... Please. ...*(Interruptions)*...

SHRI K. C. TYAGI: ...and what Hurriyat Conference says is that Kashmir is not the integral part of Hindustan! ...*(Interruptions)*...

SHRI PRAKASH JAVADEKAR: It is politicization of slogans given online. PDP and BJP is not the issue. But they want to mix it. And there is a time-limit, Sir.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Yes, I was telling that. ...*(Interruptions)*...

श्री के. सी. त्यागी: मेरे बोलने से आपको क्या दिक्कत है? ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Tyagiji, please wind up. ...*(Interruptions)*... Please wind up. ...*(Interruptions)*...

श्री के. सी. त्यागी: मैं वाइंड अप करने से पहले यह साफ कर देना चाहता हूं। ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): You were given eight minutes and you have spoken for twenty minutes! ...*(Interruptions)*... If everyone goes on speaking like that, we will have to sit late at night. ...*(Interruptions)*...

श्री के. सी. त्यागी: जो नेशनल मेनस्ट्रीम की पार्टीज़ हैं, उनके साथ-साथ हमारे अंदर भी राष्ट्रवाद की भावना उनसे कम नहीं है, इसलिए सारे अपोजिशन को एंटी-नेशनल कहना, उनके खिलाफ कैम्पेन चलाना, जुलूस निकालना ठीक नहीं है। ये सब हमने 1974-75 में आपके साथ किया था और हम भी आपके साथ जेल में रहे थे। ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): You have made your point. ...*(Interruptions)*... You have made your point. Thank you.

श्री के. सी. त्यागी: तब आपको एंटी-नेशनल कहा गया था, अटल जी को भी कहा गया था और जयप्रकाश नारायण जी को भी कहा गया था। वह भी गलत था और यह भी गलत है। बहुत-बहुत धन्यवाद।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Thank you very much. Now, Shri Sukhendu Sekhar Roy.

SHRI SUKHENDU SEKHAR ROY (West Bengal): Sir, when I first heard the news of tragic death of Rohit Vemula that occurred a month back in the University of Hyderabad, in my mind's eye, I could see that a bright young *dalit* scholar was hanging over the face of our democracy, and the Constitution, which speaks of abolition of casteism and prohibits indiscrimination of any form among our people, rather protects and promotes the interest of the SCs/STs/OBCs and the minorities. Rohit's death was not the first one of such incident. It also happened in the past at regular intervals. The protests from different corners demanding justice have not been responded with remedial action, not to speak of sympathetic intervention by the Government of the day or of the past.

Sir. Rohit Vemula's suicide note explains everything. I need not elaborate. This unfortunate incident once again establishes the fact that even bright scholars, belonging to Backward Class, are not safe within our university campus and that too, after 69 years of Independence! What prompted a member of Union Cabinet to write a series of letters to Government for action against the students?

If we believe in the autonomy of universities, then it is incumbent upon the authorities of the universities to take stock of the situation within the campus and act accordingly.

Sir, Trinamool Congress was the first Party to send its high-level delegation, led by our Rajya Sabha leader Shri Derek O'Brien, to Hyderabad soon after the tragic death of Rohit not only to ventilate our anguish and agony, but also to express our solidarity with the students and the youth demanding justice.

Sir, more so, because we cannot alienate 31 crores of our people from the mainstream of our society for any reason whatsoever, the cruelty which was inflicted upon Rohit Vemula

[Shri Sukhendu Sekhar Roy]

must not be repeated and the caste discrimination must come to an end once and for all and all the culprits, who are directly or indirectly responsible for the tragic end of Rohit's life, must be brought to book. Sir, as far as the incident that took place at the Jawaharlal Nehru University is concerned, the admitted position is that a commemorative function to observe the death anniversary of a hard core terrorist, who was executed pursuant to court's order, was organized in the name of cultural evening on the 9th February, 2016 at the Jawaharlal Nehru University when anti-India slogans to glorify the deadly terrorists, who were instrumental in attacking the Indian Parliament and elsewhere, were reportedly raised. The main accused has, of course, denied his involvement in the incident and condemned the act of anti-national activities. But the question is why the permission for organizing the programme was accorded knowing it full well that such commemorative function was also held in the campus twice in succession soon after the execution of the terrorists following the Supreme Court verdict. Was there any intelligence failure? Why was the permission withdrawn at the last moment and at whose behest? It is reported that some outsiders and noted separatists thronged the campus on the fateful evening and raised slogan and posters glorifying the terrorists since executed and also demanding *azadi* or freedom for Kashmir and right to secede from India. While this is extremely deplorable, the question arises as to why no preventive measure could be initiated by the Government or the authorities concerned by discussing it with the university authorities and the leaders of the students' union and how the separatist elements from outside the campus were allowed to enter and resort to anti-national acts. The Government owes an answer to this august House.

Sir, as soon as the videos of 9/2 incident went viral, accusations and counter-accusations reached its ugliest form both in the electronic media and the print media as also in the social and anti-social websites. When it was incumbent upon all the political parties and other stakeholders to maintain absolute restraint at the outset to defuse the tension, it was seen that there was a rat race among some political parties to take credit, this way or that way, by supporting or not supporting such an ugly incident. Many of our leaders jumped into the fray for reaching the media in a bid to adding fuel to the fire, knowingly or unknowingly. Even a very senior functionary of the Government acted irresponsibly by spreading some information on twitter which was later proved to be baseless.

Sir. Kolkata had to face the immediate effect of the Jawaharlal Nehru University incident. But our Government in West Bengal dealt with the situation in a diligent manner

6.00 P.M.

which resulted in restoration of peace and tranquillity. Our party workers also avoided all sorts of provocations under the instructions of our beloved leader, Ms. Mamata Banerjee.

Sir, while we condemn all acts of anti-national activities wherever they may take place in the country, we decry any attempt to brand anyone as anti-national who is otherwise not involved in such activities. Administrative excess to curb a dissenting voice is deplorable as its goes against our constitutional safeguards. Similarly, the attack on journalists at Patiala House Court shows the worst form of brutality inasmuch as it was resorted to by a section of advocates who are otherwise duty bound to defend the law and not to take the law in their own hands.

Sir, there are reports that a number of video and audio tapes were tailored and background of some of the videos were also doctored. Now the question is as to who doctored the video and audio tapes. The Government must come forward with all information to this august House.

Sir, so far as the issues of sedition and Section 124A of the Indian Penal Code are concerned, as was explained by the hon. Leader of the House, I would like to add a few words to that. The Section was not in the original Act of 1860. but it was incorporated later on in 1870 by the then British Government actually to punish our freedom fighters, to curb the voice of our media and intellectuals. Sir, the word 'sedition' was first interpreted in the case of Queen Empress *versus* Bal Gangadhar Tilak in the year 1897 by the Privy Council. Even Mahatma Gandhi was not spared. He was also booked under this Section 124A which led Mahatma Gandhi to say, and I quote, "Affection cannot be manufactured or regulated by the law. If one has no affection for a person, one should be free to give the fullest expression to his disaffection so long as he does not contemplate, promote or incite violence." Our Supreme Court, in a plethora of cases, has also ruled in that direction. Therefore, while determining the elements of disaffection to the Government or the nation, utmost care and restraint is needed by the law enforcing authorities. But, this Section 124A has been mis-utilised both by the colonial rulers and the successive Governments in free India to throttle the voice of dissent or disaffection which must not be followed by the present Government.

In England, since 2010, the sedition law is restricted against non-citizens. In the USA, an identical provision of sedition in the Smith Act has allowed to be confined now to the military only. Therefore, it is high time that we should also have a relook at Section 124A of IPC to avoid misuse and all sorts of harassment even though we sincerely believe that liberty cannot be enjoyed as a licence.

[Shri Sukhendu Sekhar Roy]

Sir, I never cross the time limit, but today is a special day. Our nationalism is the principle of the majority of our countrymen, but ultra-nationalism, under no circumstances, is accepted. Similarly, dissension is one of the guiding factors of our liberal democracy, but ultra-leftism has always been rejected by our people. This is why, a particular political party, which denounced Indian independence and used to burn out copies of our Constitution and National Flag on the streets of various towns and cities of India raising the slogan, 'यह आज़ादी झूठी है', and accusing India as the invader during the Sino-Indian War in 1962, has been compelled to accept our political mainstream and now, they have become a part of our political system.

Sir, there is another party, which after experiencing defeats after defeats in States after States and also at the national level, reducing itself to a microscopic minority, is now trying to fish in troubled waters or any stream of water so that it can get back its monopoly to rule and ruin the country. Somewhere it joins hands with fissiparous elements and forging unholy alliances with a party which not only butchered thousands of its workers but all along worked against the unity and integrity of the country.

Sir, my final words would be that then there is rise of the third party, which propagates jingoism and conveniently shakes off the tenets of patriotism, what the nation today wants more and more is not jingoism but patriotism. We are committed to our motherland to protect our national integrity at any cost. Sir, with your kind permission, I want to conclude with the words of Tagore. I quote, "O my country's soil, I bow my head to you. On you is spread the universe encompassing universal mother's sari's end."

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Thank you very much. Now, Mr. Narendra Kumar Kashyap.

श्री नरेन्द्र कुमार कश्यप (उत्तर प्रदेश): उपसभाध्यक्ष महोदय, कल हमारी पार्टी की नेता आदरणीय बहन कुमारी मायावती जी ने स्थगन प्रस्ताव के माध्यम से हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय में रोहित वेमुला की आत्महत्या के संबंध में बहुत गंभीर विषय को उठाया था और विषय की गंभीरता को सदन में बहुत सारे सदस्यों ने महसूस भी किया था चूंकि यह मामला एक दलित छात्र की आत्महत्या से जुड़ा हुआ है और सरकार की तरफ से यह इंडिकेशन मिल रहा था कि इस घटना की जांच के लिए न्यायिक जांच आयोग बनाया गया है। हमारी पार्टी की तरफ से, हमारी नेता ने यह मांग की थी कि उस न्यायिक जांच आयोग में एक सदस्य शेड्यूल्ड कास्ट का भी होना चाहिए, ताकि उस दलित के परिवार को न्याय मिल सके। आज विपक्ष और सत्ताधारी पार्टी की तरफ से कई माननीय सदस्यों ने अपने विचार रखे हैं, अपना भाषण किया है, लेकिन किसी भी सत्ताधारी पार्टी के सदस्य ने इस संबंध में ...**(व्यवधान)**...

SHRI PRAMOD TIWARI: It is already 6 o'clock. We are sitting till what time.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): The BAC has already decided to sit beyond 6'o clock whenever needed. So, Kashyapji please continue.

श्री नरेन्द्र कुमार कश्यपः किसी भी सत्ताधारी पार्टी के सदस्य ने even नेता सदन ने भी इस संबंध में अपना कोई वक्तव्य नहीं दिया, जिसके संबंध में कल हमारी नेता ने इस मुद्दे पर अपनी बात रखी थी।

उपसभाध्यक्ष महोदय, हमारी पार्टी ने, हमारी नेता ने कल भी यह आशंका व्यक्त की थी कि शायद सरकार हमारी इस मांग पर सकारात्मक विचार नहीं कर रही है। हमें पीठ से आश्वासन मिला था, उपसभापति महोदय जी ने आश्वासन दिया था कि हम सत्ताधारी दल के लोगों से कहेंगे कि आपकी मांग पर सकारात्मक विचार करें, लेकिन अभी तक सदन में जो डिस्कशन हुआ है, हमें नहीं लगा कि सरकार इस पर गंभीरता से अभी तक विचार कर रही है। मैं उम्मीद करता हूं कि आज इस सदन में हमारी पार्टी की नेता आदरणीय बहन कुमारी मायावती जी के उस सवाल का जवाब जरूर मिलेगा।

उपसभाध्यक्ष महोदय, रोहित की आत्महत्या करोड़ों दलितों के सम्मान के साथ खिलवाड़ है। देश के 25 करोड़ दलितों में आज भय का वातावरण पैदा हो गया है। उपसभाध्यक्ष महोदय, यह कोई पहली घटना नहीं है। इससे पहले भी 9 दलित छात्र आत्महत्या कर चुके हैं। उनके केसों में भी कोई बड़ा फैसला अभी तक नहीं आया है। देश की सरकारों ने दलितों की इन घटनाओं को शायद गंभीरता से नहीं लिया। मैं सत्ताधारी लोगों को बताना चाहता हूं कि अगर गंभीरता से लिया होता, तो पिछले 10 सालों में पौने दो लाख दलितों पर अत्याचार नहीं होते। जो पौने दो लाख दलितों पर अत्याचार हुए हैं, अभी तक उन केसों के फैसले भी नहीं आए हैं।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार से यह कहना चाहता हूं कि लगातार दलित और आदिवासी लोगों पर होने वाले हमले शायद किसी षडयंत्र का हिस्या न हों। यह भी जांच का विषय और विचार का प्रश्न हो सकता है। चूंकि जिस तरह से रोहित ने अखबारों में बयान दिया, उसमें उसने लिखा कि, "मेरा दलित परिवार में जन्म लेना एक घातक दुर्घटना थी, जिसने लगातार उसका पीछा किया और जिस कारण उसकी जिंदगी की रचनात्मक संभवनाएं फलीभूत नहीं हो सकी हैं। जय हिंद!" महोदय, रोहित ने आशंका व्यक्त की थी कि क्या दलित परिवार में पैदा होना मेरे लिए अभिशाप तो नहीं हो गया? मैं खास तौर से सत्ताधारी पार्टी के नेताओं को कहना चाहता हूं कि यही चिंता बाबा साहेब अम्बेडकर साहब की थी, यही वेदना बाबा साहेब अम्बेडकर की थी जब उन्हें भी उस जमाने में यह कहना पड़ा था, जब जातिवाद का माहौल देश में हुआ करता था, जाति व धर्म के नाम पर उत्पीड़न हुआ करता था, डा. अम्बेडकर साहब ने भी कहा था। खास तौर से भारतीय जनता पार्टी के बड़े नेता और उनकी पार्टी से जुड़ तमाम संगठनों को मैं कहना चाहता हूं, डा. अम्बेडकर साहब ने कहा था कि हिंदू धर्म में पैदा होना मेरे वश में नहीं था, लेकिन मैं हिंदू धर्म में रहकर नहीं मरूंगा। यह मेरे वश में है। अगर ऐसी बातें बाबा साहेब डा. अम्बेडकर ने कहीं, तो आखिर कोई-न-कोई वेदना जरूर रही होगी, इसके पीछे कोई-न-कोई कारण जरूर रहा होगा। महोदय, इसलिए मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि 69 वर्षों की आजादी में आज भी दलित समुदाय अपने आपको असुरक्षित और अपमानित

[श्री नरेन्द्र कुमार कश्यप]

महसूस कर रहा है। सरकार को इस बात को जिम्मेदारी के साथ लेना चाहिए। दलित छात्र को स्कॉलरशिप नहीं मिलती, फेलोशिप नहीं मिलती। वह इसलिए आत्महत्या कर रहा है कि एबीवीपी के नेता उसे pressurise कर रहे हैं, उसे अम्बेडकरवादी होने की सज़ा दे रहे हैं। अगर अम्बेडकरवादी होना कोई सज़ा का कारण है तो मैं समझता हूं कि यह कारण बिल्कुल उचित नहीं है। रोहित अम्बेडकर स्टूडेंट्स एसोसिएशन के साथ जुड़े थे। वे इस संगठन के माध्यम से संघर्ष करते थे। एबीवीपी की यही शिकायत थी, यही शिकायत और तमाम सामाजिक संगठनों की थी। महोदय, अगर अम्बेडकर साहेब के नाम की किसी संस्था से जुड़ना कोई जुल्म है, तो मैं समझता हूं कि यह बात इस देश में किसी कीमत पर भी कबूल की जाने वाली नहीं है। यह बहुत तकलीफ का विषय है।

आदरणीय गृह मंत्री जी यहां विराजमान हैं। महोदय, यह घटना 18 जनवरी को हुई। उसी दिन एफआईआर होती है। महोदय, 6 लोगों के खिलाफ नामजद एफआईआर है और आज 37 दिन गुजर गए हैं और इन 37 दिनों में रोहित की आत्म हत्या के सिलसिले में जिन 6 लोगों को अभियुक्त बनाया गया था, क्या उनके खिलाफ सरकार ने कोई कार्यवाही करने की कोशिश की है? क्या उनके खिलाफ किसी कानूनी पहलू पर सरकार आगे बढ़ी है? महोदय, इस मुकदमे में 306 में एसीएसटी एक्ट लगा है। इस केस में बहुत सारे लोगों ने गलतफहमी पैदा करने के लिए बहुत सारी बातें कही हैं। किसी ने कहा कि वह तो शेड्यूल्ड कास्ट ही नहीं है। इस तरह के सवाल उठाए गए हैं। उपसभाध्यक्ष महोदय, अगर वह शेड्यूल्ड कास्ट नहीं होता तो क्या एफआईआर एससीएसटी एक्ट में होती? क्या उसके मामले को दलित एक्ट में दर्ज़ किया जाता? इसलिए मैं अपनी दूसरी मांग आपके सामने रखना चाहता हूं। मेरी पहली मांग बहुजन समाज पार्टी के माध्यम से है कि जो जांच आयोग बना है, उसमें शेड्यूल्ड कास्ट के व्यक्ति का appointment होना बहुत जरूरी है, ताकि दलितों में न्याय के प्रति विश्वास बढ़े। महोदय, मेरा दूसरा निवेदन यह भी है कि जिन 6 आरोपियों को एफआईआर में नामजद किया गया है, सरकार उनके खिलाफ क्या कार्रवाही करने वाली है? इस पर भी कोई न कोई जवाब इसलिए आना चाहिए कि सरकार उनके खिलाफ क्या कार्रवाई करने वाली है। अभी रीसेंटली जो जवाहरलाल नेहरू केन्द्रीय विश्वविद्यालय में 9 तारीख की घटना है, तो इस पर तुरन्त गिरफ्तारी हो जाती है। हमें इस पर कोई एतराज नहीं है। कोई देशद्रोह का मुलज़िम है, आप उसके खिलाफ कार्रवाई करें, तो हमारी पार्टी इस पर एतराज़ नहीं करती है, लेकिन एक केस वह है, जो हैदराबाद में 37 दिन पहले हुआ, उसमें एक भी मुलज़िम गिरफ्तार नहीं हुआ। एक केस यह है, जो 9 फरवरी को हुआ, उसमें गिरफ्तारियां हो रही हैं और देशद्रोह के मुकदमें लग रहे हैं। ठीक है, कानून जो कहता है, आप वह कार्रवाई करिए। इस मुद्दे पर भी हमारी नेता आदरणीय बहन कुमारी मायावती जी ने साफतौर से देश की जनता के सामने कहा था कि सरकार देख ले, कहीं इसमें कोई षडयंत्र तो नहीं है, कोई साज़िश तो नहीं है। करने वाला कोई और हो और फंसने वाला कोई और तो नहीं है। मैं यह बात इस आधार पर कह रहा हूं कि उस कन्हैया कुमार ने दिल्ली के पुलिस कमिश्नर के नाम जो अपना बयान व चिट्ठी दी थी, मैं उसको एक लाइन में quote करना चाहता हूं;

'मैं भारत के संविधान में विश्वास करता हूं तथा मेरा यह सपना है कि इसकी प्रस्तावना को अक्षरशः लागू करने में हर संभव सहयोग करता हूं। मैं भारत की एकता और अखंडकता को मानता हूं। इसके विपरीत किसी भी संवैधानिक कार्यों का समर्थन नहीं करता हूं।'

इस तरह देश की एकता के लिए उन्होंने अपना बयान दिया। इसी के आधार पर जब उनकी गिरफ्तारी हुई, तो दिल्ली के पुलिस कमिश्नर कहते हैं कि हम कन्हैया कुमार की बेल का विरोध नहीं करेंगे। कन्हैया कुमार की स्टेटमेंट के बाद, कन्हैया कुमार की सच्चाई के बाद जब दिल्ली कमिश्नर की आत्मा जागी होगी, तो उन्होंने कहा कि हम इसका विरोध नहीं करेंगे। ...**(समय की घंटी)**... फिर भी मैं यह कहना चाहता हूं कि बिना ठोस सुबूत के, बिना ठोस गवाहों के, किसी भी व्यक्ति को मुलज़िम बनाना मानव अधिकार के खिलाफ है। इसलिए महोदय, मैं आपके माध्यम से यह अपील करूंगा कि राष्ट्रद्रोह का मामला बहुत बड़ा है, बहुत गंभीर है। इसके लिए हमारी पार्टी देश के सम्मान के लिए, देश की एकता के लिए सरकार के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए तैयार है, लेकिन यदि निर्दोष लोग राष्ट्रद्रोह के केस में फंसेंगे, तो हम लोग इसको बरदाश्त नहीं करेंगे, देश बरदाश्त नहीं करेगा। इसलिए मैं अपील करूंगा कि इस गंभीर मामले में जल्दबाजी न करें। सत्ता आपके हाथ में है, पुलिस आपके हाथ में है, आप निष्पक्ष जांच कराएं। जो दोषी है, उसको सजा मिले और जो निर्दोष है, उसको सम्मान से जीने का मौका मिले। आपने मुझे बोलने का मौका दिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Thank you, Mr. Kashyap. Now, Shri Bhupinder Singh.

श्री भूपिंदर सिंह (ओडिशा): उपसभाध्यक्ष महोदय, यह बहुत गंभीर बात है। मैंने पहले कुछ मुद्दे उठाए थे। होम मिनिस्टर साहब ने उनमें से एक का जवाब दिया कि दिल्ली में पुलिस के कितने लोग रखे हैं, लेकिन क्या यह सत्य नहीं है कि आईबी ने बताया था कि 9 फरवरी को जो कांफ्रेंस होने जा रही है, उसमें कुछ ऐसे नारे आएंगे? क्या उसमें ऐसी बात आई थी या नहीं? मैं इसका जवाब चाहता हूं।

सर, दूसरी बात यह है कि जो रोहित की बात है, उसमें आज इतनी गंभीर बात आ गई है, अगर यह सच्चाई है, प्रतिपक्ष के नेता ने बताया कि 3 दिसम्बर से लेकर 18 दिसम्बर तक सरकार की तरफ से, डिपार्टमेंट की तरफ से कहा जा रहा है कि anti-national activities are going on in the Central University of Hyderabad तो जब आपको मालूम था कि यहां anti-national activities हो रही हैं, तो इस देश में सरकार चार महीने से क्या कर रही थी? आज रोहित के चले जाने के बाद, क्या हम यह समझ लें कि सरकार हमें यह समझाएगी कि वहां anti-national activities नहीं हो रही हैं? हमें इस बारे में बताया जाए। सर, इतिहास साक्षी है, जब भी कोई परिवतन आया है तो उसके पीछे हमेशा से युवा रहे हैं। जेएनयू में जो घटना घटी है, जो नारे देश के विरुद्ध लगाए गए हैं, उनके खिलाफ हमारी बीजू (जनता दल) पार्टी हर वक्त खड़ी है। ऐसे तत्व जिन्होंने इस महान व पवित्र सदन पार्लियामेंट के ऊपर अटैक करने की कोशिश की है, ऐसे तत्व अगर देशद्रोह के नारे लगाते हैं,... अगर कहीं पर भी हमारी माँ के against में कोई भी बात होती है, तो हम उसके support में नहीं हैं, हमारी पार्टी उसके support में नहीं है। सरकार उसके ऊपर एक्शन ले। सर, जो लोग टोपी लगा कर आए थे, वे लोग कौन थे? आज तक उनका पता क्यों नहीं चला? दिल्ली में जेएनयू के अन्दर जो मुँह ढक कर आए थे, वे लोग कौन हैं, इसका भी अभी तक पता नहीं चला, तो इससे बड़ी खेद की बात और क्या हो सकती है? सर, यहां सदस्य जो बात करते हैं, वह हम बना कर नहीं करते हैं। हमारा धर्म है, हम इस पवित्र गृह में यही बात करने के लिए आए हैं कि देश के लोग बाहर क्या चर्चा कर रहे हैं। Public opinion क्या है, public perception क्या है, सरकार इसके ऊपर थोड़ा गौर करे। लोकतंत्र में public perception का

[श्री नरेन्द्र कुमार कश्यप]

सम्मान करना हरेक सरकार का सबसे बड़ा कर्तव्य है। इस पार्लियामेंट में, राज्य सभा हो या लोक सभा, यहां हर सदस्य का धर्म है कि वे यहां आपके माध्यम से बाहर की चर्चा को सरकार की नजर में लाएं और सरकार उसका ठीक जवाब, ठोस जवाब दे। अगर उसका जवाब भी नहीं मिलता है, तो यह बड़े दुख और खेद की बात है।

सर, मैं होम मिनिस्टर साहब को याद दिलाना चाहता हूं कि यहां सरकार बनने के बाद पहले दिन जब मैं होम मिनिस्ट्री के ऊपर बात कर रहा था, उस रोज मैंने कहा था कि मैं कोई फिल्म की बात नहीं कर रहा हूं। मैंने खुद अपने जीवन में उसको निभाया है। मैं भी कॉलेज यूनियन प्रेसिडेंट रहा हूं। मैं लाला लाजपत राय कॉलेज का प्रेसिडेंट रहा, यूनिवर्सिटी में भी प्रेसिडेंट रहा। अगर एक बार कन्हैया या उसके साथी, रामा नागा की बात सुन ली जाती, तो अच्छा होता। अगर कल यह प्रमाणित हो जाए कि वे लोग इसके पीछे नहीं थे, तो क्या यह पार्लियामेंट या इस देश का कोई आईन उनका वह सम्मान फिर से दे सकता है? एक छोटी सी गलती के कारण एक नौजवान की लाइफ को suppress करने का काम न किया जाए। ऐसा न हो कि कल वे वहाँ से दोषमुक्त होकर निकलें और अगर उनमें से कोई रोहित जैसी suicide करता है, तो उसके लिए कौन उत्तरदायी होगा? आपके माध्यम से मैं आज इस गृह में उम्मीद करता हूं कि होम मिनिस्टर साहब इसका जवाब जरूर देंगे।

सर, ये जो घटनाएं घटी हैं, मैंने कहा था कि if politics of the day decides, there will be no such incident in any university of the country. I have said this time and again in this House. इसको राजनीति से ऊपर रखा जाए। वहां यह कैसे हुआ कि आज तक यह पता नहीं चला कि वहां पर कौन लोग थे? वे pamphlets जिन्होंने छापे थे, वे किस प्रेस में छपे थे, वे कहां से आए थे?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Mr. Bhupinder Singh, kindly listen to me.

SHRI BHUPINDER SINGH: Sir, I have given notice...

THE VICE CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Listen to me. Your Party has been given four minutes. There are two speakers from your Party. You have spoken for five minutes.

SHRI BHUPINDER SINGH: Sir, please give some time to my colleague, Shri Parida. I am not touching the Hyderabad issue. He will talk about Hyderabad in detail.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): But he needs time. Please conclude.

श्री भुपिंदर सिंहः सर, मैं यह बात इसीलिए रखना चाहता हूं कि अभी तक जो बात हुई है, उसमें यह जानकारी मिली है कि रामा नागा एक Scheduled Caste लड़का है। वह लड़का मल्कानगिरी, कोरापुट डिस्ट्रिक्ट, ओडिशा से आया है। उसमें सभी प्रकार के सपोर्ट करने की बात कही गई है। इस

बात को ऐसा बना कर ऐसे लड़कों के विरोध में ऐसा कोई कदम न उठाया जाए। Investigation के नाम पर अभी तक हमें मालूम नहीं चला है कि वह pamphlet कहां से आया था। यूनिवर्सिटी अथॉरिटी के अनुसार पिछले तीन साल से वहां शहीद दिवस मनाया जा रहा था। पिछले दिनों इसके ऊपर कदम क्यों नहीं उठाया गया? अब यह जो घटना घटी है, इसके लिए लास्ट मिनट में किसका फोन आया था, किसने कहा कि वहां यह कार्यक्रम होने जा रहा है? यह मेरी जानकारी में है कि उससे पहले आईबी ने रिपोर्ट किया था कि वहां ऐसी घटना घटने जा रही है। ...**(समय की घंटी)**... उसके बावजूद भी सरकार चुप्पी मार कर बैठी रही। इसलिए मैं उम्मीद करूंगा कि हमने यहां जो सवाल उठाए हैं, उनका सही-सही जवाब हमें मिलना चाहिए और किसी भी innocent को पनिश न किया जाए। ऐसा जवाब न हो। सर, मैंने कहा था कि अगर यूनिफॉर्म एजुकेशन पॉलिसी। ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): You have made your point. It is enough.

श्री भूपिंदर सिंहः सर, लास्ट प्वॉइंट। अगर हम लोग सारे देश के अंदर यूनिफार्म एजुकेशन पॉलिसी बना दें और उस एजुकेशन सिलेबस के अंदर 15 अगस्त को, 26 जनवरी, को महात्मा गांधी के जन्मदिन को, अम्बेडकर के जन्मदिन को, चाचा नेहरू के जन्मदिन को, इंदिरा गांधी के सेक्रिफाइस डे को बताया जाए, तो आप देखेंगे कि ऐसी घटनाएं नहीं होंगी। वही nationalism और patriotism की जो कमी है, उसको सिलेबस में लाया जाए।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Please wind up.

श्री भूपिंदर सिंहः सर, कल मेरा एक स्पेशल मेंशन है, यहां पर मैंने कहा है - Uniform Civil Code is important for this country and Uniform Education Policy is the core of the day that the Government has to insert. अगर ऐसी शिक्षा मिल जाए, तो भारत के विरुद्ध भारत की भूमि में और दिल्ली जैसी जगह में भारत के टुकड़े करने के बारे में बात करने की सोच भी नहीं सकेगा। इसलिए ऐसी एक शिक्षा नीति बनाई जाए, जिसमें फूट-फूट कर patriotism और nationalism की बात आए।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Thank you. Now, the floor is for Mr. Tripathi.

SHRI D.P. TRIPATHI (Maharashtra): Thank you, Sir. Since I come from the hub of so-called 'anti-national activities', that is, Jawaharlal Nehru University, I would begin my speech with two lines of a poem from hon. Shri Atal Bihari Vajpayee. Atalji said, "No one becomes great with a petty mind. No one can stand on broken legs." Why I say this and why I begin with this, I will explain it a little later. The Leader of the House, my friend Arun Jaitleyji, has made my task easier. While entirely agreeing with him that hate speech can never be free speech, I have to state certain facts because there are certain similarities in what happened in the Hyderabad Central University and where Rohith Vemula was forced to commit suicide which, according to me, is an institutionalized murder and nothing

[Shri D.P. Tripathi]

else. A Minister in the Union Council writes — where my disagreement begins with the Treasury Benches — that the whole University, that is, Central University of Hyderabad, has become a den of anti-national activities, and JNU, that creates the atmosphere. My point is, while agreeing entirely for national integration, for the sovereignty of India, the problem begins when an atmosphere of fear, hate and discord is created. You call that University den of anti-national activities! JNU becomes a hub of anti-national activities! I have already talked about the Patiala House Court vandalism, I have already talked about what the Delhi MLA did. No action has been taken against him. The BJP has not taken any action against him. The Government has also not taken any action. Then, what another BJP MLA from Rajasthan has said about JNU is filthy and falsehood. It is anti-women, and BJP, I am sure, will not take any action. What happened yesterday in Delhi in ABVP's rally? The President of Delhi University Students' Union and the ABVP activists were hailed by the Leader of the House, the illustrious President of the Delhi University Students' Union, Shri Jaitley. He said in the rally, "We will enter their campuses and shoot the traitors." Is this not a hate speech? Who is making these hate speeches throughout the country? And what is happening in those demonstrations? That is what I am saying. We have come to a stage in this country where patriotism is not merely being taught by gangsters, but these gangsters are also garlanded. Who are garlanding these gangsters? You have to find out. That is why, when the BJP form of patriotism is talked about, I am reminded about Samuel Johnson who said, "Patriotism is the last refuge of a scoundrel." Now I will come to the point as to why this is happening. Where is the blunder of the Government? If you take action against any anti-national activity, we are all with you, with the Government. But in the name of 9th February happening, if you brand the entire institution as anti-national, that is something which is not acceptable. And let me tell you, it is not merely members of various political parties, say, Shri Sitaram Yechury or the Leader of the Opposition or Shri Anand Sharma, Shri K.C. Tyagi or Shri Javed Ali, who are criticising the Government. Forty Universities of the world, including Yale, Columbia, California, Harvard and Cambridge have criticised the actions of our Government in Jawaharlal Nehru University. Be it Noam Chomsky or I am quoting another scholar, Diana Eck, who is the Professor of Comparative Religion and Indian Studies at Harvard. She says and I quote her: "The perception that the Indian State is increasingly resorting to intervention to suppress views that it finds threatening is threatening itself."

This is a communication, a long communication, to the Vice-Chancellor of JNU. Therefore, she says: "Don't acquiesce in this move to undermine a great University like the JNU". JNU is not merely a centre of internationally acclaimed academic excellence. It

has been a centre of tolerance also. I want to inform this House, with a sense of pride, — I have been the President of the Students' Union — of what is described in books. I am not saying this, the books are saying, "The golden period of the JNU". Though it was a period of struggle, most of my time, as President of Students' Union, was spent in the Tihar Jail along with the Leader of the House fighting the Emergency. I was the President of the Students' Union from 1975 to 1977 April, and Shri Sitaram Yechury succeeded me as the President of the Students' Union. Therefore, I want to bring out two or three points about that University. JNU is the only University in the world where Students' Union elections are held by students themselves. Students constitute the Election Commission. There have been defeats and victories by one vote. But the views of the Election Commission, who are students; have always been accepted. Money power and muscle power play no role in JNU politics and elections. You should admire such an Institutition and not call it anti-national, like what the BJP MLA is calling or like how a Member of Parliament of the BJP has filed an FIR against the JNU. That is why I am saying. This whole atmosphere of hate will create hate only. It will not help. So, reconciliation is the need of the day.

Now, I am not going to repeat the points which have been made by other speakers because I don't want to waste the time of this august House. But I must state certain facts about the JNU. That is the only University in India, and I am proud of it, where the struggle against the Emergency continued through the Emergency era right from day one to the last day. Now why is this University being attacked? Why is there the charge of sedition? Where has the Government blundered? Why was there the charge of sedition against Kanhaiya Kumar, who is completely innocent, and who belongs to a mainstream political party? Why was that done? That is being done and all kinds of abusive language is used about that great University by Members and supporters of the Bharatiya Janata Party. The reason is very simple and I must state with all my conviction in this august House. Once, ABVP activist was also elected as President of Students Union in 2001 and the whole University accepted it. There was no *maar-peet* with him, but, by and large, Jawaharlal Nehru University has always opposed the ideology of Communalism and Fascism. It has stood for democratic values with all valour. That is why that Institution is attacked. Ideologically today, the Treasury Benches are using the 9th February incident to malign the whole University. How can you call that Institution 'a hub of anti-nationals'?

उपसभाध्यक्ष जी, अब मैं आखिर में आज थोड़ा सा समय लूंगा, क्योंकि यह जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय का मामला है। मैं कभी ज्यादा समय नहीं लेता।

मैं कहना चाहूंगा कि इन कारणों को आप देखने की कोशिश कीजिए। मेरा आपसे निवेदन है कि कम से कम अपनी पार्टी के लोगों को और उन तमाम संगठनों को, जो लोगों को जान से मारने की बात कह रहे हैं, गोली चलाने की बात कह रहे हैं, कैम्पस में घुस कर देशद्रोहियों को मारेंगे, मंच से ऐसे

[Shri D.P. Tripathi]

भाषण हो रहे हैं, उनको मना कीजिए। आप उनको सिर्फ मना ही मत कीजिए बल्कि उनको सज़ा भी दीजिए, क्योंकि राष्ट्रीय सद्भाव, राष्ट्रीय एकता और समरसता तभी रहेगी जब हम दुर्भावना और नफरत के खिलाफ लड़ेंगे। मैं पूरी विनम्रता और विनय के साथ कहना चाहता हूं कि शासक दल का आज का जो व्यवहार है, वह व्यवहार मुझे यह कहने के लिए मजबूर करता है कि जब भारतीय जनता पार्टी राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रवाद की बात करती है, तो इन व्यवहारों के कारण मुझे ऐसा लगता है कि कालनेमी हनुमान चालीसा पढ़ रहा है। ...**(व्यवधान)**... आपने विचार अभिव्यक्ति की बात की। मैं उसमें एक ही बात कहना चाहता हूं। मैं आपका ज्यादा समय लेना नहीं चाहता, लेकिन यह कहना चाहूंगा कि विचार अभिव्यक्ति पर जो सबसे जरूरी बात है कि आप विभिन्न दलों के लोगों को, विभिन्न विचार के लोगों को, नेता सदन ने कहा, हम पूरी मान्यता देते हैं। तो यह मान्यता कैसे होगी, जब जगह-जगह उन लोगों पर हमले होंगे? जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से जुड़ी कुछ घटनाएं मैं आपको बताना चाहूंगा, जो समाचार-पत्रों में आ चुके हैं कि उसके बाहर लोग हर क्षेत्र में विश्वविद्यालय के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं और वहां तमाम जो मकान मालिक हैं, उनको कह रहे हैं कि जेएनयू वालों को किरायेदार मत बनाओ। ऐसा अखबारों में छपा है, यह मैं नहीं कह रहा हूं। तो यह सब इसलिए हो रहा है कि देश में एक नफरत का और भय का माहौल बनाया जा रहा है। उससे देश बिखराव की तरफ बढ़ेगा। मैं आपसे कहना चाहूंगा कि देश संशय नहीं, विश्वास से चलता है, बिखराव नहीं, एकता से चलता है, इसलिए उस एकता को बनाने के लिए आवश्यक है कि आप उस छात्र शक्ति का भी अपमान मत कीजिए। नेता सदन और बहुत से लोग जो शासक दल में हैं, इधर बैठे हैं, सबको पता है कि नौजवानों और छात्रों की शक्ति क्या होती है। इसलिए मैं बहुत बातें न करते हुए आखिर में इतना ही कहूंगा कि सरकारों को, जैसा नेता प्रतिपक्ष ने कहा था, कि फ्रांस में, यूरोप में 1968 में क्या हुआ था, वहां भी जाने की जरूरत नहीं है। ...**(समय की घंटी)**... 1975-77 में भारत में क्या हुआ था, जिसमें नेता सदन स्वयं शामिल थे, उसको जानिए। तो छात्र शक्ति और नौजवानों की शक्ति, जो आज भारत की सबसे बड़ी शक्ति है, हमारी 65 फीसदी से ज्यादा आबादी नौजवानों की आबादी है, 35 वर्ष की उम्र से नीचे वालों की आबादी है, तो यह जो नौजवानों की ताकत दुनिया में भारत की सबसे बड़ी ताकत है, इसीलिए मैं आखिर में कहना चाहूंगा, क्योंकि आपको आज़ादी पर बड़ी आपत्ति है, तो सिर्फ आज़ादी भूख और बेरोज़गारी से ही नहीं, बल्कि आज़ादी सरकारी अत्याचारों से भी चाहिए। ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Please conclude.

श्री डी.पी. त्रिपाठी: सर, मैं आखिरी बात कह रहा हूं। ...**(व्यवधान)**... अब मैं बस आखिरी बात कह कर खत्म कर रहा हूं कि याद रखिएगा कि —

"संघर्षों की छाया में असली आज़ादी पलती है।
इतिहास उधर झुक जाता है,
जिस ओर जवानी चलती है।"

धन्यवाद।

PROF. MRINAL MIRI (Nominated): Thank you Mr. Vice-Chairman, Sir. I don't know how much time I have.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): You have five minutes.

PROF. MRINAL MIRI: I will finish it before that.

Allow me, Sir, first of all, to lend my voice to the many voices of condemnation of the horrible slogans raised at the JNU meeting and the totally unacceptable banners displayed.

Having said that, I would like to say a word about the idea of a nation and nationalism. There is a tendency, to my mind, fairly dangerous, to conflate, even equate, the idea of the State with the idea of the nation. My relationship with the State is primarily a contractual one. The State provides its citizens with infrastructure to take care of their basic human needs, provide internal and external security to the country and enable its citizens to pursue their life's goals in a competitive modern world. And, it is the contractual responsibility of the citizens, in turn, to help sustain the State by paying taxes and abiding dy the laws of the State.

The idea of a nation is much larger than the idea of the State. There is a distinct ethical edge to my relationship to the nation. My ties with the nation are framed by emotions such as love, gratitude, a strong sense of mutuality and belonging, and respect which make sense only within an ethical universe. Such emotions need to be fostered and nurtured; they do not come readymade. This is why we say, quite correctly, that we are still in the process of building our nation. The basic requirement of this process is an authentic — as opposed to illusory — understanding of the reality of India as it is today and then seek ways of effective but extraordinarily sensitive and 'mindful', a term used by Buddha, ways of fostering and nurturing the emotions that I have mentioned.

My own sense is that much of the turmoil concerning 'nationalism' and its proper articulation is a consequence of the conflation of the idea of the State with that of a nation and the intrusion of party politics into the debate. We cannot have any deep understanding of the nation unless we resolutely put the nation above party politics and the very limited idea of power that is associated with such politics.

For the JNU crisis, the university administration must take the blame for its lack of understanding of what a university is about. The police, likewise, must take the blame for its over-enthusiastic and unmindful handling of the situation, the political parties for the unseemly political turn that the crisis has taken and the media for its over-reaction. The nation is an incredibly valuable thing, and must be protected from forces such as these.

When Gandhi met Phizo, the Naga leader, he said to him — this may be folklore but, I think, it is a very, very instructive story. Gandhi said, 'I would like to think of your

[Prof. Mrinal Miri]

Naga country as my own just as I would like you to think of the whole of India as yours.' True nationalism must incorporate such sentiments of belongings as this. Thank you.

श्री संजय राउतः सर, हम यहां दो दिन से देशद्रोह और देशभक्ति की व्याख्या सुन रहे हैं। उसकी कोई व्याख्या नहीं होती है, कोई डेफिनेशन नहीं होती है। वह हमारी अंतरात्मा की आवाज होती है।

(उपसभापति महोदय *पीठासीन हुए)*

देश के राष्ट्रपति जी ने कल अपने अभिभाषण में कहा कि जो शहीद हुए हैं, जो देश के लिए मरे हैं, मिटे हैं, हमें उन सभी स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों का भारत बनाना है, लेकिन हम जिस तरह का माहौल देख रहे हैं, क्या हम उस तरह का देश बना पाए हैं? आज सरकार की स्थिरता की बात नहीं है, देश की स्थिरता की बात होनी चाहिए। मैं एक उदाहरण देना चाहता हूं, देशद्रोह की बात है। पाकिस्तान में हमारे क्रिकेटर विरोट कोहली के एक फैन ने उसकी फोटो लगा कर तिरंगा फहरा दिया, तो वहां की सरकार ने उस पर तुरंत कार्रवाई कर उसको राष्ट्रद्रोह घोषित किया और उसको गिरफ्तार कर लिया। वहां की पार्लियामेंट में चर्चा नहीं की कि उस लड़के ने देशद्रोह का अपराध किया है या नहीं किया है। उसने कोई पाकिस्तान के खिलाफ नारा नहीं दिया था या उसने हिन्दुस्तान के समर्थन में नारा नहीं दिया था। क्रिकेट था, खेल था, उसने अपने एक भारतीय खिलाड़ी का फोटो लगाया, लेकिन उसे राष्ट्रद्रोही घोषित किया और उसे जेल में बंद कर दिया गया। उसके ऊपर मुकदमा तक नहीं चल रहा है और हम यहां राष्ट्रद्रोह के ऊपर सिर्फ चर्चा कर रहे हैं। ...**(व्यवधान)**...

श्री ऑस्कर फर्नांडिस (कर्णाटक): भारत और पाकिस्तान में यही अंतर है। ...**(व्यवधान)**...

श्री संजय राउतः मैं आपको यही बताना चाहता हूं। ...**(व्यवधान)**...

श्री जावेद अली खानः जिसने लगाया, उसने उसी को पकड़ा, दूसरे को नहीं पकड़ा। ...**(व्यवधान)**...

† **جناب جاوید علی خان :** جس نے لگایا، اس نے اسی کو پکڑا، دوسرے کو نہیں پکڑا ۔(مداخلت).

श्री संजय राउतः मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि जो उसी पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे जेएनयू यूनिवर्सिटी में लगा रहे थे, आप उसके समर्थन में बोल रहे हैं। ...**(व्यवधान)**...

श्री बी.के. हरिप्रसाद (कर्णाटक): कोई समर्थन नहीं कर रहा है। ...**(व्यवधान)**...

श्री संजय राउतः समर्थन की बात नहीं है, जेएनयू में अफज़ल गुरु के समर्थन की बात की गई है। आप नारे देखिए, क्या है? "भारत की बरबादी तक जंग जारी रहेगी", भारत की बरबादी तक जंग जारी रहने की भाषा का इस्तेमाल पाकिस्तान करते आया है। अफज़ल के अरमानों को मंजिल तक पहुंचाने की भाषा का इस्तेमाल पाकिस्तान से हाफिज़ सईद करते आया है। यही भाषा का इस्तेमाल जेएनयू के लोगों ने किया है। ...**(व्यवधान)**... जेएनयू में जो हुआ है, उसका केन्द्र बिन्दु, उसका सेंटर प्वाइंट पाकिस्तान है और मैं यह मानता हूं कि पठानकोट एयरबेस पर जो हमला हुआ, वह भी है,

†Transliteration in Urdu script.

क्योंकि पठानकोट के हमले के बाद हाफिज़ सईद ने वहां से बोला था कि यह अफलज़ गुरु की फांसी का बदला है। यह हाफिज़ सईद का स्टेटमेंट था और उसके तुरंत बाद जेएनयू में अफज़ल गुरु की बरसी मनाई जाती है। हमारे एयरबेस पर हमला होता है। मुझे लगता है कि आप लोग जो कर रहे हैं, वह देश के हित में नहीं है। यह राजनीति का विषय नहीं है। राष्ट्रद्रोह की जब कोई बात सामने आती है, तब इस सदन में हम सबको एकसाथ मिलकर आवाज़ उठानी चाहिए। मैं पठानकोट के बारे में बात कर रहा था, क्योंकि पठानकोट के बाद जेएनयू में अफज़ल गुरु की बरसी बनाई गई।

दूसरी बात यह है कि पठानकोट का जो हमला हुआ, उसमें बहुत सी कमियां थीं। हमारा इंटेलिजेंस फेल्योर था, पाकिस्तान के लोग बिना रोक-टोक हमारे एयरबेस पर पहुंच गए, इसमें हमारे सात लोग शहीद हो गए। क्या कुछ छुपाने या उस पर से ध्यान हटाने के लिए जेएनयू में ऐसा हुआ? यह भी देखना पड़ेगा। कश्मीर में हमारे जवान रोज़ शहीद हो रहे हैं।

हमारी पार्टी, शिवसेना हमेशा आतंकवाद और देशद्रोह के खिलाफ अपने बलबूते पर लड़ती रही है। हम सरकार की मदद नहीं लेते हैं। सरकार चाहे हमारी हो या किसी की हो, हम तो डंडे दिखाते हैं, लेकिन वे हमारे सीने पर ... लेकिन हम एक बात जरूर कहेंगे, जो आपने भी उठाई कि अगर जेएनयू में देश के खिलाफ नारे लगे हैं, तो इस प्रकार के नारे हमारे कश्मीर में हर रोज लगते हैं। वहां भी अफज़ल गुरु की बरसी मनाई जाती है। पीडीपी के हमारे दोस्त यहां बैठे हैं। वे अफज़ल गुरु को कभी आतंकवादी मानने को तैयार नहीं हैं। यह ऑन-रिकॉर्ड है। अगर हमारी उनसे दोस्ती हो गई है, तो उनको हमें समझाना पड़ेगा कि अफज़ल गुरु आतंकवादी था, देश के खिलाफ था, देशद्रोही था। उसने हमारे देश पर, हमारी संसद पर हमला किया है। ...**(व्यवधान)**... यह हम मित्रों की बात है और हम आपस में बैठकर बात करेंगे, आप उसमें मत आइए। जब जेएनयू में अफज़ल गुरु और कश्मीर की आज़ादी के लिए नारे लगाए गए, तो उसके तुरंत बाद कश्मीर में भी "थैंक यू जेएनयू" के नारे लगाए गए। ...**(व्यवधान)**... उसकी जरूरत क्या थी? तुरंत कश्मीर में "थैंक यू जेएनयू" के बैनर्स लगाने की क्या जरूरत थी? ...**(समय की घंटी)**... ठहरिए, सर। ...**(व्यवधान)**... सर, जेएनयू में जिस तरह से माहौल बना है, उसको देखकर लगता है कि अब तक पाकिस्तान से कसाब जैसे बच्चे यहां भेजे जाते थे, कश्मीर में हमारे युवाओं का ब्रेन वॉश करके उनको हमारे खिलाफ इस्तेमाल किया जाता था, अब उसकी जरूरत नहीं पड़ेगी, ऐसा दु:ख के साथ कहना पड़ता है। ...**(व्यवधान)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Sanjay Rautiji, your time is over. ...*(Interruptions)*... Sanjayji, time is over.

श्री संजय राउत: सर, दो मिनट। यह शॉर्ट ड्यूरेशन नहीं, लॉंग ड्यूरेशन डिस्कशन है। ...**(व्यवधान)**... सर, सोशल मीडिया में ...**(व्यवधान)**...

SHRI PRAKASH JAVADEKAR: Sir, Members spoke for 30 minutes, whereas he has spoken for only three minutes. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. All right. Is that the position of the Government?

SHRI PRAKASH JAVADEKAR: No.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I agree. ...*(Interruptions)*... The point is... ...*(Interruptions)*... No, no, I agree. See, you are a Minister. As a Minister, you should be responsible. If that is the position of the Government, I have no problem. I will allow everybody. I am oniy restricting because the Government is asking that one Bill is also to be taken. ...*(Interruptions)*... But if you want it to be extended, I have no problem. ...*(Interruptions)*... Mr. Javadekar, you are a Minister. ...*(Interruptions)*... Mr. Javadekar, you are my friend. But, you always do the mistake. ...*(Interruptions)*... You are standing. ...*(Interruptions)*...

SHRI PRAKASH JAVADEKAR: Sir, you please give me one minute. In the afternoon only I said that we have to pass one Bill. You said, "Yes". Then, at that time only I requested that the debate must be concluded in three hours. And you allowed everybody.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay; you ask your colleague, what he came and told me. ...*(Interruptions)*...

SHRI PRAKASH JAVADEKAR: No, you allowed everybody then. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That is not the point. ...*(Interruptions)*... Listen, listen. Javadekarji, my point is, you should help the Chair. That is number one.

SHRI PRAKASH JAVADEKAR: That is what I am doing.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Listen. You ask your colleague what he came and told me.

श्री संजय राउतः सर, मेरा टाइम जा रहा है। ...**(व्यवधान)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: And you said exactly opposite of what he said. ...*(Interruptions)*... That is what I am saying. ...*(Interruptions)*... Do you want to divulge here what he said?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF MINORITY AFFAIRS AND THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI MUKHTAR ABBAS NAQVI): No. Sir.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes, that is the position. ...*(Interruptions)*...

SHRI PRAMOD TIWARI: Sir, I have a point of order. ...*(Interruptions)*...

श्री मुख्तार अब्बास नक़वीः सर, ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापतिः आप बैठिए। See, I wanted to restrict. I know what he said. You said exactly opposite of that. That is my complaint. ...*(Interruptions)*... You consult and say. ...*(Interruptions)*...

श्री मुख्तार अब्बास नक़वीः सर, ऑनरेबल मिनिस्टर की जो भावना है, वह आपको हर्ट करने की नहीं है, बल्कि आपसे सहयोग करने की है। पहले यह डिस्कशन कन्क्लूड हो जाए। ...**(व्यवधान)**... After the conclusion of this discussion, please take the Bill.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Sanjay Raut, we have to pass a Bill also today. So, you please conclude. That is all what I said. ...*(Interruptions)*...

SHRI PRAMOD TIWARI: Sir, what is your ruling on my point of order.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: What is your point of order?

श्री संजय राउतः सर, मुझे बोलने दीजिए। ...**(व्यवधान)**...

SHRI PRAMOD TIWARI: Sir, when a Minister accuses the Chair like this...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: 'Chair'!

SHRI PRAMOD TIWARI: Yes, Sir.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Everybody is accusing. ...*(Interruptions)*...

SHRI PRAMOD TIWARI: Nobody is accusing. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Nobody is accusing the Chair?

SHRI PRAMOD TIWARI: No, Sir. ...*(Interruptions)*...

SHRI TAPAN KUMAR SEN: Sir, I am supporting the Minister. You allow him, and you allow me also.

SHRI PRAMOD TIWARI: Sir, insult of the Chair is the insult of the House. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: If the Minister has accused the Chair, I will go through the record, and take appropriate action. ...*(Interruptions)*...

SHRI PRAMOD TIWARI: Sir, insult of the Chair is the insult of the House. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That is why I said, I will go through the record, and I will take appropriate action, Tiwariji. ...*(Interruptions)*... Okay. Now, please. Now, let us all cooperate. ...*(Interruptions)*... Please, please.

श्री संजय राउतः सर, आज तक पाकिस्तान के कसाब जैसे बच्चे यहां भेजे जाते थे, कश्मीर में हमारे युवाओं को ब्रेन वॉश करके हमारे खिलाफ इस्तेमाल किया जाता था, अब उसकी जरूरत नहीं पड़ेगी। मैं सोशल मीडिया पर अभी-अभी एक मैसेज पढ़ रहा था। "After watching so much drama at the JNU, the ISIS and the Lashkar are planning to visit JNU for campus recruitment."

सर, वहां हमारी यूनिवर्सिटी की प्रतिमा बन गई कि वहां क्या हो रहा है। सबसे पहले मानना पड़ेगा और गम्भीरता से विचार करना पड़ेगा कि हमारा खुफिया तंत्र, हमारी intelligence इस मामले में थोड़ा कमजोर पड़ गया। ...**(व्यवधान)**... सर, कन्हैया को arrest किया और जो पांच छात्र थे, वे अंदर थे और पुलिस उनका गेट पर इंतजार कर रही थी। पुलिस को कैम्पस में प्रवेश करने की वाइस चांसलर से अनुमति नहीं मिली। मैं पूछना चाहता हूं कि क्या JNU अलग देश है और क्या JNU और भारत के बीच भी Extradition Policy होनी चाहिए? अगर इस प्रकार से होता है, तो सभी यूनिवर्सिटीज़ पर कंट्रोल नहीं रहेगा।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. Sanjayji, your time is over. ...*(Interruptions)*... Please Sanjayji. ...*(Interruptions)*... Sanjayji, please ...*(Interruptions)*...

श्री संजय राउतः सर, दूसरी बात मैं कहना चाहता हूं कि पाकिस्तान के बारे में हमारी सरकार की पॉलिसी तय होनी चाहिए। सर, यह देशद्रोह का मामला है। इसमें double standard नहीं हो सकता। अगर JNU में पाकिस्तान के पक्ष में लोग नारे लगाना देशद्रोह का मामला बनता है और उसके खिलाफ सरकार और हमारे मित्र पक्ष लड़ते हैं, तो मुम्बई में भी ...**(व्यवधान)**... जब हमने पाकिस्तान का विरोध करने के लिए महमूद कसूरी को रोकने की कोशिश की, तो सरकार ने हमारे खिलाफ cases बनाए। ...**(व्यवधान)**... JNU में जब पाकिस्तान के कलाकार आए थे। जब हम मुम्बई में पाकिस्तान के कलाकार और क्रिकेटर्स को रोकने की बात करते हैं, तो हमारे खिलाफ आवाज उठती है और वहां की सरकार फिर चाहे वह हमारी हो, हमारे खिलाफ cases बनाती है।

सर, मैं इतना ही कहूंगा कि पाकिस्तान के बारे में हमारी जो भूमिका है, उसमें सरकार को अपना स्टैंड स्पष्ट करना चाहिए कि आने वाले समय में हमारे देश के लोग पाकिस्तान के साथ खेलेंगे या नहीं, पाकिस्तान के कलाकारों को यहां आने देंगे या नहीं आने देंगे। अगर नहीं आने देंगे, तो फिर चाहे JNU का case हो, चाहे मुम्बई, कोलकाता या लखनऊ हो, हर जगह पर एक ही मापदंड अपनाना चाहिए।

सर, सरकार ने JNU के बारे में जो action लिया है, उसका हम समर्थन करते हैं। अगर freedom of speech देश के खिलाफ है, भारत माता के खिलाफ है ...**(व्यवधान)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay, now please resume your seat. ...*(Interruptions)*... Please resume your seat. ...*(Interruptions)*... Please resume your seat. ...*(Interruptions)*...

श्री संजय राउतः अगर भारत माता की हत्या होती है, तो मैं मानता हूं कि भारत माता को बचाने के लिए आपको अभिव्यक्ति की हत्या करनी हो, तो उसको 100 बार करिए, लेकिन भारत माता को बचाइए।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Hon. Members, I would like to inform you the party position. ...*(Interruptions)*... The time of the Indian National Congress is over. They have taken one minute extra. ...*(Interruptions)*... The time of the BJP is over. They have taken thirty-two minutes extra. ...*(Interruptions)*... Let me see. ...*(Interruptions)*... The SP has taken eight minutes extra. The JDU has taken thirteen minutes extra. The ATC has taken five minutes extra. The BSP has taken seven minutes extra. The CPIM has taken twenty-five minutes extra. ...*(Interruptions)*... The BJD has taken five minutes extra. The NCP has taken nine minutes extra.

I think, all those parties, which have taken extra time, should withdraw their remaining candidates. Or, if they want to speak, I can call if they stop in five minutes. This discussion will go up to 7.25. not more than that. ...*(Interruptions)*... Then, you have to take up a Bill.

SHRI TAPAN KUMAR SEN: Only five minutes!

MR. DEPUTY CHAIRMAN: But, your name is not here. Why are you asking?

The Indian National Congress has five more names. I will allow one person for five minutes. Mr. Ghulam Nabi Azad, I hope you are listening to me. The discussion has to be over latest by 7.30. p.m.

SHRI GHULAM NABI AZAD: I think, you had announced that reply will take place at 7 o'clock. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Then, I will have to stop here itself. ...*(Interruptions)*...

श्री मुख्तार अब्बास नक़वी: माननीय उपसभापति जी, BAC में तय हुआ था कि 7.00 बजे के बाद तक हम लोग बैठेंगे। इसलिए इसमें कोई बात नहीं है और अगर हाउस उचित समझे, तो आज जो है ...**(व्यवधान)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay, this discussion will go up to 7.30. p.m. ...*(Interruptions)*... Then, we will take up a Bill. ...*(Interruptions)*...

SHRI MUKHTAR ABBAS NAQVI: Okay. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. Then the reply will be today or tomorrow? ...*(Interruptions)*... Will the Minister be replying today or not? ...*(Interruptions)*... Listen, the discussion will go up to 7.30. I have three more people. The discussion will go maximum up to 7.30. In that case, I don't know whether reply is possible or not. What about the reply? What is your position?

SHRI MUKHTAR ABBAS NAQVI: Sir, we are requesting that the discussion should be till 7.30 p.m. After 7.30 p.m., the Bill be taken up. If the House agrees, then, reply could be made tomorrow. ...*(Interruptions)*... Bill is already listed.

श्री सतीश चन्द्र मिश्रा (उत्तर प्रदेश): बिल कहां से आ गया?

SHRI MUKHTAR ABBAS NAQVI: Bill is already listed. ...*(Interruptions)*...

श्री सतीश चन्द्र मिश्राः आज इसका रिप्लाई होने दीजिए। इसमें बिल को मत लाइए, बिल को इसके बाद लाइए। पहले आप रिप्लाई होने दीजिए, बिल के लिए हम 12 बजे तक बैठ लेंगे। ...**(व्यवधान)**...

श्री तपन कुमार सेनः आप कल फिर से झगड़ा करवाना चाहते हैं? आज रिप्लाई हो जाएगा तो झगड़ा खत्म हो जाएगा। ...**(व्यवधान)**...

SHRI MUKHTAR ABBAS NAQVI: After 11 o'clock? ...*(Interruptions)*...

श्री सतीश चन्द्र मिश्राः हां, हम बैठ जाएंगे। आपके बिल के लिए बैठ जाएंगे।

SHRI MUKHTAR ABBAS NAQVI: You want to sit beyond 11 o'clock! ...*(Interruptions)*...

श्री सतीश चन्द्र मिश्राः हां, हम बैठ जाएंगे। आपके बिल के लिए बैठ जाएंगे।

श्री उपसभापतिः ठीक है, रिप्लाई आज ले लो। Okay. Reply will be made today. No problem.

SHRI MUKHTAR ABBAS NAQVI: But the Bill is necessary.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. I am telling you that that is already decided. We have in the BAC itself decided that one Bill will be taken up. That is an innocuous Bill. It will take one hour only. No problem. I will sit. I will be in the Chair. Don't worry. Therefore, the remaining speakers will take only five minutes. Only five minutes. Has the DMK spoken?

SHRI TIRUCHI SIVA (Tamil Nadu): No, Sir, we have not spoken.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Has the DMK spoken?

SHRI TIRUCHI SIVA: No, Sir.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. Mr. Thangavelu, you are speaking or Ms. Kanimozhi speaking?

SHRI TIRUCHI SIVA: Sir, Mr. Thangavelu is speaking.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. But take only five minutes.

SHRI S. THANGAVELU (Tamil Nadu): Mr. Deputy Chairman, Sir, time and again, the hon. Supreme Court has said that imposition of sedition charges must be limited to the cases where there is actual threat. But, recently, the Delhi Police have acted hastily in arresting the student body leader of Jawaharlal Nehru University. It seems that there is an attempt to create terror among the students for holding anti-establishment views. The misconceived manner in which Afzal Guru was commemmorated by a handful of JNU students should not be a provocation for tarring the students' union with the brush of alleged anti-nationalism.

[Shri S. Thangavelu]

Interference by the Government in functioning of various universities, undermining the autonomy of these educational institutions is a cause of immediate concern. Many sections of our society feel that the death of a dalit scholar Rohit Vermula was due to such meddling in the affairs of the Central Universities, by the Government.

The State Government of Tamil Nadu has filed more than 7,000 cases of sedition against the-activists, of anti-nuclear campaign. Recently, folk singer, Kovan, was charged with sedition for releasing songs against the liquor policy of the State! ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI VIJILA SATHYANANTH (Tamil Nadu): Sir, he is taking up the Tamil Nadu case. ...*(Interruptions)*...

SHRI S. THANGAVELU: Given the history of its misuse and its incompatibility with a modern Constitution, Section 124-A of the IPC must be repealed altogether. ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI VIJILA SATHYANANTH: Sir, he is misleading the House. ...*(Interruptions)*... He is taking up the 7,000 sedition cases that were filed. ...*(Interruptions)*... This should be taken out. ...*(Interruptions)*...

SHRI S. THANGAVELU: The larger issue of Government interference in institutions of higher education must be addressed and the Government should exercise refrain when it comes to such matters. I am concluding, Sir. ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI VIJILA SATHYANANTH: I want to reply immediately. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You sit down. ...*(Interruptions)*... No, no; he is not yielding. ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI VIJILA SATHYANANTH: Because, during 2009, inside the Madras Law College premises ...*(Interruptions)*...

7.00 P.M.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He is not yielding. ...(Interruptions).. You sit down. ...*(Interruptions)*...

SHRI TIRUCHI SIVA: Sir. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Siva, why are you interrupting your Member? ...*(Interruptions)*... That is going on record. What do you want?

SHRIMATI VIJILA SATHYANANTH: Number of sedition cases inside the Madras Law College ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He is not yielding. ...*(Interruptions)*... It is not going on record. ...*(Interruptions)*... What you are saying is not going on record.

SHRIMATI VIJILA SATHYANANTH: *

SHRI S. THANGAVELU: The Government should ensure that *dalit* students in higher education institutes should feel that they are safe and secure. I conclude. Thank you.

...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Over?

SHRI S. THANGAVELU: Yes, Sir.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. Now. Shri Ramdas Athawale. Mr. Athawale, are you speaking? ...*(Interruptions)*... Speak only for five minutes.

श्री रामदास अठावले: डिप्टी चेयरमैन सर, ...**(व्यवधान)**... सर ...**(व्यवधान)**... डिप्टी चेयरमैन सर ...**(व्यवधान)**...

SHRIMATI VIJILA SATHYANANTH: *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I have called Mr. Athawale. You may sit down now. Why are you speaking without my permission?

SHRIMATI VIJILA SATHYANANTH : *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, you cannot speak without my permission. I have called Mr. Athawale to speak. If you want, I will allow you. But sit down now.

SHRIMATI VIJILA SATHYANANTH: *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: It is not going on record. Why do you say this?

SHRIMATI VIJILA SATHYANANTH: *

*Not recorded.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: My dear sister, it is not going on record. Why do you say this?

SHRIMATI VIJILA SATHYANANTH: *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: It is not going on record. Sit down.

SHRIMATI VIJILA SATHYANANTH: *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Sister, it is not going on record.

SHRIMATI VIJILA SATHYANANTH: *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. You may say anything you want. ...*(Interruptions)*... You may speak, Mr. Athawale; that is not going on record. ...*(Interruptions)*... You may speak if you want. That would go on record. Speak louder.

SHRIMATI VIJILA SATHYANANTH: *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: It is not going on record. Sit down.

SHRIMATI VIJILA SATHYANANTH: *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I said I will allow you. Why don't you sit down? This is very unbecoming of you, making a lecture without my permission. I said, I will allow you. But you are speaking without my permission. Don't do this. You are an hon. Member and I respect you very much, but don't do this. Okay, Mr. Athawale.

श्री रामदास अठावले: सर, देश की स्थिति मजबूत करने के बजाय देश को अस्थिर करने की कोशिश हो रही है। रोहित वेमुला की आत्महत्या बहुत गंभीर बात है। किसी को आत्महत्या नहीं करनी चाहिए। इसके लिए जो कोई भी दोषी होंगे, उनके खिलाफ सरकार की तरफ से जरूर कार्रवाई की जाएगी। जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी में जो कुछ हो रहा है, जो विवाद हो रहा है, उसकी तरफ भी ध्यान देकर सरकार की ओर से कार्रवाई होनी चाहिए। जो लोग राष्ट्रवादी हैं, राष्ट्रवादी कांग्रेस के नहीं, जो लोग राष्ट्र को प्रेम करने वाले हैं, उन लोगों का सम्मान करना चाहिए, उनका स्वागत करना चाहिए। अगर कोई देश के खिलाफ पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे लगाते हैं, तो डिप्टी चेयरमैन सर, उनके विरुद्ध कार्रवाई होनी चाहिए। हमारे यहां पठानकोट में हमला होता है, पाकिस्तान बार-बार यहां आतंकवादी लोगों को भेजकर हमारे सैंकड़ों लोगों की हत्या करता है। जब अटल बिहारी वाजपेयी जी बोले थे कि हम पाकिस्तान के साथ आर-पार की लड़ाई लड़ेंगे, तब मैं लोक सभा का मेम्बर था और उस समय मैं उधर के लोगों के साथ था, अब मैं इधर के लोगों के साथ हूं। ...**(व्यवधान)**...

श्री प्रमोद तिवारी: आप इधर आ जाओ। ...**(व्यवधान)**...

श्री रामदास अठावले: ठीक है, मैंने बोला था कि अटल जी ...**(व्यवधान)**...

*Not recorded.

श्री उपसभापतिः तिवारी जी, प्लीज़ ...**(व्यवधान)**...

श्री रामदास अठावलेः आप आर-पार की लड़ाई की खाली बात मत करो, अगर पाकिस्तान को सबक सिखाना है, एक बार पाकिस्तान पर हमला करो ...**(व्यवधान)**... ऐसा हमला करो कि जो एक-तिहाई हिस्सा जम्मू-कश्मीर का उन लोगों ने ले लिया है, वह कश्मीर का एक-तिहाई हिस्सा भारत में आ जाए, वह हमारा हक है। ...**(व्यवधान)**... पाक में जो कश्मीर है, वह भारत का अविभाज्य घटक है। भारत को कोई तोड़ नहीं सकता और मैं इसीलिए बताना चाहता हूंः-

"हम नहीं चाहते हैं देश को तोड़ना,
क्योंकि बाबा साहेब अम्बेडकर जी ने सिखाया है हमें जोड़ना।
देश को तोड़ने की मत करो बात,
देश के साथ मत करो विश्वासघात।"

कांग्रेस, वामपंथी, समाजवादी और सभी दलों को मैं बोल रहा हूं कि "दे दो सरकार का साथ और मजबूत करो एनडीए सरकार का हाथ।" ...**(व्यवधान)**...

डिप्टी चेयरमैन सर, ...**(व्यवधान)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please, do not disturb. We want to dispose it of and leave.

श्री रामदास अठावलेः डिप्टी चेयरमैन सर, डा0 अम्बेडकर जी ने यह मूल मंत्र दे दिया है कि जरूर अपोजिशन होना चाहिए। सत्ताधारी पार्टी होनी चाहिए, अपोजिशन द्वारा विरोध भी करना चाहिए, लेकिन देश की एकता को बनाए रखो। आप विरोध करो, आज तुम्हारी मेजॉरिटी है, कल हमारी मेजॉरिटी हो जाएगी, देखते हैं फिर क्या होता है? उधर तुम्हारी मेजॉरिटी है, इसीलिए तुम ज्यादा हंगामा कर रहे हो, करो हंगामा, लेकिन इस विषय पर हंगामा मत करो। दूसरे विषय पर हंगामा करो, सरकार को घेरे में डालने की कोशिश करो। इनके घेरे से कैसे बाहर निकलना है, यह हमको मालूम है।

डिप्टी चेयरमैन सर, जो रोहित वेमुला ने आत्महत्या की, उसके बारे में मैं श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानी जी को बताना चाहता हूं। आप एक एक्टिव मंत्री हैं, मजबूत मंत्री हैं, फिल्मों में भी आपने काम किया है और अभी मंत्री पद पर भी काम कर रही हैं। आप एक मजबूत मंत्री के रूप में एचआरडी मिनिस्ट्री संभाल रही हैं। आप बहुत sacrifice करने वाली एक्टिव लेडी हैं। वही मैं भी हूं। ...**(व्यवधान)**... इसीलिए मैं कांग्रेस के सदस्यों को भी बोलना चाहता हूं कि "करो तुम दूध का दूध और पानी का पानी, मगर मत करो देश की हानि, महिला मंत्री बन गयी स्मृति ज़ूबिन इरानी। महिला मंत्री बन गयी स्मृति इरानी, क्यों है तुम को हैरानी?"

डिप्टी चेयरमैन सर, इसलिए मैं अपनी पार्टी की तरफ से ...**(व्यवधान)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You have taken six minutes. ...*(Interruptions)*... Please stop. ...*(Interruptions)*... Please stop. ...*(Interruptions)*...

श्री रामदास अठावले: सर, मैं भी स्टूडेंट के जमाने से पॉलिटिक्स में रहा हूं ...**(व्यवधान)**... जवाहर लाल यूनिवर्सिटी में मेरा भाषा भी हो चुका है। मैं वहां बहुत बार गया हूं, लेकिन मैंने कभी पाकिस्तान जिंदाबाद की घोषणा नहीं सुनी। पाकिस्तान जिंदाबाद का प्लान किसका है, इसकी इंक्वायरी करो। मेरी तरफ से सरकार से मांग है। हमारी मोदी जी की सरकार किसी के साथ अन्याय नहीं होने देगी।

श्री उपसभापति: अठावले जी, बैठिए।

श्री रामदास अठावले: सर, रोहित वेमुला ने आत्म-हत्या की है, इरानी जी, मेरा आपसे निवेदन है कि यह लड़का पीएचडी करने वाला था। वह दलित था या नहीं ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति: अठावले जी, बैठिए।

श्री रामदास अठावले: उनके पिता ओबीसी थे। मैंने तो कहा है कि जातिवाद को खत्म करने के लिए इस प्रकार की आवश्यकता है जिस में मैंने एक ब्राह्मण लड़की से शादी की।

श्री उपसभापति: अठावले जी, प्लीज़ बैठिए।

श्री रामदास अठावले: डिप्टी चेयरमैन सर, अगर आपको जातिवाद को खत्म करना है, तो inter-caste marriage को बढ़ावा देना चाहिए। इस तरह की marriage होनी चाहिए। महोदय, वहां जो कुछ हुआ है, उसकी मैं निंदा करता हूं। रोहित वेमुला की हत्या की पूरी इंक्वायरी होनी चाहिए। जो आपने जांच कमीशन appoint किया है, उसमें हमारी माननीय सदस्या मायावती जी की मांग थी ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति: अठावले जी, बैठिए।

श्री रामदास अठावले: उस जांच कमीशन में एक दलित का appointment होना चाहिए। सरकार इस पर विचार करे और जिन लोगों के कारण उन्होंने आत्म-हत्या की, उन्हें कड़ी-से-कड़ी सज़ा होनी चाहिए। अगर कन्हैया कुमार लाल और रामा नागा अगर दोषी नहीं है, तो उन्हें छोड़ा जाएगा। लेकिन जो दोषी हैं, उन्हें जेल के अन्दर भेजेंगे। जो भारत के खिलाफ नारे लगाते हैं, उनके खिलाफ कार्यवाही होनी चाहिए। जय भीम, जय भारत।

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Sir, I have a humble request that throughout the day on this particular issue, and in fact, one must be corrected and say 'issues', I have heard some of the stalwarts of Indian polity who speak very passionately. I have had the honour of having you on the Chair. Sir, when I spoke first as an MP and first as a Minister in this House. I know that you seek to conclude the debate by 7.30 so that I can give an answer. But I also know that many Members in this House want to speak without the limitation of time. If you deem it fit. Sir, I am willing to listen to everybody at length, if not today then tomorrow, and respond accordingly. However, if you deem it fit, I will then follow your directions, if you ask me to reply right now within the next ten minutes. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Not within ten minutes because I have two-three more speakers. ...*(Interruptions)*...

SHRI SITARAM YECHURY: Close it today. ...*(Interruptions)*... Reply and end the debate today. ...*(Interruptions)*...

SHRI MUKHTAR ABBAS NAQVI: We are ready to sit till twelve of the lock. ...*(Interruptions)*... No problem. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I would say the Minister can decide, if the Minister wants to reply tomorrow, then we have no problem. ...*(Interruptions)*...

श्री तपन कुमार सेनः सर, डिस्कशन अभी खत्म करिए।

श्री सीताराम येचुरीः आज खत्म करिए।

SHRI MUKHTAR ABBAS NAQVI: That is why she requested in the interest of hon. Members. ...*(Interruptions)*... सारे मेंबर्स डिटेल में अपनी बात कह सकें क्योंकि अभी 16-17 मेंबर्स बाकी हैं और वे भी अपे सुझाव रखना चाहते हैं।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: In any case, it will be difficult to end it before 7.30. ...*(Interruptions)*...

SHRI SITARAM YECHURY: If the Minister agrees, no Bill today. ...*(Interruptions)*...

SHRI MUKHTAR ABBAS NAQVI: Why not the Bill? ...*(Interruptions)*... Only Calling Attention, only Short Duration and no Bill! This is not the way. ...*(Interruptions)*... These tactics will not go on. ...*(Interruptions)*...

SHRI SITARAM YECHURY: You said, "Discussion ends by 7.30, the Minister replies and then the Bill." Otherwise, no Bill. ...*(Interruptions)*...

SHRI MUKHTAR ABBAS NAQVI: It is not possible. Only Calling Attention, only Short Duration Discussion, only hungama, and, no Bill! ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Naqvi ji. ...*(Interruptions)*...

SHRI SITARAM YECHURY: If the discussion does not end today, no Bill. ...*(Interruptions)*...

SHRI PRAKASH JAVADEKAR: Sir, we are the legislators. We are the House for passing legislation. ...*(Interruptions)*... They are saying no to the Bills. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Yechury, you want reply today. That is your point. ...*(Interruptions)*...

SHRI SITARAM YECHURY: Then, the Bill.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You speak specific. ...*(Interruptions)*... Mr. Yechury, there is no problem. Your point is. ...*(Interruptions)*... Let me reply to Mr. Yechury. Your problem is that you want reply today.

SHRI SITARAM YECHURY: No, I am saying, no Bill will be taken up until this discussion is concluded. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That means if discussion is concluded, the Bill can be taken up. ...*(Interruptions)*...

SHRI SITARAM YECHURY: If you want reply tomorrow, then, no Bill today. ...*(Interruptions)*...

श्री मुख्तार अब्बास नक़वीः सीताराम जी, यह गलत बात है। You are violating the BAC decision. ...*(Interruptions)*... We decided it in the BAC. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Naqvi. ...*(Interruptions)*...

SHRI .MUKHTAR ABBAS NAQVI: You had a commitment. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Naqvi, there is no problem. There need not be any shadow of fight. What he is saying and others are also saying is that let us have the reply, and then, the Bill. That is all. We can have both. ...*(Interruptions)*... We can have both. No problem. We have decided that both the items will be taken up.

SHRI MUKHTAR ABBAS NAQVI: Okay. No problem. We are ready to sit till 12 o' clock. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: If Members are there, if quorum is there, I will be here. We will pass the Bill.

SHRI MUKHTAR ABBAS NAQVI: Okay.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, the next speaker is Mr. Hanumantha Rao. Please take only five minutes.

SHRI V. HANUMANTHA RAO (Telangana): Mr. Deputy Chairman, Sir, repeatedly, the hon. Minister is taking my name because I also wrote a letter. But my letter is entirely different from the letter written by Mr. Bandaru Dattatreya. When I was the Court Member in Hyderabad University, at that time, there were a lot of allegations against the Vice-

[Shri V. Hanumantha Rao]

Chancellor regarding repeated mishandling and misappropriation of moneys. Mr. Deputy Chairman, Sir, in three semesters, six-seven boys gave up their life. There is also a case of transfer of land worth ₹ 200 crore, which was transferred to other organizations. On all these things, I wrote a letter on 17th November, 2014. But, unfortunately, after that, there has been no information, no acknowledgement. Finally, yesterday, my sister, hon. Minister, took my name, and, yesterday only, I got the acknowledgement. Before that, I never received it. When Mr. Narayanasamy was the Minister, as per the norms, whenever any VVIP wrote a letter, they had to reply within thirty days. But unfortunately, I could not get a reply.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You should be happy that she has taken your name in the other House. You have got a lot of publicity.

SHRI V. HANUMANTHA RAO: For that, I really want to thank her. At least, after fourteen months, she has given acknowledgement of my letter. Sir, the issue of Rohit Vemula is a very serious issue. Mr. Rohit Vemula was a very good scholar. He was a very intelligent boy, Sir. What is happening in every university? From the beginning, I am saying that the Central Universities are occupied by the RSS and the ABVP. They want to dominate the student organizations. They want to make it a Hindu Rashtra, and, nobody, either SFI or NSUI, or other students' organizations, were accepting it. Sir, because of that, they are not giving scholarships properly. Mr. Appa Rao, who was the Vice-Chancellor repeatedly spoke about the suppression of the SC students. At that time, they formed the Ambedkar Students Association. After that, सुशील कुमार, जो ABVP का president है, उसने यह कहा कि अम्बेडकर स्टूडेंट्स गुंडे लोग हैं और यह मेसेज़ भिजवा दिया। इस मैसेज को WhatsApp पर भिजवाने के बाद गड़बड़ हुई। उसके बाद फिर क्या हुआ, वॉल पोस्टर लगाया, तो वह वॉल पोस्टर फाड़ दिया और उसके बाद झगड़ा हुआ। अभी हमारे नेता श्री गुलाम नबी आज़ाद जी ने इसकी correct picture दी है। उसका दूसरा तरीके से जो ऑपरेशन हुआ और वह हॉस्पिटल में एडमिट हुआ, उसके ऊपर एक इश्यू बना। बाद में विनोद कुमार, जो लॉ कॉलेज के प्रिंसिपल हैं, उन्होंने अप्पा राव से टेलीफोन पर बात की कि अप्पा राव जी, ये बच्चे social boycott करेंगे, ये बच्चे बहुत serious हैं, ये कुछ भी कर सकते हैं, यह इश्यू किसी तरफ भी divert हो सकता है, this issue may get diverted to other side, यह बड़ा sentimental issue है। इसके ऊपर इस लड़के ने एक लेटर भी लिखा। सर, उन्होंने social boycott नहीं करने का रिक्वेस्ट भी किया, लेकिन अप्पा राव ने इसको कोई तवज्जो नहीं दी, कोई interest नहीं लिया, कोई discussion नहीं किया। उस वक्त विनोद कुमार, जो लॉ कॉलेज के प्रिंसिपल हैं, उन्होंने अप्पा राव से बात की कि अप्पा राव जी, यह इश्यू serious हो रहा है, why don't you go and talk to the boys who are sitting on indefinite hunger strike? अप्पा राव ने यह कहा — सर, सुनिए, यह बड़ा important point है, इसे मिनिस्टर को सुनना चाहिए — रामचन्द्र राव एमएलसी हैं। उसने कहा कि मेरे हाथ में कुछ नहीं है, रामचन्द्र राव, एमएलसी कुछ कर सकता है। वह कुछ कर सकता है, मेरे हाथ में कुछ नहीं है। It is in the hands of the Ramachandra Rao. अब मैं मंत्री जी से पूछना चाहता हूं

कि रामचन्द्र राव क्या चीज़ हैं? क्या वे सेंट्रल यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर हैं या रजिस्ट्रार हैं या एडवाइजर हैं? इसी की वजह से हर यूनिवर्सिटी में आरएसएस और एबीवीपी की * चल रही है। इनके पास क्या जवाब है? मैं यह कह रहा हूं कि हर जगह पर, हर यूनिवर्सिटी में इसी तरह से दूसरे ऑर्गेनाइजेशन इसके खिलाफ जा रहे हैं, क्योंकि यह सेकुलर देश है। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, सभी लोग यहां रहते हैं। आरएसएस वाले Hinduism को बढ़ाने के लिए ऑर्गेनाइजेशन बना कर नए-नए काम कर रहे हैं। आपने रामचन्द्र राव के ऊपर एक्शन क्यों नहीं लिया? आपने अप्पा राव को suspend क्यों नहीं किया? ...**(समय की घंटी)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes, now please conclude. ...*(Interruptions)*... Five minutes are over. Stop. ...*(Interruptions)*...

श्री वी. हनुमंत रावः अप्पा राव के पीछे कौन है? ...**(समय की घंटी)**... अब तक इसके ऊपर क्या एक्शन लिया गया?

MR. CHAIRMAN: Your time is over. ...*(Interruptions)*...

श्री वी. हनुमंत रावः *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, Shri Tarun Vijay. ...*(Interruptions)*... Shri Tarun Vijay, you have five minutes. ...*(Interruptions)*...

श्री वी. हनुमंत रावः *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Your time is over. ...*(Interruptions)*... Now, Shri Tarun Vijay, do you want only five minutes? ...*(Interruptions)*...

श्री वी. हनुमंत रावः *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Take only five minutes. ...*(Interruptions)*... Mr. Hanumantha Rao, sit down. ...*(Interruptions)*... Nothing will go on record. Sit down. ...*(Interruptions)*... आप बैठिए। यह रिकॉर्ड में नहीं जा रहा है, आप बैठिए। ...**(व्यवधान)**... It is not going on record. ...*(Interruptions)*... आप बैठिए। Mr. Tarun Vijay, you please start. ...*(Interruptions)*...

श्री वी. हनुमंत रावः *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Tarun Vijay, you start. That is not going on record. ...*(Interruptions)*... Only what Mr. Tarun Vijay says will go on record. ...*(Interruptions)*...

श्री तरुण विजय (उत्तराखंड) : उपसभापति महोदय, ...**(व्यवधान)**... यह स्थिति भारत में होगी, जहां पर देशभक्ति और देशद्रोह पर बहस करने की सदन में आवश्यकता हो रही है।

*Expunged as ordered by the Chair.

*Not recorded.

[श्री तरुण विजय]

...**(व्यवधान)**... मैं यह जानना चाहता हूं कि जिस समय पूरा देश सियाचीन वीरों के प्रतिं आखें नम और अधरों पर 'जय हिन्द' लिए श्रद्धांजलि दे रहा था, जब हनुमंथप्पा हमारे अधरों पर थे और 'जय हिन्द' हमारे दिल में था, तब जेएनयू का एक ग्रुप 'हिन्दुस्तान बर्बाद करेंगे, भारत की बर्बादी तक जंग करेंगे, हर घर में अफज़ल निकलेगा', ये नारे लगा रहा था, ये कौन लोग थे? इनकी परंपरा यह बताती है कि यह पहले से हो रहा था। 'Freedom of Kashmir, Nagaland, Manipur, Assam, Palestine, down with State terrorism', ये पोस्टर्स वहां जेएनयू में लगे हुए है, जो विभिन्न वामपंथी संगठनों द्वारा लगाए जाते हैं। 'Contesting Indian Nationalism', 'Voices of Azadi from Kashmir' और ये भारत के विरुद्ध जितनी बातें करते हैं, 'इंडियन आर्मी मुर्दाबाद', ये पोस्टर्स वहां लगे हुए हैं। 'श्रीनगर से इम्फाल, पूरी solidarity' और देश में जितने तोड़ने वाले तत्व हो सकते हैं, उनको लेकर जेएनयू में चलते हैं। उपसभापति महोदय, मैं पूछना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान के तमाम विश्वविद्यालयों में अकेला जेएनयू ऐसा विश्वविद्यालय क्यों है, जो जब भी खबर बनाता है, तो देशद्रोह की; जब भी खबर बनाता है, तो सैनिकों पर हमले की, जब भी खबर बनाता है, तो सीआरपीएफ के जवानों की मृत्यु के जश्न की बनाता है; महिषासुर को देवता बना कर दुर्गा को वेश्या बताता है? अगर आप सेकुलर हैं, तो आप धार्मिक प्रतीकों में क्यों जाते हैं? उपसभापति महोदय, इसका कारण है। हम कहते हैं कि ये वामपंथी संगठन विभिन्न विचारधाराओं के हैं। कोई ultra है, कोई Maoist है, कोई Naxal है। यहां जो वामपंथी संगठन हैं, मैं उनके बारे में कुछ नहीं कहता, लेकिन जो जेएनयू के वामपंथी संगठन हैं, उनके genes में भारत के प्रति विद्रोह, देशद्रोह, judiciary के प्रति विद्रोह घुसा हुआ है। पोस्टर लगाया कि याकूब मेमन को जिस जज ने सजा दी, वह मनुवादी था और उसके कारण से सजा दी गई। जुडिशियरी पर हमला करना, यह उनकी परंपरा है। मैं आपको उस समय की स्थिति बताता हूं, जब केरल में पहली सरकार बनी थी, तो उस समय उनके पहले मुख्य मंत्री पीएमएस नम्बूदरीपाद बने थे। जब वहां पीएमएस नम्बूदरीपाद मुख्य मंत्री बने थे, तो उनके मुख्य मंत्री बनने के बाद जो उनकी पहली प्रेस-कॉफ्रेन्स हुई, उस प्रेस-कॉफ्रेन्स में उन्होंने कहा that it was his duty to wreck the Indian Constitution from within. This is on record. The first Communist Chief Minister of Kerala declared it in the first Press conference and then he attacked the Judiciary. जुडिशियरी पर अटैक किया, जिसमें उन्होंने कहा - Judiciary is an instrument of oppression and judges are dominated by class hatred. उनका कन्विक्शन हुआ, उनको सजा दी गई। हाई कोर्ट ने उनको सजा दी, उन पर जुर्माना किया। जब उन्होंने अपील की, तो उनकी अपील भी केरल हाई कोर्ट ने निरस्त कर दी।

उपसभापति महोदय, यह इनकी परंपरा रही है। मैं कांग्रेस के मित्रों को बताना चाहता हूं कि आपकी अंतर्धारा में राष्ट्रीयता है, आप राष्ट्रवादी परंपरा को लेने वाले राष्ट्रीय दल हैं, आपके लोगों ने राष्ट्रीयता को पुष्ट किया है।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You have only two more minutes. ...*(Interruptions)*...

श्री तरुण विजयः लेकिन मैं आपको बताना चाहता हूं कि वर्ष 1962 में आपके जिन प्रधान मंत्री ने न केवल कम्युनिस्ट नेताओं को गिरफ्तार कराया था, उन्होंने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के स्वयं-सेवकों को गणतंत्र की परेड में शामिल होने का निमंत्रण भी दिया था और वह जवाहरलाल नेहरू थे। वे आज के राजनैतिक विचारक थे, उन्होंने ऐसा किया। मैं कांग्रेस के मित्रों को बताना चाहता हूं कि आज आप वामपंथियों को अपना मित्र बताते हैं, यह विचारधारा भारत के विरुद्ध काम करती है। आपकी सरकार ने, कांग्रेस की सरकार ने 18 फरवरी, 1965 को यह श्वेत-पत्र जारी किया था। इसकी शीर्षक - 'Anti-National Activities of Pro-Peking Communists and Their Preparations for Subversion and Violence'. This was done by Congress Government. आप वह इतिहास भूल रहे हैं।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You conclude. ...*(Interruptions)*...

श्री तरुण विजयः उपसभापति महोदय, एक सेकेंड। उसमें मैंने कहा है - We are dedicated to the ideals and values of a free and democratic society. Our democratic Constitution guarantees to all citizens the Right of Freedom and Speech, Expression and Association. But if somebody interferes with the Constitution and become a threat to national security. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. ...*(Interruptions)*...

SHRI TARUN VIJAY: ...we will not tolerate ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: All right, five minutes. ...*(Interruptions)*... Mr. Tarun, five minutes.

SHRI TARUN VIJAY: We were convinced ...*(Interruptions)*... that the plans and activities of the ...*(Interruptions)*... pro-Chinese Communists had developed into such a threat. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Tarun, five minutes. ...*(Interruptions)*... Now, you have to stop. ...*(Interruptions)*... Five minutes. ...*(Interruptions)*... It is over. ...*(Interruptions)*... Five minutes. ...*(Interruptions)*...

श्री तरुण विजयः उपसभापति महोदय, मैं तो यह कहूंगा कि हमारी और आपकी परंपरा एक है।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. ...*(Interruptions)*... Tarunji. five minutes are over. ...*(Interruptions)*...

श्री तरुण विजयः सर, अंत में, माखन लाल चतुर्वेदी के शब्दों में—

मुझे तोड़ लेना वनमाली
उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. Fine. Thank you. Now, Shri Baishnab Parida. Take only five minutes. Your Party has already exhausted all time and taken more time. ...*(Interruptions)*... You speak for five minutes.

SHRI BAISHNAB PARIDA: Sir, I am very thankful to you for allowing me to express my views on this very important issue which we have already discussed for so many hours.

Now, I feel, since a month there is an atmosphere in this country where not only the *dalits,* minorities are feeling unsafe but even the intellectuals, mainly, the progressive intellectuals, artists, poets are feeling-unsafe. The death of Rohith and arrest of Kanhaiya has multiplied this fear and if this fear is allowed to grow, to overlap the whole nation, then, the freedom, the integration, the unity of India will be in danger.

Sir, regarding Rohith's tragic death, my senior colleagues have expressed their views. But one thing is, why this case has occurred? And this is not the only case. In the very university, nine *dalit* students committed suicide. In other universities also this thing is taking place. There are a lot of complaints that *dalit* students and scholars are not getting their scholarships in time and they are leaving the universities and their research work before completing their education. This is happening in this country. Why? If after 67 years of independence, untouchability is not eradicated from the society, if discrimination in the casteist society is not eliminated, how will our friends in the present Government build a progressive and prosperous nation and a democratic society? In a democratic society, this should not happen. Those who are quoting Babasaheb Ambedkar should not just say that he gave the Constitution to us to strengthen our liberty, personal and individual freedom of expression. He fought against the casteist society. He fought against discrimination and exploitation. But can any of the parties here say that they have included eradication of untouchability from Indian society which is a scar on the face of our democratic country in their manifesto and political programme? Can they say it? We are talking about Babasaheb. We are talking about Mahatma Gandhi. This is the centenary year of Gandhiji's return to India. How many people have talked about this? Why are you not discussing untouchability which is still there in the country? We are talking about racial discrimination in America and Africa. But in out-country, in our society, this is happening every day and 25 crore dalits are facing it in their everyday life. You are talking about Gandhiji. You are talking about democracy. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Paridaji, only one more minute.

SHRI BAISHNAB PARIDA: Gandhiji said nobody asked him about his caste. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Paridaji, it is over.

SHRI BAISHNAB PARIDA: This is happening.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: All right.

SHRI BAISHNAB PARIDA: Sir, we have to stop it. On this, I have one-suggestion.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no.

SHRI BAISHNAB PARIDA: The present Government has already set up one Judicial Commission to enquire into the death of Rohit. I also propose like my friends from the BSP that one *dalit* person should be there on the panel of the Commission in order to gain the confidence of *dalits*. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: All right. Your time is over. Now, Shri P.L. Punia. ...*(Interruptions)*... Nothing else is going on record. ...*(Interruptions)*...

SHRI BAISHNAB PARIDA: *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Shri P.L. Punia, you have five minutes. That's all. ...*(Interruptions)*...

SHRI BAISHNAB PARIDA: *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Your Party has taken more than allotted time. Even then I allowed you. ...*(Interruptions)*... Mr. Punia, please start.

SHRI BAISHNAB PARIDA: *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please resume your seat. ...*(Interruptions)*... It is not going on record. ...*(Interruptions)*... Mr. Punia, please start. ...*(Interruptions)*... You have only five minutes.

SHRI BAISHNAB PARIDA: *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Parida, it is not going on record. ...*(Interruptions)*... Please sit down. ...*(Interruptions)*... It is not going on record. ...*(Interruptions)*... Paridaji, it is not going on record. Please sit down. ...*(Interruptions)*... Please resume your seat. ...*(Interruptions)*... It is not going on record. Mr. Punia, you start. ...*(Interruptions)*...

श्री पी.एल. पुनिया (उत्तर प्रदेश): उपसभापति महोदय, यह बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है। ...**(व्यवधान)**... विशेष रूप से पिछले दो वर्षों के दौरान ...**(व्यवधान)**... पिछले दो साल से, खास तौर

*Not recorded.

[श्री पी.एल. पुनिया]

से विश्वविद्यालयों में, युनिवर्सिटीज़ में जो तरह-तरह की घटनाएं हुई हैं, वह बड़ी चिन्ता का विषय है। आज भी बड़े दुर्भाग्य की बात है कि तमिलनाडु में आज कन्याकुमारी डिस्ट्रिक्ट के एक और दलित छात्र ने आत्महत्या की है। वह एक मेडिकल कॉलेज का छात्र था। तो निरंतर इस तरह की घटनाएं हो रही हैं। कोई न कोई परिस्थिति ऐसी बनती है। यह एक महत्वपूर्ण विषय है। खास तौर से हैदराबाद सेंट्रल युनिवर्सिटी में जो रोहित वेमुला की आत्महत्या हुई या institutional murder हुआ, उस संबंध में आज राज्य सभा में एक Starred Question लगा है और 7 Unstarred Question लगे हैं, तो आप इसके महत्व का अंदाजा लगा सकते हैं।

ये घटनाएं केवल हैदराबाद या जेएनयू तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि पूरे हिन्दुस्तान में अलग-अलग जगहों पर भी हैं। कोशिश हो रही है कि केवल एक विचारधारा को समर्थन देकर, सरकार का समर्थन दे कर उसको आगे बढ़ाया जाए और बाकी को जैसे-तैसे करके जो विरोध करेगा, उससे निपटा जायेगा। अलग-अलग विचारधाराएँ पहले से रही हैं और हमारा संविधान उसकी इजाज़त देता है। जो आरएसएस की विचारधारा से जुड़े संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की बात है, वह भी पहले से है, लेकिन इस तरह के टकराव की कोई स्थिति कभी नहीं आई। यहां तक कि पहले जो एनडीए की सरकार थी, अटल जी की सरकार थी, उस समय भी इस तरह के टकराव की स्थिति कभी पैदा नहीं हुई। आज स्थिति बिगड़ गई है। वह इसलिए बिगड़ी है कि सरकार सीधा-सीधा हस्तक्षेप कर रही है। सरकार एक विचारधारा विशेष को समर्थन दे रही है। आप आईआईटी, मद्रास को देख लीजिए। वहाँ Ambedkar Periyar Study Circle केवल दलित छात्रों का संगठन है। सेंट्रल युनिवर्सिटी, हैदराबाद का Ambedkar Students Association भी केवल दलित छात्रों का संगठन है, जेएनयू में भी अधिकांश पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति, अल्पसंख्यक वर्ग के छात्र इसके सदस्य हैं। सरकार के द्वारा तरह-तरह के आरोप, जिनमें देशद्रोह भी शामिल है, लगाये गये। मैं शॉर्ट में बताना चाहूंगा कि मजे की बात यह है कि जो भी सबूत दिए गए, वे फेब्रिकेटेड हैं, फॉल्स हैं और मैन्युफैक्चर्ड हैं। एजेंडा पूरे करने के लिए झूठे सबूत इकट्ठे किए जाते हैं।

मैं सेंट्रल युनिवर्सिटी, हैदराबाद को बताना चाहूंगा। आदरणीय गुलाम नबी आज़ाद साहब ने बहुत विस्तार से उसको बताया है, लेकिन मैं उसमें एक बात और ऐड करना चाहता हूं। कम्प्लेनेंट सुशील कुमार नहीं हैं, जोकि बताया जाता है कि वे घायल हुए थे, बल्कि कृष्ण चैतन्य हैं, जो कि विक्टिम नहीं हैं, वे गवाह भी नहीं हैं, लेकिन उनकी तरफ से कम्प्लेंट है और उनके ऊपर कार्रवाई होती है। जो proctorial team है, उसकी जांच कमेटी है, उसने एक दफा कहा कि उसमें उसका कोई दोष नहीं है, कोई वायलेंट अटैक नहीं हुआ। एक बहुत महत्वपूर्ण बात है कि उस समय वहां का ड्यूटी सिक्योरिटी ऑफिसर सरदार दिलीप सिंह है, उसका स्टेटमेंट बहुत महत्वपूर्ण है। उसने कहा है कि मैं एक बजकर 10 मिनट से दो बजकर 15 मिनट सुबह तक मौके पर मौजूद था और इस तरह की कोई भी घटना नहीं हुई, न ही इस तरह की शिकायत की गई। बाद में कृष्ण चैतन्य जो रिपोर्ट करते हैं, उसमें जो लिखते हैं और कहा गया कि वे तो हॉस्पिटल में एडमिट हैं। ...**(व्यवधान)**... वे प्राइवेट हॉस्पिटल में एडमिट हैं। डा. अन्नपूर्णा, जिस डॉक्टर ने उसे ट्रीट किया था, उसका स्टेटमेंट है कि वह अपेंडिक्स का ऑपरेशन है, यानी अपेंडिक्स का ऑपरेशन हुआ था और जो मारपीट है, उससे वह कोई ताल्लुक नहीं रखता।

दूसरा, मैं एक विशेष रूप से बताना चाहूंगा कि सरकार का इसमें क्या रवैया रहा। देखिए, कोई युनिवर्सिटी है, कुछ गलती हो सकती है, युनिवर्सिटी एडमिनिस्ट्रेशन की गलती हो सकती है, लेकिन उनके ऊपर सरकार यह भी एक निर्णय ले सकती थी कि उन्होंने गलत किया, उनके खिलाफ कार्रवाई करें, लेकिन सरकार पूरी तरह से वाइस चांसलर और उनके डिसीजन के पीछे मजबूती के साथ खड़ी हुई। यहां तक कि एचआरडी मिनिस्टर की प्रेस कांफ्रेंस होती है, हमारे चार-चार, पांच-पांच मिनिस्टस उनके अगल-बगल में होते हैं और उसमें बताया जाता है कि वह कमेटी, जिसमें रिकमेंड किया, उसमें अध्यक्ष दलित था, लेकिन वह दलित नहीं था। दूसरे दिन स्टूडेंट्स ने कहा कि यह गलतबयानी है। कल मंत्री जी ने यह भी बताया कि ...**(समय की घंटी)**... जब आत्महत्या की, तो ...**(व्यवधान)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, please stop. Five minutes are over.

श्री पी.एल. पुनिया: तो उन्होंने सुबह साढ़े छः बजे तक पुलिस और ...**(व्यवधान)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please sit down. ...*(Interruptions)*... Your five minutes are over. ...*(Interruptions)*... Okay, sit down.

श्री पी.एल. पुनिया: दो मिनट ...**(व्यवधान)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no. I did not allow anybody. Please sit down. No two minutes.

श्री पी.एल. पुनिया: उन्होंने सूचना दी ...**(व्यवधान)**... इसका कहां है, पूरा एविडेंस है उसके हिसाब से ...**(व्यवधान)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Your five minutes are over. Please sit down. Mr. D. Raja, you have only five minutes, not even one second more.

श्री पी.एल. पुनिया: राजा जी, बस एक मिनट। ...**(व्यवधान)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no. It is not going on record. ...*(Interruptions)*... What are you doing? Not possible, sit down. ...*(Interruptions)*... You saw I restricted time of everybody.

श्री पी.एल. पुनिया: *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Your party has exhausted its time. It is not my fault. Please sit down. Puniaji, please sit down. Not going on record. Your party has taken more time, is it my fault?

SHRI D. RAJA : My time should start from now.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Start from now. Only five minutes.

*Not recorded.

SHRI D. RAJA: Sir, what is happening in the universities, in the IITs and in the institutions of higher learning is a matter of concern for the entire nation. Parliament should have the concern. We are the law makers. The students, the young people are agitated. Their present is troublesome. Their future is uncertain. After all, young people are our future; and the future belongs to them. As law makers, how we look at their problems. Sir, what happened in the Central University, Hyderabad, what happened in the Jawaharlal Nehru University? What is happening in other universities? There is a design. The design I will explain. Number one; there is discrimination in all institutions of higher learning. It is a social discrimination. We may claim that we have abolished untouchability. The Constitution declares it, but untouchability, discrimination exists in various forms and in modern forms. They exist in the institutions of higher learning. Dalits, Adivasis, Backward Classes students are being discriminated and they suffer. For instance, the Minister can refer to the Thorat Committee's report what happened in the All India Institute of Medical Science (AIIMS). That is one thing.

The other thing is ABVP makes a complaint. Then, the local elected representative of the BJP writes a letter to the Minister and the police action is taken. The Leader of the Opposition has said that the local BJP MP who happens to be a Union Minister writes "Hyderabad University has become a den of casteist, extremist and anti-national politics". Rohith has committed suicide. I had also been to Hyderabad. I said, it was not a suicide. It was a murder. A situation was created, thereby he has committed suicide. Actually it was a murder. I declared it.

In Jawaharlal Nehru University, ABVP makes a complaint. The local MP writes a complaint. He says, "the Jawaharlal Nehru University has become a centre of anti-national and anti-Constitutional activities." That is the letter. The Home Ministry statement says the same thing, anti-national and anti-Constitutional activities." Then, Kanhaiya Kumar had been arrested. He belongs to the CPI. He belongs to All India Students Federation. He belongs to Begusarai about which the Leader of the House has been referring to. He had been arrested. The charges are baseless, absurd and evidences are proved to be false, fabricated, doctored; and he is in prison.

SHRI D. RAJA: Why can't you release him? Why do you make sedition charges against our students, our children? I am' asking you this. The charges of sedition must be quashed. This is Jawaharlal Nehru University. Sir, the question here is as to why this is happening. Mr. Arun Jaitely referred to the Communists. Sir, we are proud; we don't need certificates of patriotism or nationalism from anybody. ...*(Time-bell rings)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: One more minute.

SHRI D. RAJA: Sir, our Party was formed in the year 1925, and the RSS was formed in the same year. We were in the forefront of the freedom movement. My Party had made supreme sacrifices. In fact, we gave the slogan of "Complete Independence" and said that is what we want. Mahatma Gandhi accepted that slogan. The Indian National Congress accepted it. Then, we said, "land to the tiller". Mahatma Gandhi accepted it. We had quarrels with Mahatma Gandhi, but, at the same time, we worked with him. We had quarrels with Dr. Ambedkar but we still worked with him. Mr. Arun Jaitley said that Dr. Ambedkar criticized the Communists and the Socialists. Yes, he answered back to Communists and Socialists. Yes, he did that, but Mr. Jaitely, the Leader of the House, should have told the House that Dr. Ambedkar had never accepted RSS's, idea of India. The RSS's idea of India is *Hindu Rashtra* and *Hindu Raj.* Dr. Ambedkar never accepted that. Then, Gandhi was assassinated in 1948 and the situation was very gloomy and tragic. Dr. Ambedkar could have succumbed to the pressure, but he never did that. He stood up and he said India would remain a democratic republic. That is the Constitution. ...*(Time-bell rings)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. Please conclude. It is nine minutes. ...*(Interruptions)*...

SHRI D. RAJA: Sir, just half a minute more.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no.

SHRI D. RAJA: Sir, now they speak about patriotism and nationalism. There is a constraint of time. Hitler spoke about nationalism. Hitler spoke about patriotism and national socialism. The result was fascism. Now, what we are witnessing today is nothing but an Indian variant of fascism emerging and. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Over. ...*(Interruptions)*... Over. ...*(Interruptions)*... Now, take your seat. ...*(Interruptions)*...

SHRI D. RAJA: We will have to fight this.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Over. But you are ending your speech with the name of Hitler. You should have ended with the name of Gandhiji. ...*(Interruptions)*...

SHRI D. RAJA: Sir, I said it, but you did not allow. I referred to Mahatma Gandhi several times. ...*(Interruptions)*... Since you have mentioned Mahatma Gandhi, if somebody wants to question the patriotism of Communists and ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No. Nobody is questioning that. Why are you saying that?

SHRI D. RAJA: Sir, they should question Mahatma Gandhi. If Mahatma Gandhi is anti-national ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no. Nobody is questioning the patriotism of Communists. Sit down.

SHRI D. RAJA: Sir, if Mahatma Gandhi is anti-national, I am anti-national too. If Netaji is anti-national, I am anti-national too.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no. Nobody is saying you are anti-national. Why do you speak like this?

SHRI D. RAJA: Sir, this is what we should ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, the hon. Minister. ...*(Interruptions)*... You may stand up and speak, otherwise, he would go on speaking like this. It is very difficult to control Raja!

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, you provoked him. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes, I provoked him! Really. After all, he is my friend. Hon. Minister, please.

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Sir, in my four-and-a-half years in this House, if records reflect correctly, I was elected as one of the youngest female Members by any political party. When I came to this House, what excited me most was the fact that I would meet political stalwarts, many who would not see, ideologically, eye to eye — and just to reaffirm the same, the minute I started speaking, Sitaram Yechuryji said, 'Oh!' ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He was admiring you!

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Sir, somebody who has been called anti-national today. ...*(Interruptions)*...

SHRI SITARAM YECHURY: Sir...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: I am not yielding. I am not yielding, Sir. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: She is not yielding.

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Sir, as somebody who seeks to give 'an answer, and as somebody who has patiently heard every voice today...

SHRI SITARAM YECHURY: You are still young. ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: As somebody who has heard every voice today, I also beg the kind permission of Shri K.C. Tyagi, to use my finger and point and lift and do as I please freely. ...*(Interruptions)*... I beg of everybody's indulgence because I heard everybody exhaustively. ...*(Interruptions)*... Mr. Yechury quoted Macbeth. Let me declare, there are many who called me an *unpadh mantri*. I agree, I don't have an illustrious career.

SHRI SITARAM YECHURY : I never cast anything.

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI : I did not point you.

SHRI SITARAM YECHURY : I did not say anything. ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI : Let me speak. ...*(Interruptions)*... Let me speak. ...*(Interruptions)*... And, I do not claim that I am as erudite a speaker as Mr. Yechury. But, since people blame me for having a flair for drama, let me quote from Macbeth and say, "'Fair is Foul, Foul is Fair'. That is how Macbeth began indicating that nothing is as it seems. My senior colleague ideologically on a different plateau, speaks about and rightly so aggrieved that someone would seek to claim that they are some kind of witches. And, in Macbeth, Banquo's reaction with regard to one of the happenings in the entire plot, "Said what? Can the Devil Speak True?" I say today, Sir, that much has been quoted from many papers. I have it, at my disposal, a few which I would put in front of this august House through you. I have been cautioned and rightly so that Smriti don't get agitated, do it as calmly as possible and I thank my seniors across party lines who advised me so for they care for my health. Why do I say and begin with Macbeth's lines, 'Fair is Foul and Foul is Fair', for the young who watch us today know that though we duel in this House politically, they also challenge not only establishments, but also established political thoughts in this country. They challenge not only those in the Government, but also those in Opposition as they deem fit, as is their right. A child passes away in Hyderabad. I publically pay homage to him. I publically give condolences and rightly so to his family. What I do not ever publically disclose is that I also speak to his mother. I quote from that child's last notes, He says, The value of a man was reduced to his immediate identity and nearest possibility, to a vote' and, Sir, dejectedly so, we identified him as a scholar, yes, but also there are many who can be accused of identifying him as a vote bank. This is the bitter truth that confronts us today. There are some senior Members in this House, I think, Azad Saheb spoke and quoted from a letter that he received from that child's family. Today, Sir, I have in my hand, what Rohith himself said on his facebook page about an esteemed leader in this House who spoke with much anguish about this child. That leader,

[Shrimati Smriti Zubin Irani]

Sir, is Mr. Yechury. Rohith's words on the 28th November, 2015, "Mr. Yechury talking about reservations in private sector at the Constitution Day Session is funny, to say in politest way. When he was delivering a talk in HCU — which is Rohith's University — he said that if his party finds eligible Dalit leaders, they would be sure taken into CPI(M) Politburo, when questions were raised at the absence of Dalits in it for 51 years now. While he said it, he must have pronounced the entire psyche of the party. There is still a silent 'search' of talent in Dalits according to him. And now he wants reservations in the private sector. I am of this doubt that — I am sorry, I am quoting Rohith —Yechury sees his party as a "private' agency." My humble apology to Mr. Yechury. I am quoting Rohith. These are not my words. "He is waiting until this amendment is made so that he would convince his party to take Dalits into leadership, or he is just of the feeling that private sector will be damaged automatically if once industries are compelled to take Dalits into their teams. While the Comrades are having orgasms hearing him speaking of reservations in private sector, the common Dalits are upset with the track record of the advocate. When was the last time we have seen CPI (M) arguing for something and achieving it successfully at the national level? This is the problem when people like Yechury talk about reforms economically. I hope Comrades would have at least a session dedicated to understand what Marx meant when he borrowed the sentence 'From each according to their ability, to each according to their need', for his famous book. It is a deliberate, immodest blunder from the left side for remaining blind to the need of Dalit leaders in the Indian society. If the Communist parties are allegedly for the downtrodden they say, then why do they have Women Wing, Dalit Wing and Minority Wing?" This is a child who speaks to us about a polity. I know that aspersions were cast, and Azad Saheb, very worriedly spoke even about the Warden. What did Rohith say about the Warden on the 23rd of October, 2015? He said, "SFI, HCU trying to portray Chief Warden as the main culprit for their unexpected embarrassment as casteist. They should avoid trying to pitch Dalits against Dalits." The Warden who was referred to, an academician, who rose to the position of Chief Warden is also a Dalit. My humble appeal today in this House is this. There are many in the Indian polity who might have begun their journey from ABVP and today possibly are in a political organization, ideologically absolutely different from where they began their student journey as a politician. It is on record that there are many members of the SFI who are members of the Congress Party today. But what are we as a united House telling this generation of ours, which does not only indulge in hearing our debate, our discussion, our deliberation and suffices? It leverages technology, understands all points

of view and reaches a conclusion suitable to its own. Do we say to them that if you are a Dalit child, belonging to an ideology not favourable- to us, you can die for all we gare. To substantiate that I read' today the mother of a Dalit child writing, "My daughter — I don't name the girl — is fighting for her life — in a place I shall not name now — after a suicide attempt. The SFI Union Secretary was harassing my daughter for a long time." This girl happens to be an ABVP member.

SHRI SITARAM YECHURY: Which is the place?

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Sir, it is Kerala. ...*(Interruptions)*... It is Kerala. Please allow me to speak. I know Mr. Yechury wants to interject, but I am not yielding. Why am I saying this today? Anandji, I totally agree with you. My angst is this, Sir, that for hours and hours and days and days I listened and listened and listened ...*(Interruptions)*... a context which was put through that our children to be protected only if they belong to one ideology and not the other.

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, what was the debate about?

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Sir, let me come to the point where the debate is. The issue is of an FIR in a State which is not governed by the BJP, an FIR which was filed on the 4th of August, much before anybody wrote any letter. What does the FIR say? The FIR says that 40 people unlawfully assembled walked into a hostel room ...with fists and blows to abdomen, stomach with dire consequences that they will burn this particular student. It is an FIR ...*(Interruptions)*... I am discussing the issue at length, Mr. Yechury. ...*(Interruptions)*...

SHRI SITARAM YECHURY: I can also say RSS people raping, gang-raping ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Sir, I am not yielding. ...*(Interruptions)*... I am not yielding, Sir. ...*(Interruptions)*... Let me finish. ...*(Interruptions)*...

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, is that what we are discussing? ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: The issue at hand is this. ...*(Interruptions)*... The issue at hand is this. ...*(Interruptions)*... Are we to divide our students and academicians? ...*(Interruptions)*... I think that is the case and the accusation on me is this. ...*(Interruptions)*... This morning I was accused. ...*(Interruptions)*... History is being distorted. ...*(Interruptions)*... I am not yielding, Sir. ...*(Interruptions)*...

श्री तरुण विजयः आपको सच्चाई सहन नहीं हो रही है? ...**(व्यवधान)**... सत्यमेव जयते ...**(व्यवधान)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: She is not yielding. ...*(Interruptions)*... However, focus on the point mentioned here. ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Sir, I heard everybody speak. ...*(Interruptions)*... Yechuriji speaking from Krishna's name. ...*(Interruptions)*... Netaji, my request is, I am speaking on the issue at hand and I am answering questions which are on hand ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That is the point. ...*(Interruptions)*...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Sir, the Minister also is knowledgeable. She knows how to reply also. ...*(Interruptions)*... Others need not interrupt. ...*(Interruptions)*...

SHRI SITARAM YECHURY: Reply to what? ...*(Interruptions)*...

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री धर्मेंद्र प्रधान): सच कड़वा होता है। ...**(व्यवधान)**... सच कड़वा होता है और हम बोलेंगे। ...**(व्यवधान)**... सच नहीं बोलना, यह ...**(व्यवधान)**... सच कड़वा होता है। ...**(व्यवधान)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. ...*(Interruptions)*... Please sit down. ...*(Interruptions)*... Minister, please continue. ...*(Interruptions)*... But try to focus on the point raised here. ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: I am going to reply many questions and issues posed to me here today. Rightfully so, the many questions which are posed to me, I answer today though Mr. Mungekar doesn't want to hear what I have to say. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please sit down. ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: He speaks about policies, programmes. Let me reiterate, I answer every question that was posed to me today. My grateful thanks to Azad Saheb and I am genuinely grateful for there are many anomalies, Sir, that you corrected in your speech today. There was a burden I carried on my shoulders for there was a momentum built as though I personally am writing letters every day to a University. My grateful thanks for you correcting that anomaly at least and acknowledged that it is not I who wrote. Azad Saheb spoke about the fact that he first came to Delhi in the year 1977.

SHRI GHULAM NABI AZAD: That was not for you. वह आपकी पार्टी के लिए था।

श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानी: सर, मैं दुनिया में 1976 में आयी।

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Azad Saheb spoke about कश्मीर में गिरती हुई बर्फ and he was so eloquent that while he spoke, I could imagine that snow and wonder.

8.00 P.M.

How many Kashmiri Pandit families saw mat snow last in their homeland? Azad Saheb, I very honestly thank you for correcting two-three things. You named certain officers today, who wrote reminders. One of those officers is rightfully seated in the Officers' Gallery. Ever since the debate enraged this country, I, as a Minister, could have politically strategize and come out and say I never wrote the letter and I would have been right that my officer wrote the letter in my Ministry. I had Hanumantha Raoji, who said I just about acknowledged his letter. No, Sir. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please listen. ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Let me finish. ...*(Interruptions)*... Let me finish. ...*(Interruptions)*... So, this is the letter that I acknowledge on the 3rd of December, 2014, to you. And rightfully, Sir, he says, I did not receive any reply after that. That is because he kept on writing and saying ...*(Interruptions)*... Sir, let me finish. I have heard everything. ...*(Interruptions)*...

SHRI GHULAM NABI AZAD: Ministers write only to the Chief Minister, and at the most, Minister. Minister does not write to the Officers. ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: I am quoting a letter that I have written to hon. Member of Parliament which acknowledges that I have received his letter. ...*(Interruptions)*... आज़ाद साहब ने कहा कि कैसे escalate हुआ मामला अंडर सेक्रेटरी से लेकर, डिप्टी सेक्रेटरी से लेकर, ज्वाइंट सेक्रेटरी तक। मैं बताना चाहती हूं कि हनुमंत राव जी के पत्र के लिए भी अंडर सेक्रेटरी, डिप्टी सेक्रेटरी और ज्वाइंट सेक्रेटरी ने पत्र लिखा। वही ज्वाइंट सेक्रेटरी जो आज ऑर्फिसस गैलरी में बैठा है। ...**(व्यवधान)**...

श्री अश्क अली टाक (राजस्थान): उनका नाम क्यों क्वोट कर रही हैं? ...**(व्यवधान)**...

श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानी: मैं चाहती ...**(व्यवधान)**...

श्री वी. हनुमंत राव: उपसभापति महोदय ...**(व्यवधान)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, Mr. Hanumantha Rao, please. Let her reply. ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Nobody wants to hear what I have to say. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: . Mr. Hanumantha Rao, please sit down. ...*(Interruptions)*...

श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानी: हनुमंत राव जी, आप चाहते हैं, तो एक-एक मांग पढ़ सकती हूं। ...**(व्यवधान)**...

श्री नीरज शेखर: आप गैलरी में बैठे हुए अफसरों को मेंशन मत करिए। ...(व्यवधान)...

श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानी: लेकिन मैं ऑफिसरों को यहां पर नुमाइश के नाते पोलिटिकली यूज़ नहीं करती। ...(व्यवधान)... एक सेकेंड। सर, मेरा एक आग्रह है। ...(व्यवधान)... मुझसे कहा गया कि नारायणसामी जी का लेटर पढ़ो। ...(व्यवधान)... What is the letter which officers have written? ...*(Interruptions)*...

श्री नीरज शेखर: ज्वाइंट सेक्रेटरी कौन है, जरा उसके दर्शन तो करवाओ। ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: आप सुनिए। ...(व्यवधान)...

श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानी: मॉइनारिटी Community का है। आप मॉइनारिटी कमीशन के अफसर के दर्शन करोगे? ...(व्यवधान)... I will not name that minority member officer. ...*(Interruptions)*...

श्री नीरज शेखर: आप ज्वाइंट सेक्रेटरी के दर्शन तो करवाओ। ...(व्यवधान)...

श्री मुख्तार अब्बास नक़वी: सर, यह तरीका ठीक नहीं है। ...(व्यवधान)... यह तरीका ठीक नहीं है। ...(व्यवधान)... ऑनरेबल लीडर ऑफ द अपोजिशन, सीताराम येचुरी जी, हमारी आप सबसे रिक्वेस्ट है कि ...(व्यवधान)...

श्री जावेद अली खान: सर, मेरा प्वाइंट ऑफ ऑर्डर है। ...(व्यवधान)...

†جناب جاوید علی خان : سر، میرا پوائنٹ آف آرڈر ہے ۔۔(مداخلت)۔۔

श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानी: औरतें कैसे विहेव करें, अब ये डिसाइड करेंगे? ...(व्यवधान)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Hon. Members, please, ...*(Interruptions)*... Please sit down. Let her complete. ...*(Interruptions)*... I will allow you. Now sit down. ...*(Interruptions)*...

श्री अनिल माधव दवे: ये चन्द्रशेखर जी के बेटे हैं। ...(व्यवधान)...

श्री नीरज शेखर: आप पिता जी का नाम मत लीजिए। ...(व्यवधान)... क्या आप पसंनल होना चाहते हैं? ...(व्यवधान)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please listen to me. ...*(Interruptions)*... I will allow you. Please sit down. ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Do they want to teach me how I should behave? It is a deliberate attempt. ...*(Interruptions)*...

---

†Translitration in Urdu script.

श्री जावेद अली खानः सर, मेरा प्वाइंट ऑफ ऑर्डर है। ...**(व्यवधान)**...

†**جناب جاوید علی خان :** سر، میرا پوائنٹ آف آرڈر ہے ۔۔(مداخلت)۔۔

MR. DEPUTY CHAIRMAN: My suggestion is this. ...*(Interruptions)*... Please sit down. What are you doing? ...*(Interruptions)*... इनको बैठाइए। ...**(व्यवधान)**... नक़वी जी, इनको बैठाइए। ...**(व्यवधान)**...

No.1, hon. Minister is replying. If she is taking any name in this House, I tell you, after her reply, I can allow those people to give their explanation. If she is taking any name in this House, I will allow that Member to give a personal explanation. Therefore, listen to her. No.2, the Minister should not refer to any name who is not there in this House, who cannot come and defend. ...*(Interruptions)*...

श्री जावेद अली खानः सर, मेरा प्वाइंट ऑफ ऑर्डर तो सुन लीजिए। ...**(व्यवधान)**...

†**جناب جاوید علی خان :** سر، میرا پوائنٹ آف آرڈر تو سن لیجئے ۔۔(مداخلت)۔۔

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Sir, I am not taking any name. He is pointing and gesticulating at me. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He has a point of order. What is your point of order?

SHRI JAVED ALI KHAN: There has been a practice which was conveyed to us by the Secretary-General himself that no person, sitting in the Gallery, shall be mentioned by any Member. Neither will they be mentioned nor will they be addressed. And hon. Minister... ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That is...

SHRI JAVED ALI KHAN: Sir, you can clarify.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no; I understood it. She only said, 'Secretary is sitting there'. That is okay. She is not referring...

SHRI JAVED ALI KHAN: She cannot refer to a person sitting in the gallery.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no; she has not referred like that. No, no; don't take it that way. She only said that officials are sitting there. That is natural.

श्री मुख्तार अब्बास नक़वीः अगर mention किया तो उसे expunge कर दीजिए। ...**(व्यवधान)**...

†Transliteration in Urdu script.

SHRI JAVED ALI KHAN: She is saying. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Did she mention the name? She did not mention the name. ...*(Interruptions)*... Anyhow, you sit down. ...*(Interruptions)*... Minister may please continue.

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Sir, I am continuing. My request is this. In the questions and speeches of hon. Members, officers were mentioned by name. I do not mention them by name here. I am not mentioning them in particular pointing out. It is a Member who is gesticulating at me and saying, खडा करो, उसे अभी ...*(Interruptions)*... Sir, that is the issue.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You please proceed. ...*(Interruptions)*... You address the Chair. ...*(Interruptions)*... Hon. Minister may address the Chair. Don't look there. You address the Chair and proceed.

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Officer is writing, "Please refer to Hanumantha Raoji's letter regarding corruption and irregularities in University of Hyderabad. Facts, comments called for this office, dated so and so...." He is addressing it to the Vice-Chancellor and talks about five reminders which have gone and no response has been received. I would appreciate if you could look into this personally. Get the facts at the earliest. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, you are not allowed. ...*(Interruptions)*... I told you I will allow you in the end to explain.

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Is it a deliberate attempt so that I don't speak in one flow like yesterday? To enable a Minister to submit a reply to the hon. MP. This is a template that every officer sends reminders on, and yesterday in another debate, I quoted Narayana Swamyji's letter. Azad Saheb rightly said, क्या वही चीज है जिस पर आप आधारित कर रही हैं। आज़ाद साहब, मुझे तो छोड़िए, Manual of office procedure, जोकि ऑर्फिसस पर लागू होता है, 1950 के दशक से जो चल रहा है, उसमें ऑर्फिसस को कहा गया है कि वे correspondence of Members of Parliament का कैसे जवाब दें और यह भी उल्लेखित है कि 15 दिनों में acknowldge करो और 15 दिन बाद उसका जवाब भी भेजो। It is incumbent upon the officer. So, he is fulfilling his responsibility, and rightly so, and I do not grudge that. There is a charge on me and Azad Saheb again said that there is an attempt, and he quoted two references. One is *Vishwabharati* Vice-Chancellor remover. The second is, he speaks about Delhi University FYUP rollback. I haven't in this august House today, Sir, and I shall not name Shri Yechury because he spoke to me on another... ...*(Interruptions)*...

SHRI SITARAM YECHURY: You named me. You said, "I won't name Mr. Yechury." ...*(Interruptions)*... What does that mean?

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: It is with regard to the case that he wrote to me about, but I have Pradipji from the Congress Party, Ritabrato from the Left, who very rightly said, This is a Vice-Chancellor who has been appointed, not taking into cognizance, that he was conclusively identified for sexual misconduct, is indulging in malpractices in a university established by Rabindranath Tagore. Kindly ensure there is due process followed and this Vice-Chancellor removed for misconduct.' Ex-judge was appointed. Law took its own course. The hon. President of India removed the Vice-Chancellor. Hence, it is for you, Sir, to give an indication that I as a *Sanghi* with big horns on my head removed a Vice-Chancellor is a bit of an anomaly and an incorrect statement. I humbly submit due process of law was followed. It is not something that I did happily. For a university which was established by Rabindranarth Tagore, nobody would want such a Vice-Chancellor, firstly, to be appointed after proven charges of sexual misconduct and the appointment was done by my predecessor and later I have the infamy of sacking the first ever Vice-Chancellor in the history of this country.

You spoke about the FYUP rollback. The four year programme took place in the Delhi University. I am compelled to answer these questions because they are on record. Sir, 50,000 students enrolled in 40-41 courses in the first year. They did not have the sanction of the hon. President of India who is the Visitor of the university. I was faced with a challenge that in a course where 50,000 students enrolled and the degrees that they get after four years would be absolutely legally untenable. I had a choice to step in and save those children irrespective of the ire that I would face from certain quarters. Otherwise, after four years, these 2 lakh children — along with them, every year, 50,000 getting enrolled — will be on the streets of the capital saying, 'हमारी डिग्री का कोई मोल नहीं है।' So, that is my crime.

You spoke about political patronage that, suddenly, the ABVP gets. I would humbly submit that I have evidence to political patronage which I have never leveraged before, politically, in any discourse. The Vice-Chancellor of Haryana Central University, Shri Moolchand Sharma, appointed on the 28th February, 2009, was DUSU and NSUI President. My predecessor nominated, on to the Board of the National Book Trust, NSUI President ex-officio. I also say this. Punia Sahab today spoke about the need to fight for the rights of the deprived. I would like to say, in March, 2014, the SC/ST Teachers Forum of the Delhi University filed a case in the High Court saying ...*(Interruptions)*... I am answering everybody's charges. This is my democratic right. It might not be a right that

[Shrimati Smriti Zubin Irani]

somebody might want to support right now given the facts that are coming to the fore. Mr. D. Raja is nodding his head, because he knows about the case. Teachers approached the High Court, because the Delhi University, Sir, refused to apply reservation policy of India when your Government of the Congress Party was at the Centre! We tried to provide as much support as possible to ensure that reservation policy, as sanctified by the Government of India, by this very House and Parliament, is applicable. There are many who have said so many things. Here, again, I will quote Mr. Yechury, and rightly so. He said that history is being distorted and all *Sanghis* are being put in the ICHR. I have the distinct privilege of appointing to the Indian Council of Historical Research a lady by name Smt. Purabi Roy. Shri Purabi Roy is a renowned scholar on Netaji and INA history ...*(Interruptions)*... and India-Russia relations. What would, possibly, fascinate my Left supporter friends is this. Sir, she is the wife of a Rajya Sabha Member of the Communist Party. If there was an intention to completely saffronize education, why would I personally pick up a scholar who is ideologically and politically not aligned to me or my organisation?

In so far as the JNU case goes, Tyagiji very enraged and said 'आज तक पुलिस जेएनयू के कैम्पस में नहीं घुसी।'

श्री के.सी. त्यागी: इमरजेंसी को छोड़कर।

श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानी: वह भी गलत है। Sir, the hon. Leader of the House gave an answer that it had happened in 1983. But, it is still fresh that in an incident in 2009 police did enter the campus and *lathi* charged students. And, I don't know where Tyagiji was then. But, no questions were raised! Now, there is a question and that Mr. Sharma raises, seated on his chair, that this was with the permission of the ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Hon. Minister, how much more time you need? It is ...*(Interruptions)*... Only ask him. ...*(Interruptions)*...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Sir, let them decide whether they want the answer or not. Simple. If that is the wish ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That is my question.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Sir, if ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: This is my question ...*(Interruptions)*... because there is a Bill. ...*(Interruptions)*...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: No, No. Chair also favours ...*(Interruptions)*... Everybody, whoever has given the name is allowed to make their points. If they don't want the answer, they could say in one line ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Venkaiahji, all what I asked is how much more time she needs because there is a Bill to be taken up today. So I wanted to know. That is all. ...*(Interruptions)*... I never stopped her. ...*(Interruptions)*...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Time restriction is only for the Ministers, not to others! ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, I didn't control. I said 'how much more time you need.' ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: I speak extempore. ...*(Interruptions)*... I don't read from written speeches. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I only asked how much more time you need. ...*(Interruptions)*... Don't interpret it as controlling. It is only a question.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: I never used the word 'controlling'. Who is controlling the House, everybody knows.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I don't know who is controlling.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Sir, I saw the treatment meted to a Minister, young Minister, a woman Minister, and ...*(Interruptions)*... Is it the way? ...*(Interruptions)*...

SHRI SITARAM YECHURY: What treatment? ...*(Interruptions)*... We are listening to her respectfully. ...*(Interruptions)*... All that I have objections to also, even then we are listening to her. So, what is the treatment you are talking about, Sir? ...*(Interruptions)*... Very excellent, lovely treatment, we are giving.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Very good.

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: How nice it to be patronised by a stalwart gentleman.

SHRI SITARAM YECHURY: Not patronising, Madam.' It is your right. Speak.

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: So let me come to the crux of the matter. Javed Bhai has been a student leader in his heydays. He passionately spoke about his experiences and conjoined it with those of a boy called, Kanhaiya Kumar. I am compelled, Sir, to read a few things today. To set the records straight, for there is an accusation that wrongfully महमूद की टोपी अहमद पर है। So, let me read, Sir. ...*(Interruptions)*... आज़ाद साहब, पता नहीं किसकी टोपी किसके सिर है, मैं बिना टोपी की हूँ।

SHRI GHULAM NABI AZAD: That was the video of one and voice of another.

श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानीः ऐसा है कि यह 10 फरवरी, 2016 का जेएनयू के रजिस्ट्रार का प्रमाणित, stamped document है, जो मैं पढ़ रही हूँ and I have three of those varied documents here, जिसमें आज बहुत कुछ पढ़ा गया। 10 तारीख का जो डॉक्युमेंट है, क्योंकि जावेद भाई ने एक डॉक्युमेंट निकाला, इस पर तो जेएनयू प्रशासन का ठप्पा है। इसमें कन्हैया का भी नाम है, शेहला राशिद का भी नाम है, रामा नागा का भी नाम है। Apart from everything else they have said, thereby reiterating the authority that the Indian State has shown about Afzal Guru, it says that the execution of Afzal Guru was a nervous attempt by the Congress Government. This is a signed document with the names of those students that I am compelled to say today. It also speaks amongst other things, about a public meeting that they have the right to hold called 'Mahishasur Martyrdom Day'. What is 'Mahishasur Martyrdom Day'? ...*(Interruptions)*... Are you going Sitaramji?

SHRI SITARAM YECHURY: Nature's call is not anti-Indian. Madam. ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: I am not charging you. How am I presumed to know whether it is nature's call or mere call? But let me now say ...*(Interruptions)*...

SHRI SITARAM YECHURY: How can I defy you except for nature's call?

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: What a lovely conversation to have with the ladies, Sir. Bravo!

SHRI SITARAM YECHURY: What are you describing? Please answer the simple question.

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: While I am answering question with regard to the facts that these students named in this document stamped by the University, namely, Kanhaiya Kumar, Shehla Rashid. Rama Naga, speak about the nervous attempt by the Congress Government, not ours, but nontheless the Government of India, with regard to the execution of Afzal Guru, it also speaks about an interesting phenomenon, according to these students called 'Mahishasur Martyrdom Day'. What is 'Mahishasur Martyrdom Day'? And I read this. I have begged the forgiveness of my God, but I am reading this. For those who say we stifle free speech, this is the free speech posted on the 4th October, 2014. It is a condemnation of this Mahishasur Day by who all? The SC, ST, OBC and minority students. They were brutally assaulted, according to them, by Left goons. Javed

Bhai spoke about everybody coming on one forum. They came on one forum. What did they come on one forum for?

SHRI JAVED ALI KHAN: When did they come on one forum?

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: I am talking about a post which is,...

SHRI JAVED ALI KHAN: I am talking about 9th February.

श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानीः जावेद साहब, बोलने तो दीजिए, सुन तो लीजिए। जब एक फोरम पर आते हैं, बात करते हैं, तब आपको तकलीफ है। यह तो डॉक्युमेंटरी एविडेंस है कि एससी, एसटी हो, माइनॉरिटी का बच्चा हो, दलित बच्चा हो, ओबीसी बच्चा हो, सब एक मंच पर आए। किस लिए आए? वह पढ़ने दीजिए। They said, "They were threatened, beaten, clothes torn, dragged inside beaten, glass broken". They appealed, "We are not politically in nature, but we are assaulted". They appealed, they said, there is an attempt to defame our culture. "We are thrashed", they say. Why are they thrashed? They are thrashed because they raised their voice against Mahishasur Day. Mahishasur Day, and I describe, read out, * Why I say this?

SHRI TAPAN KUMAR SEN: Where from are you reading it? ...*(Interruptions)*...

एक माननीय सदस्यः डूब मरना चाहिए, डूब मरना चाहिए। ...**(व्यवधान)**...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Sir, I am not yielding. ...*(Interruptions)*...

I am reading out from all documents I have received from the university and students, Sir. And as HRD Minister, these papers I have access to, I am reading today. I will now. ...*(Interruptions)*...

SHRI TAPAN KUMAR SEN: What is that document? ...*(Interruptions)*...

SHRI ANAND SHARMA: This is very serious, Sir. ...*(Interruptions)*... This will raise religious passions. Why has such a document been read even if somebody has it. It is highly objectionable. ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: I am reading from a paper signed by these students. ...*(Interruptions)*...

SHRI ANAND SHARMA: Sir, it must be expunged. It should not be read here. ...*(Interruptions)*... What is happening here, Sir? It must be expunged. It cannot be part of the record. ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: It is signed by these students who spoke it out on Mahishasur Day. ...*(Interruptions)*... It is unpalatable to you today.

*Expunged as ordered by the Chair.

श्री आनन्द शर्माः यह आज तक हाउस में नहीं हुआ, यह हाउस में क्यों बताया जा रहा है? ...**(व्यवधान)**...

श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानीः आपने कहा कि प्रूव करिए। दस्तावेज़ों को प्रमाणित करिए, ...**(व्यवधान)**... टेबल पर रखिए। ...**(व्यवधान)**... मैं प्रूव कर रही हूं। ...**(व्यवधान)**...

SHRI ANAND SHARMA: People have written about Virgin Mary, people have written about Prophet Mohammed. We have never got into reading those in this House. What is happening here?

श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानीः सब साथ में आया है। ...**(व्यवधान)**... मैंने प्रूव किया है। ...**(व्यवधान)**...

SHRI TAPAN KUMAR SEN: What is the source of your document?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, please. ...*(Interruptions)*...

SHRI ANAND SHARMA: This is too much. ...*(Interruptions)*... We have objection to that. ...*(Interruptions)*...

SHRI TAPAN KUMAR SEN: What is the authenticity of that paper?

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI : * What has been said by Rishi Bankim? Bango-Janani, the mother of Bengal, is Devi Durga. When our children go out of home, we say "Durga, Durga", we will meet again. ...*(Interruptions)*...

SHRI ANAND SHARMA: Now, this has to be expunged. Now, we are not interested. ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: * And you are saying about Durga... ...*(Interruptions)*.... and you think we have to tolerate this? ...*(Interruptions)*...

SHRI ANAND SHARMA: This is not the subject matter of discussion. ...*(Interruptions)*... It will set dangerous trends. ...*(Interruptions)*... If you allow this, then, tomorrow, somebody will read what they have written about Prophet Mohammed and Virgin Mary. Shall we allow this?

श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानीः मुझसे कहा जा रहा है कि प्रूव करो, प्रूव करो। ...**(व्यवधान)**...

SHRI ANAND SHARMA: Every religious leader or deity has been derogatively referred to by some people, some organisations, some atheists. Shall we allow reading all of them? ...*(Interruptions)*... You will have a war in this House then. ...*(Interruptions)*... This is highly objectionable. ...*(Interruptions)*... This we cannot accept even. ...*(Interruptions)*...

* English translation of Bengali portion

श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानीः मुझसे कहा जा रहा है कि प्रमाणित करो। ...**(व्यवधान)**...

श्री आनन्द शर्माः यह क्या हो रहा है? ...**(व्यवधान)**...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI : These books were commissioned by the previous Government, Sir. ...*(Interruptions)*... What did they commission? I will read it again. ...*(Interruptions)*...

श्री आनन्द शर्माः यह क्या हो रहा है? ...**(व्यवधान)**... क्या अब आप सब कुछ पढ़ेंगे? दूसरों के बारे में किसने क्या-क्या कहा, कब कहा, क्या अब वह सब पढ़ा जाएगा? ...**(व्यवधान)**...

श्री मुख्तार अब्बास नक़वीः ये सिर्फ सुनाना जानते हैं, सुनना नहीं जानते। ...**(व्यवधान)**... आपने जो सुनाया है, आपको उसका उत्तर भी तो सुनना पड़ेगा। ...**(व्यवधान)**...

श्री आनन्द शर्माः अब आप अच्छे दिनों की बात भूल जाइए। ...**(व्यवधान)**... कल से यहां पर यही होगा कि किसने किस देवता के बारे में क्या कहा? ...**(व्यवधान)**... आप क्या चाहते हैं? ...**(व्यवधान)**... क्या आप दंगे चाहते हैं? ...**(व्यवधान)**...

श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानीः ये स्टैप्ड डॉक्युमेंट्स हैं। ...**(व्यवधान)**... When we read about Shivaji, we feel a sense of guilt. ...*(Interruptions)*... When we read about Shivaji, we feel a sense of guilt. ...*(Interruptions)*... It also says that ...*(Interruptions)*... These are the books which are not commissioned by me. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Hon. Minister, first you tell where you are reading from. Then, you have also to authenticate, if you read that. ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: I have just shown the document. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Where are you reading from? ...*(Interruptions)*... You authenticate it. ...*(Interruptions)*... Where are you quoting from? ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Books were commissioned...*(Interruptions)*... And, I authenticate it. I am reading from the text. ...*(Interruptions)*... And, if you like, I will lay it on the Table of the House. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: First you tell from where you are quoting from. ...*(Interruptions)*... Secondly, you authenticate it. ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Sir, this is authenticated by the university. ...*(Interruptions)*... Yes, I am authenticating, I have got university documents. ...*(Interruptions)*...

श्री मुख्तार अब्बास नक़वीः जो डॉक्युमेंट्स इन्होंने पढ़े थे, चाहे सीताराम येचुरी जी ने पढ़े थे या आनन्द शर्मा जी ने पढ़े थे, क्या उनको ऑथेंटिकेट करवाया था? ...**(व्यवधान)**... आपने जो पढ़ा था, क्या उनको ऑथेंटिकेट किया था? ...**(व्यवधान)**...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: If I read the books that they commissioned in Maharashtra ...*(Interruptions)*... If we read Shivaji, we feel a sense of guilt. ...*(Interruptions)*...

SHRI ANAND SHARMA: Let this House listen. Tomorrow, if Members and Ministers bring in any derogatory reference to one Prophet or one God or Christ or others, what will happen to this House? ...*(Interruptions)*... Somebody has said it. ...*(Interruptions)*... You will start reading everybody's extract. ...*(Interruptions)*... This is the religion! ...*(Interruptions)*...

SHRI ANAND SHARMA: This is not acceptable. ...*(Interruptions)*...

श्री मुख्तार अब्बास नक़वीः आपने जो डॉक्युमेंट्स दिखाए हैं, क्या आपने वे डॉक्युमेंट्स ऑथेंटिकेट किए हैं? ...**(व्यवधान)**... आपने सिंगल डॉक्युमेंट भी ऑथेंटिकेट नहीं किया है। ...**(व्यवधान)**... आप पहले अपने दिखाए गए सब डॉक्युमेंट्स को ऑथेंटिकेट कीजिए, उसके बाद बात होगी। ...**(व्यवधान)**... आपको यह अधिकार नहीं है। ...**(व्यवधान)**... दरअसल आप सुनना ही नहीं चाहते हैं। ...**(व्यवधान)**... आप सच्चाई को सुनना ही नहीं चाहते हैं। ...**(व्यवधान)**... आपको सच्चाई हजम नहीं हो रही है। ...**(व्यवधान)**... सच्चाई आपको सुननी पड़ेगी। ...**(व्यवधान)**...

SHRI ANAND SHARMA: What are you doing? ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: On 3rd of February, 2011 ...*(Interruptions)*... I am reading from the book authenticated and commissioned by the Government of India. ...*(Interruptions)*...

श्री धर्मेंद्र प्रधानः यह सत्य है। ...**(व्यवधान)**... यह सत्य है और सत्य कड़वा होता है। ...**(व्यवधान)**... यह सत्य है। ...**(व्यवधान)**...

श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानीः क्या वे सारे देवी-देवताओं का अपमान करने जेएनयू गये थे? ...**(व्यवधान)**... तब उन्होंने कहा कि इस केस में इसको भी डालो। ...**(व्यवधान)**... दुर्गा को क्या मानें? ...**(व्यवधान)**... कहने का समर्थन किया। ...**(व्यवधान)**... आप उनसे पूछिए। ...**(व्यवधान)**... राहुल गांधी जी की ऐसी क्या पॉलिटिकल नीड थी कि माँ दुर्गा का इस प्रकार से अपमान उन्होंने सहन किया, समर्थन किया। ...**(व्यवधान)**...

श्री मुख्तार अब्बास नक़वीः सर, हाउस adjourn नहीं होना चाहिए। ...**(व्यवधान)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: She has authenticated what she is saying. Then, what can I do? ...*(interruptions)*..

श्री मुख्तार अब्बास नक़वी: सर, हाउस adjourn नहीं होना चाहिए। ...**(व्यवधान)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: She has authenticated what she said.... *(Interruptions)*... What can I do? ... *(Interruptions)*... She has authenticated. ... *(Interruptions)*... The House is adjourned to meet tomorrow at 11.00 a.m.

The House then adjourned at thirty-two minutes past eight of the clock till eleven of the clock on Friday, the 26th February, 2016.